ॐ ह्रीँ अर्हं नमः
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

# श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी

**मौखिक/लेखित नूतन अभ्यासक्रम**


**✲ प्रकाशक ✲**

**शताधिक वर्ष प्राचीन श्रुततीर्थ सम**

**श्री राजनगर जैन श्वे. मू. पू. धार्मिक इनामी परीक्षा ट्रस्ट,**

**अहमदाबाद**

**ट्रस्ट रजिस्टर नं. ए/१३८२**

❊ पुस्तक का नाम ❊

# श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी

❊ प्रथम आवृत्ति ❊

वि.सं. २०७९, नकल : १०००

❊ मूल्य ❊

रू. ५०/ (श्रुत प्रचारार्थे)

❊ प्राप्तिस्थान ❊

पारी वरधीलाल संप्रीतचंद

२२८७/१, गीरीश कोल्ड्रींक्स के सामने,

माणेकचोक, अमदावाद. फोन : ०७९-२२१४२२६९

मो. : ९४२८११६२५१

© सर्व हक्क प्रकाशक को आधिन

पुस्तक को जहां तहां रखकर

आशातना न करे।

॥ नमो सुयस्स ॥

## श्रुत है अनादि अनंत...

हमारे परम वंदनीय ४५ आगमों मे से 'श्री भगवती सूत्र' में 'नमो सुयस्स' द्वारा श्रुतज्ञान को वंदना करने में आई थी । इस श्रुतज्ञान की रसधारा याने हमारी 'पाठशाला' ।

जिनशासन का बालमंदिर.... पाठशाला ।

जिनशासन के संस्कारों की परब (प्याउ).... पाठशाला ।

ऐसे समस्त राजनगर के श्रीसंघ की छोटी बडी सभी पाठशालाओं के अभ्यासु विद्यार्थीयों के अभ्यास में दृढता-मजबुती बढ़े । सम्यग्ज्ञान केवल रटा-रटाया ज्ञान ना रहे एवं जीवन उपयोगी, क्रिया उपयोगी भाववृद्धि का कारण बने इसके लिये पढ़े हुए सबकी परीक्षा द्वारा परावर्तना अनुप्रेक्षादि का प्रधान माध्यम बने तदहेतु शताधिक वर्ष प्राचीन श्रुततीर्थ सम श्री राजनगर जैन श्वे. मूर्तिपूजक धार्मिक इनामी परीक्षा ट्रस्ट (अमदावाद) की स्थापना पूज्यपाद बहुश्रुत आगममंदिरों के आद्यसंस्थापक, आगमोद्धारक आनंदसागरसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से हुई थी । शताधिक वर्षों से यह संस्था सेंकडो ज्ञानपिपासु पुण्यात्माओं की ज्ञानतृषा मिटाने का यथार्थ पुरुषार्थ कर रही है ।

सम्यग्ज्ञान के साथ साथ संस्कारसिंचन एवं जिनशासन की साधना-आराधना को प्रेक्टीकल बनाने के लिये ही एक सुंदर अभ्यासक्रम इस पुस्तिकामें संकलित करने में आया है । समय के साथ तालमेल मिलाकर ज्यादा संख्या में सबको नीव के ज्ञानविधि के साथ सच्चा संयमी या सच्चा श्रावक बनाये यही शुभाभिलाषा ।

# प्रकाशकीय

**'कलिकाले जिनबिंब जिनागम भवियण कुं आधारा रे'।**

राजनगर की भूमि याने 'जैनों की राजधानी'

इस राजनगर की धन्यधरा पर आजसे शताधिक वर्षों पूर्व वि.सं. १९७३ में जिनशासन के अजोड आगमोद्धारक प. पू. आ. भ. श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब (पू. सागरानंदसूरीश्वरजी म.सा.) के शुभाशीष, मंगलमयी प्रेरणा और अंतर के आशीर्वाद से इस संस्था के बीज का वपन हुआ। आज यह संस्था **शताधिक** वर्षों से निरंतर/अविरत प्रगति कर रही है..... तब

आप सबको इस संस्था का परिचय देना है ।

राजनगर के अग्रगण्य श्रेष्ठीवर्यों ने पू. श्री के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से दोशीवाडा की पोल स्थित 'शेठ सुबाजी रवचंद जेचंद जैन विद्याशाला' में इस संस्था की शुभ शुरुवात की। संस्था का एवं गुरुदेवश्री का मुख्य आशय राजनगर एवं संपूर्ण भारतभर में चलती हुई पाठशालाओं में प्राण फूंकने का था। बालक पूरे वर्ष में पाठशालामें अध्ययन करे और स्कूलकी वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण होकर अगली कक्षा में जाय उसी तरह धार्मिक परीक्षा वार्षिक स्तर पर लेने का प्रारंभ किया। धीरे धीरे राजनगरमें विद्यमान सभी पाठशालाके बालकोंने परीक्षा देना आरंभ किया। जैसे जैसे ख्याति बढ़ती गयी वैसे वैसे संपूर्ण गुजरात एवं भारतभरकी पाठशालाओं ने जुड़ना शुरु किया। सांप्रत समय जैसी आधुनिक टेक्नोलॉजी न होते हुए भी खूब सुंदर व्यवस्था शुरु करने में आयी। मौखिक एवं लेखित वार्षिक परीक्षाएं ली जाने लगी। राजनगर के तमाम विद्वान पंडितवर्य उसमें जुड़ने लगे। उनकी मेहनत से इस संस्था ने विशेष प्रगति की। अंदाज २,००,००० से भी ज्यादा अभ्यासकों ने आजतक परीक्षाएं दी होगी। हर साल ५००० से ज्यादा अभ्यासक अभी परीक्षा दे रहे है । उत्तीर्ण हुए विद्यार्थीओं को प्रभावना बहुमान के स्वरूप में दी जाती है। शिक्षक-शिक्षिका भाई-बहनों का भी बहुत प्रशंसनीय सहकार मिल रहा है। उनका भी यथायोग्य बहुमान किया जाता है।

इस समग्र आयोजन में हमें बारबार शासन के बहुत सारे पू. आचार्य भगवंत और मुनि भगवंतों का मार्गदर्शन एवं निश्रा प्राप्त होती है। साथ साथ में विद्वान पंडितवर्यों का भी मार्गदर्शन मिलता रहता है।

इस संस्था में अत्यंत ज्ञानप्रेमी ऐसे **'श्रीमान श्रेष्ठीवर्य श्री वरधीलाल संप्रीतचंद शाह'** ने प्रदीर्घ समय तक तन-मन-धन से सेवा की है । जिसका शब्दों मे वर्णन अशक्य है ।

संस्था द्वारा परंपरा के अनुसार दो प्रतिक्रमण सूत्र एवं सूत्रार्थ, पंचप्रतिक्रमण के सूत्र और सूत्रार्थ और विशिष्ट पुस्तक रुप में 'श्री राजनगर प्रश्नोत्तर ज्ञानमाला' नामक पुस्तकें प्रकाशित हुई है । इस तरह यह संस्था राजनगर के श्रावक-श्राविकाओं में ज्ञान की विरासत आगे बढ़ाने में अति महत्व का योगदान दे रही है ।

इस संस्था का वहीवट राजनगर के अग्रगण्य श्रेष्ठियों द्वारा चलाया जाता है और अभीभी नामांकित श्रेष्ठियों द्वारा सुंदर साथ सहकार मिल रहा है ।

गच्छाधिपति प.पू.आ.भ. 'श्री दौलतसागरसूरीश्वरजी म.सा.' के आशीर्वाद से एवं प.पू.आ.भ. 'श्री हर्षसागरसूरीश्वरजी म.सा.' के मार्गदर्शन से कई विशेष कार्य हो रहे है । इस ज्ञानमंजरी पुस्तकको गुजराती पांच आवृत्तियाँ राजनगरके पाठशालाओं के उत्साह से खूब कम समय में पूर्ण हो गयी. अतः हिन्दी की प्रथम आवृत्ति प्रकाशित करते हुए संस्था अद्वितीय आनंद अनुभव करती है।

इस पुस्तक के टाइप सेटींग में **आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा** के व्यवस्थापक एवं कर्मचारीयों द्वारा सुंदर सहयोग प्राप्त हुआ है।

इस आवृत्ति का गुजराती से हिन्दी अनुवाद और प्रुफ करने में सहयोग देनेवाले के हम आभारी है।

- ♦ प.पू.आ.भ.श्री हेमचन्द्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.
- ♦ प.पू.आ.भ.श्री अजयसागरसूरीश्वरजी म.सा.
- ♦ प.पू.आ.भ.श्री नंदिघोषसूरीश्वरजी म.सा.
- ♦ प.पू. साध्वीजी श्री दिव्यांगप्रियाश्रीजी म.सा.
- ♦ योगीनीबेन चेतनभाई शाह(पोलडीया)

**भवदीय**

**श्री राजनगर जैन श्वे. मू. पू. धार्मिक इनामी परीक्षा ट्रस्ट**

**अमदावाद**

## पू. आचार्य भगवंतो की निश्रामें ज्ञानवर्धक आयोजनो की योजना हुई

| | |
|---|---|
| वि.सं. २०१० | प.पू.आ.भ.श्री विजयमनोहरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.मुनिराज श्री भद्रंकरविजयजी म.साहेब |
| वि.सं. २०११ | प.पू.आ.भ.श्री विजयमनोहरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.मुनिराज श्री भद्रंकरविजयजी म.साहेब |
| वि.सं. २०१४ | प.पू.आ.भ.श्री सिद्धिसूरीश्वरजी म.साहेब. |
| | प.पू.आ.भ.श्री लब्धिसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०१६ | प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०१७ | प.पू.आ.भ.श्री विजयअमृतसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०१९ | प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०२० | प.पू.आ.भ.श्री भुवनसूरीश्वरजी म.साहेब तथा |
| | प.पू. यतीन्द्रविजयजी म.साहेब |
| वि.सं. २०२१ | प.पू.पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी म.साहेब तथा |
| | प.पू.पंन्यास श्री चंद्रोदयसागरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०२९ | प.पू.आ.भ.श्री कस्तुरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३० | प.पू.आ.भ.श्री भद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री ओमकारसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३१ | प.पू.आ.भ.श्री भद्रंकरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री मुक्तिचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री मानतुंगसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३२ | प.पू.आ.भ.श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री धर्मधूरंधर विजयजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३३ | प.पू.मुनिराज श्री मतिधनविजयजी म.साहेब |
| | प.पू.गणिवर्य श्री जयघोषविजयजी म.साहेब |
| | प.पू. मुनिराज श्री मित्रानंदविजयजी म.साहेब |

| | |
|---|---|
| वि.सं. २०३४ | प.पू.आ.भ.श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३५ | प.पू.आ.भ.श्री भुवनरत्नसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३६ | प.पू.आ.भ.श्री भद्रकरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०३८ | प.पू.आ.भ.श्री कुंदकुंदसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०४० | प.पू.मुनिराज श्री बलभद्रविजयजी म.साहेब |
| | प.पू.मुनिराज श्री गौतमविजयजी म.साहेब |
| | प.पू.मुनिराज श्री राजचंद्रविजयजी म.साहेब |
| वि.सं. २०४४ | प.पू.आ.भ.श्री रामसूरीश्वरजी म.साहेब (डहेलावाळा) |
| | प.पू.आ.भ.श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०४५ | प.पू.आ.भ.श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०४६ | प.पू.आ.भ.श्री कंचनसागरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.पं.श्री प्रमोदसागरविजयजी म.साहेब |
| वि.सं. २०४७ | प.पू.आ.भ.श्री प्रभाकरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०४८ | प.पू.आ.भ.श्री रामसूरीश्वरजी म.साहेब (डहेलावाळा) |
| वि.सं. २०५१ | प.पू.आ.भ.श्री लब्धिसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०५२ | प.पू.आ.भ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०५४ | प.पू.आ.भ.श्री विजयदेवसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०५५ | प.पू.आ.भ.श्री रत्नाकरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०७३ | प.पू.आ.भ.श्री जिनचंद्रसागरसूरीश्वरजी म. साहेब |
| (शताब्दी वर्ष) | प.पू.आ.भ.श्री हेमचंद्रसागरसूरीश्वरजी म. साहेब |
| वि.सं. २०७५ | गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.श्री दोलतसागरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री नंदिवर्धनसागरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| | प.पू.आ.भ.श्री हर्षसागरसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०७६ | प.पू.आ.भ.श्री महाबोधिसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०७७ | गच्छाधिपति प.पू.आ.भ.श्री राजयशसूरीश्वरजी म.साहेब |
| वि.सं. २०७८ | प.पू.आ.भ.श्री उदयवल्लभसूरीश्वरजी म. साहेब |

## राजनगर (अहमदाबाद) के श्रेष्ठीवर्यश्रीओं का संस्था को अमूल्य सहयोग

- शेठश्री प्रेमचंदभाई हठीसींग
- शेठश्री वेलचंदभाई रायचंदभाई शाह
- शेठश्री लल्लुभाई डाह्याभाई
- शेठश्री पोपटलाल मगनलाल
- शेठश्री हीराभाई मणीलाल (गीरधरनगर)
- शेठश्री पूनमचंद वीरचंद (साबरमती)
- शेठश्री चंदुलाल मोतीलाल नवाब
- शेठश्री अरविंदभाई पनालाल
- शेठश्री विमलभाई चीमनलाल
- शेठश्री कांतिलाल चीमनलाल कोलसावाळा
- शेठश्री लालचंदभाई राजमल
- शेठश्री चंदुलाल प्रेमचंद (दवावाळा)
- शेठश्री प्रविणचंद्र प्रेमचंद
- शेठश्री रतिलाल पानाचंद परीख
- शेठश्री रमणलाल जेसींगभाई जरीवाला
- शेठश्री रसीकलाल भोगीलाल वकील
- शेठश्री महेन्द्रभाई लालभाई गोळवाळा
- शेठश्री भरतभाई कस्तुरभाई शाह
- शेठश्री मोहनलाल डाह्याभाई शाह
- शेठश्री वरधीलाल संप्रीतचंद शाह
- शेठश्री कांतीभाई मफतलाल शाह

## विद्वान पंडितवर्यो की नामावली, जिन्होंने संस्था को मुल्यवान सेवा अर्पण की है

- श्री पुखराजजी अमीचंदजी कोठारी - महेसाणा
- श्री छबीलभाई केसरीचंदजी महेता - खंभात
- श्री वसंतभाई नरोत्तमदास - महेसाणा
- श्री छोटालाल नानचंदभाई
- श्री बाबुभाई सवचंदभाई
- श्री खूबचंदभाई केशवलाल (शिरोही)
- श्री माणेकलाल हरगोवनदास (राधनपुर)
- श्री गुणवंतभाई (चाणस्मा)
- श्री धीरजलाल धनजीभाई सोनेथा
- श्री रतीलाल चीमनलाल दोशी
- श्री धीरजलाल डाह्यालाल महेता
- श्री रसीकलाल शांतिलाल महेता
- श्री प्रविणभाई भोगीलाल शेठ
- श्री दिनेशभाई के. महेता

इसके अलावा भी अनेक पंडितवर्यो ने संस्था में सेवा की है। उन सबका संस्था हृदयपूर्वक आभार मानती है।

# अनुक्रमणिका

## ❋ सूत्रो ❋


१. नमस्कार महामंगल (पंचमंगल सूत्र) १
२. पंचिंदिय सूत्र (गुरु स्थापना सूत्र) २
३. खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र) २
४. ईच्छकार सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र) २
५. अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरुखामणा सूत्र) २
६. इरियावहिया सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र) २
७. तस्सउत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र) ३
८. अन्नत्थ सूत्र (आगार सूत्र) ३
९. लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र) ३
१०. करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र) ४
११. सामाइय-वयजुत्तो सूत्र
(सामायिक पारने का सूत्र) ४
१२. जगचिंतामणि (चैत्यवंदन सूत्र) १२
१३. जंकिंचि सूत्र (तीर्थवंदना सूत्र) १३
१४. नमुत्थुणं सूत्र (शक्रस्तव सूत्र) १३
१५. जावंति चेइआइं सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र) १४
१६. जावंत के वि साहू सूत्र
(गुरुवंदन/मुनिवंदन सूत्र) १४
१७. नमोऽर्हत सूत्र
(संक्षिप्त पंचपरमेष्ठि नमस्कार सूत्र) १४
१८. उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र) १४
१९. जय वीयराय ! (प्रार्थना सूत्र) १५
२०. अरिहंत-चेईयाणं सूत्र (चैत्यस्तव सूत्र) १५
२१. कल्लाणकंदं सूत्र (पांच जिन की थोय) १५
२२. संसारदावा सूत्र १६
२३. पुक्खरवरदीवड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र २९
२४. सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र ३०
२५. वेयावच्चगराणं सूत्र ३०
२६. भगवानादि वंदन सूत्र ३०
२७. पडिक्कमणे ठाउं? (प्रतिक्रमण बीज सूत्र) ३१
२८. इच्छामि ठामि (लघु अतिचार सूत्र) ३१
२९. नाणंमि (पांच आचारना अतिचार की गाथा) ३१
३०. सुगुरु वांदणा (द्वादशावर्त्त वंदन सूत्र) ३२
३१. देवसिअं आलोउं सूत्र ३२
३२. सात लाख सूत्र ३२
३३. अढार पापस्थानक सूत्र
(अढार पाप आलोववा का सूत्र) ३३
३४. सव्वस्सवि (प्रतिक्रमण बीजक) सूत्र ३३
३५. इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र ३३
३६. वंदित्तु (श्राद्ध प्रतिक्रमण) सूत्र ३३
३७. आयरिय उवज्झाए सूत्र ४७
३८. नमोडस्तु वर्द्धमानाय
(वीरप्रभुका चैत्यवंदन) ४७
३९. विशाल-लोचन-दलं सूत्र
(सवारनुं वीरप्रभु का चैत्यवंदन) ४८
४०. श्रुतदेवता की स्तुति ४८
४१. क्षेत्रदेवता की स्तुति ४८
४२. कमलदल स्तुति ४८
४३. भवनदेवता की स्तुति ४९
४४. क्षेत्रदेवता की स्तुति ४९
४५. अड्ढाइज्जेसु (मुनि वंदन) सूत्र ४९
४६. वरकनक (१७० जिन) स्तुति ४९
४७. लघु शान्ति (श्री शान्तिनाथ) स्तोत्र ४९
४८. चउक्कसाय सूत्र ५१
४९. भरहेसरनी सजझाय ५१
५०. मन्हजिणाणं (श्रावक के कृत्यो)की सजझाय ५२
५१. सकलतीर्थ वंदना ५३
५२. श्री सकलार्हत् स्तोत्र ६२
५३. स्नातस्या स्तुति ६५
५४. श्रावक के अतिचार ९४/११८
५५. गमणागमणे १७०


## ❋ सूत्रोना अर्थ ❋


१. श्री नमस्कार महामंत्र अर्थ ३८
२. पंचिंदिय सूत्र (गुरुस्थापना सूत्र) अर्थ ३८
३. खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र) अर्थ ३९
४. इच्छकार सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र) ३९
५. अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरु खामणा सूत्र) ३९
६. इरियावहिया सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र) अर्थ ५४
७. तस्सउत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र) अर्थ ५५
८. अन्नत्थ सूत्र अर्थ ६७
९. लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र) अर्थ ८२

१०. करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र) अर्थ १००
११. सामाईय वयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारने का सूत्र) अर्थ १०१

## ❋ नवस्मरण ❋

१. नमस्कार महामंगल (पंचमंगल सूत्र) १
२. उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र) १४
३. संतिकरं स्मरणम् ६६
४. तिजयपहुत्त स्तोत्र १९८
५. नमिऊण स्तोत्र २०६
६. श्री अजितशांति स्तवन ७५
७. भक्तामर स्तोत्र १९९
८. कल्याणमंदिर स्तोत्र २०९
९. मोटी शान्ति (बृहच्छांति) स्तोत्रम् ८०

## ❋ दोहे ❋

१. प्रभुदर्शन के दोहे ५
२. अष्टप्रकारी पूजा के दोहे २२
३. नव अंग पूजा के दोहे २३
४. प्रदक्षिणा के दोहे ४०
५. श्री सीमंधरस्वामी के दोहे ६९
६. श्री शत्रुंजय के दोहे ८४

## ❋ स्तुति ❋

१. देखी मूर्ति ४
२. रत्नाकर पच्चीसी ९,२२,४३,५८,७२
३. चोविस भगवान के नाम-लंछन-वर्ण ६
४. नवपदना नाम ७
५. आरति / मंगलदीवो ८

## ❋ चैत्यवंदन ❋

१. सकलकुशलवल्लि २०
२. श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन २०
३. चोविसजिन के शरीर का वर्ण का चैत्यवंदन २०
४. श्री महावीरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन ४१
५. श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन ५६
६. श्री सीमंधरस्वामी का चैत्यवंदन ६९
७. श्री शत्रुंजय का चैत्यवंदन ८५
८. पर्युषणपर्व का चैत्यवंदन १०२
९. पर्युषणपर्व का चैत्यवंदन १३७
१०. श्री आदिश्वर भगवान का चैत्यवंदन १६०
११. श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन १६५
१२. श्री नेमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन १७१
१३. श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन १७५
१४. श्री नवपदजी का चैत्यवंदन १७८
१५. सामान्य जिन चैत्यवंदन १८१
१६. बीज का चैत्यवंदन १८५
१६. पंचमी का चैत्यवंदन १८९
१७. अष्टमी का चैत्यवंदन १९२
१८. एकादशी का चैत्यवंदन १९५

## ❋ स्तवन ❋

१. श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन २१
२. श्री महावीरस्वामी भगवान का स्तवन ४१
३. श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन ५६
४. श्री सीमंधरस्वामी का स्तवन ७०
५. श्री शत्रुंजय का स्तवन ८५
६. पर्युषणपर्व का स्तवन १०२
७. श्री महावीरप्रभु का २७ भव का स्तवन १२७
८. श्री महावीरस्वामी भगवान का हालरडा १४०
९. श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक का स्तवन १५७
१०. श्री आदिश्वर भगवान का स्तवन १६१
११. श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन १६६
१२. श्री नेमिनाथ भगवान का स्तवन १७१
१३. श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन १७६
१४. श्री नवपदजी का स्तवन १७९
१५. सामान्य जिन स्तवन १८२
१६. बीज का स्तवन १८६
१७. पंचमी का स्तवन १९०
१८. अष्टमी का स्तवन १९३
१९. एकादशी का स्तवन १९६
२०. हितशिक्षा छत्रीसी १६४,१६९,१७३,१७७

## ❋ थोय ❋

१. श्री पार्श्वनाथ भगवान की थोय २१
२. श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय ४१
३. श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय ५६
४. श्री सीमंधरस्वामी की थोय ७१

५. श्री आदेश्वर भगवान की थोय ७१
६. श्री शत्रुंजय की थोय ८६
७. पर्युषणपर्व की थोय १०३
८. पर्युषणपर्व की थोय १४३
९. श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय १४८
१०. श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय १५३
११. श्री सिद्धचक्र की थोय १५५
१२. नवतत्त्व की थोय १५८
१३. श्री नेमिनाथ भगवान की थोय १७२
१४. श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय १७६
१५. श्री नवपदजी की थोय १७९
१६. दस (१०) त्रिक की थोय १६६
१७. षड् अतिशय की थोय १८२
१८. बीज की थोय १८८
१९. पंचमी की(श्री नेमिनाथ भगवान)थोय १९१
२०. अष्टमी की थोय १९३
२१. एकादशी की थोय १९६


## ❋ सज्झाय ❋


१. क्रोध की सज्झाय ४२
२. मान की सजझाय ५७
३. समकित की सज्झाय ७१
४. लोभ की सजझाय ८६
५. श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षी की सजझाय १३८
६. वैराग्य की सज्झाय १४४
७. श्री अईमुत्ता मुनि की सज्झाय १४९
८. धर्मदृढता की सज्झाय १५४
९. आतमभाव की सज्झाय १५६
१०. नवतत्त्व की सज्झाय (जोईतु नथी...) १५९


## ❋ विधि ❋


१. गुरुवंदन की विधि ७
२. चैत्यवंदन विधि १७
३. सामायिक लेने की विधि १८
४. सामायिक पारने की विधि १९
५. देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि ८७
६. राई प्रतिक्रमण की विधि १११
७. पाक्षिक (पक्खी) प्रतिक्रमण की विधि १३४
८. चउमासी प्रतिक्रमण की विधि १३९
९. संवत्सरी प्रतिक्रमण की विधि १३९
१०. पक्खि, चउमासी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में छींक आए तो १४०
११. छींकना काउस्सग्ग की विधि १४०
१२. पौषध लेने की विधि १४५
१३. पौषध पारने की विधि १५१
१४. पौषध लेने का पच्चक्खाण १४७
१५. प्रातःकालीन पडिलेहण की विधि १४७
१६. सांजना पडिलेहण की विधि १४७
१७. देववंदन की विधि १४८
१८. पच्चक्खाण पारने की विधि १५०
१९. २४ मांडला की विधि १५१
२०. पौषध के अढार दोष १५२
२१. सागरचंदो (पौषध पारने का सूत्र) १५३


## ❋ पच्चक्खाण ❋


१. नवकारशी ११०
२. पोरिसि/साढपोरिसि ११०
३. चौविहार, तिविहार, दुविहार ११०
४. पाणहार ११०
५. आयंबिल, नीवि, एकासणुं, बियासणुं १३३
६. तिविहार उपवास, चौविहार उपवास १३३

**१. स्नात्रपूजा १०४,१२३**
**२. चार शरणा १८०,१८३**
**३. मुहपत्ति पडिलेहण के ५० बोल ११४**
**४. श्री राजनगर प्रश्नोत्तरी**
* १ से १० १०
* ११ से ३० २४
* ३१ से ४० ४४
* ४१ से ५० ५९
* ५१ से ६० ७२
* ६१ से ८० ९१
* ८१ से ९० ११६
**५. नियमावली १९८**

# श्री राजनगर जैन ज्ञानमंजरी

# अनुक्रमणिका

## मौखिक


| विषय | पृष्ठ नं. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|---|
| कक्षा-१ | १ से ११ | कक्षा-५ | ६२ से ७४ |
| कक्षा-२ | १२ से २८ | कक्षा-६ | ७५ से ९३ |
| कक्षा-३ | २९ से ४६ | कक्षा-७ | ९४ से ११७ |
| कक्षा-४ | ४७ से ६१ | कक्षा-८ | ११८ से १३५ |


## लेखित


| विषय | पृष्ठ नं. | विषय | पृष्ठ नं. |
|---|---|---|---|
| कक्षा-१ | १३६ | कक्षा-१२ | १७८ से १८० |
| कक्षा-२ | १३७ से १३८ | कक्षा-१३ | १८१ से १८४ |
| कक्षा-३ | १३९ से १४४ | कक्षा-१४ | १८५ से १८८ |
| कक्षा-४ | १४५ से १४९ | कक्षा-१५ | १८९ से १९१ |
| कक्षा-५ | १५० से १५४ | कक्षा-१६ | १९२ से १९४ |
| कक्षा-६ | १५५ से १५६ | कक्षा-१७ | १९५ से १९७ |
| कक्षा-७ | १५७ से १५९ | कक्षा-१८ | १९७ |
| कक्षा-८ | १६० से १६४ | कक्षा-१९ | १९७ |
| कक्षा-९ | १६५ से १७० | कक्षा-२० | १९७ |
| कक्षा-१० | १७१ से १७४ | कक्षा-२१ | १९७ |
| कक्षा-११ | १७५ से १७७ | कक्षा-२२ | १९७ |
| | | नवस्मरण | १९८ |

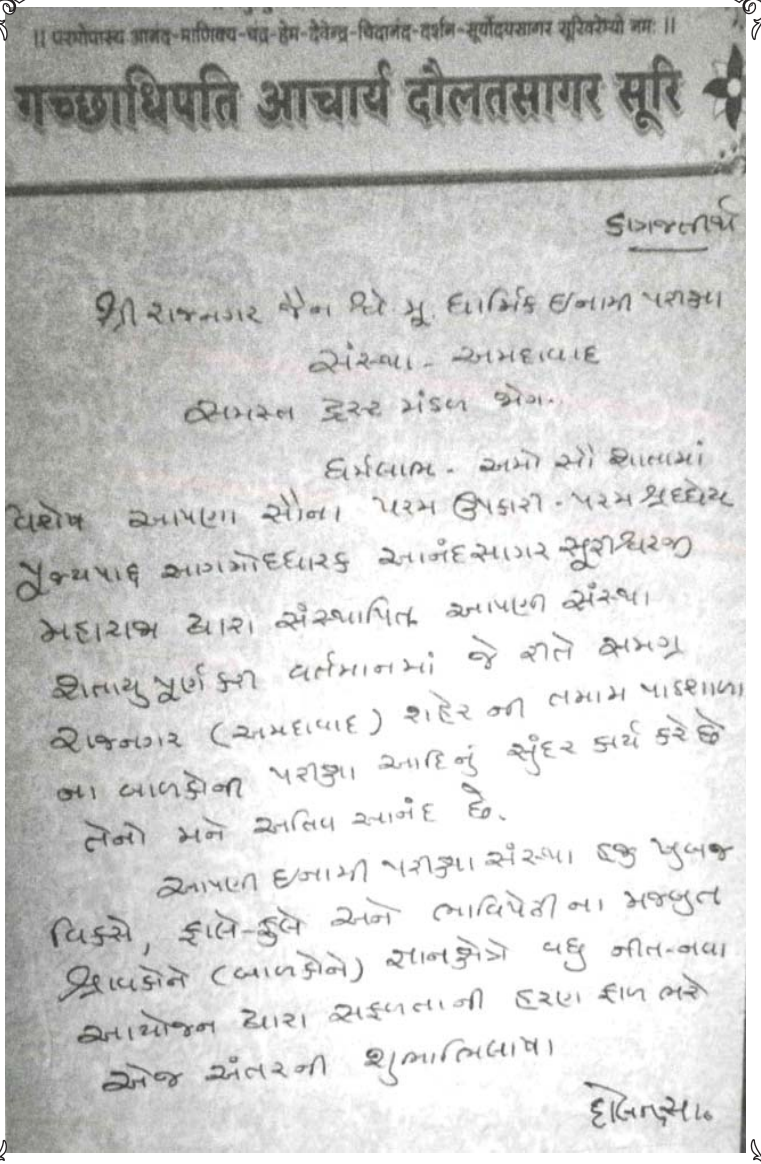

|| परमोपास्य आनंद-माणिक्य-चंद्र-हेम-देवेन्द्र-चिदानंद-दर्शन-सूर्योदयसागर सूरिवरेभ्यो नमः ||

# गच्छाधिपति आचार्य दौलतसागर सूरि

કપડવંજતીર્થ

શ્રી રાજનગર જૈન શ્વે. મૂ. ધાર્મિક ઇનામી પરીક્ષા
સંસ્થા - અમદાવાદ
સમસ્ત ટ્રસ્ટ મંડળ જોગ.

ધર્મલાભ - અમો સૌ શાતામાં
વિશેષ આપણા સૌના પરમ ઉપકારી - પરમ શ્રદ્ધેય
પૂજ્યપાદ આગમોદ્ધારક આનંદસાગર સૂરીશ્વરજી
મહારાજ દ્વારા સંસ્થાપિત આપણી સંસ્થા
શતાયુ પૂર્ણ કરી વર્તમાનમાં જે રીતે સમગ્ર
રાજનગર (અમદાવાદ) શહેર ની તમામ પાઠશાળા
ના બાળકોની પરીક્ષા આદિનું સુંદર કાર્ય કરે છે
તેનો મને અતિવ આનંદ છે.

આપણી ઇનામી પરીક્ષા સંસ્થા હજુ ખુબજ
વિકસે, ફાલે-ફુલે અને ભાવિપેઢીના મજબુત
શ્રાવકોને (બાળકોને) સાનકુરો વધુ નીત-નવા
આયોજન દ્વારા સફળતાની હરણ ફાળ ભરે
એજ અંતરની શુભાભિલાષા

દૌલતસા.

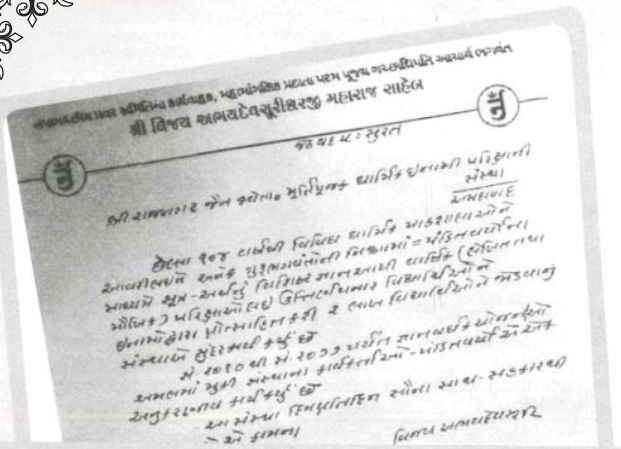

શ્રી વિજય અભયદેવસૂરીશ્વરજી મહારાજ સાહેબ

જેઠ વદ ૫ : સુરત

શ્રી રાજનગર જૈન શ્વેતા. મૂર્તિપૂજક ધાર્મિક ઇનામી પરીક્ષાની સંસ્થા
અમદાવાદ

જેઓએ ૧૦૪ વર્ષથી વિવિધ ધાર્મિક પાઠશાળાઓને આવરીલઇને અનેક ગુરુભગવંતોની નિશ્રામાં = પંડિતવર્યોના આશ્રયે સૂત્ર-અર્થનું વિશિષ્ટ જ્ઞાન આપી ધાર્મિક (લેખિત તથા મૌખિક) પરીક્ષાઓ લઇ ઉત્તીર્ણ થનાર વિદ્યાર્થીઓને ઇનામોદ્વારા પ્રોત્સાહિત કરી ૨ લાખ વિદ્યાર્થીઓને [illegible] સંસ્થાએ સુંદર [illegible] કર્યું છે

સં. ૨૦૮૦ થી સં. ૨૦૭૩ પર્યંત જ્ઞાનવર્ધક યોજનાઓ અમલમાં મૂકી સંસ્થાના કાર્યકર્તાઓ - પંડિતવર્યોએ એક અનુકરણીય કાર્ય કર્યું છે

આ સંસ્થા દિનપ્રતિદિન સૌના સાથ-સહકારથી
- એ કામના

વિજય અભયદેવસૂરિ

---

॥ શ્રીરામચન્દ્ર સૂરીન્દ્ર પ્રણોમિ ॥

દેવગુરુભક્તિકારક
શ્રી રાજનગર જૈન શ્વે. મૂ.
ધાર્મિક ઇનામી પરીક્ષાની સંસ્થાના
કાર્યકર્તાં સુશ્રાવક પ્રફુલભાઈ પંડિતના
યોગ્ય ધર્મલાભ સાથે જણાવવાનું કે-

સં. ૨૦૭૭ આ. સુ. ૫
શ્રી મહાપુરુષ આરાધના
ભવન - [illegible]

પરમાત્માની આજ્ઞાનુસાર તમારા દ્વારા જે પણ પ્રયત્ન આજ સુધી થયો છે અને હવે થશે તેમાં મારા આશીર્વાદ હોય જ અને અનુમોદન પણ હોય - એ નિઃશંક છે.

ભવિષ્યમાં પણ સમ્યગ્જ્ઞાનની ભક્તિ જિનાગમના અનુસારે કરીને તમો સૌ પણ એ ભક્તિના પ્રભાવે આત્માના અનંત ઐશ્વર્યરૂપ કેવલજ્ઞાનને પ્રાપ્ત કરી શાશ્વત સૌન્દર્યરૂપ પરમપદને પામનારા બનો એજ એકની એક શુભાભિલાષા...

— [illegible]

---

શ્રી ગૌતમસ્વામિને નમઃ । શ્રી શાન્તિનાથાય...
પરમોપાસ્યશ્રીનેમિ-અમૃત-દેવસૂરીશ્વરગુરુભ્યો નમ:...

વિજય હેમચન્દ્રસૂરિ શ્રી રાજનગર જૈન શ્વે. મૂર્તિ. ધાર્મિક ઈનામી સંસ્થા
તત્ર જિનભક્તિયુક્ત / સુશ્રાવક

જોગ અનુવંદના/વંદના/ધર્મલાભ

પરમારાધ્ય શ્રી દેવ-ગુરુ-ધર્મના તથા પૂજ્ય શાસન સમ્રાટ્ શ્રી પરમ ગુરુ ભગવંતના પ્રબલ પુણ્યપસાયે આનંદ/મંગલ વર્તે છે. ત્યાં પણ તેમજ હશો.

વિશેષ: તમારી સંસ્થા વર્ષોથી ધાર્મિક શિક્ષણ તથા પરીક્ષા નું જે કાર્ય કરી રહી છે તેની અનુમોદના કરીએ છીએ.
એ કાર્ય આગળ ને આગળ વધે એ માટે અમારા અંતરના આશીર્વાદ છે.
વિદ્યાર્થીઓ આ પરીક્ષા દ્વારા ધાર્મિક શિક્ષણમાં આગળને આગળ વધતા રહે તથા ધાર્મિક સંસ્કાર પ્રાપ્ત કરે એવું અમે ઈચ્છીએ છીએ.

એજ.
વિજય હેમચન્દ્ર સૂરિ
( [illegible] )

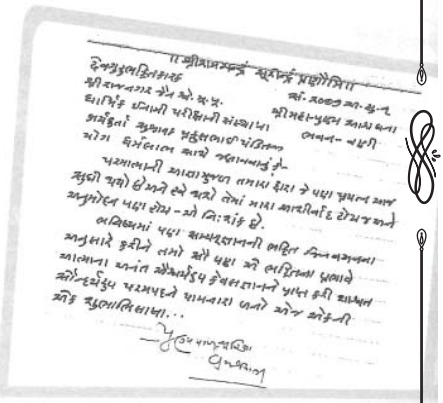

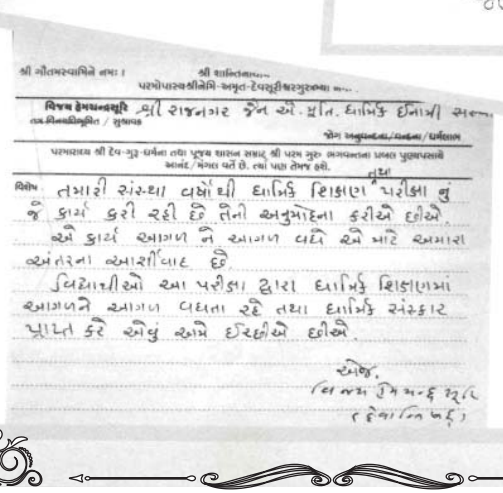

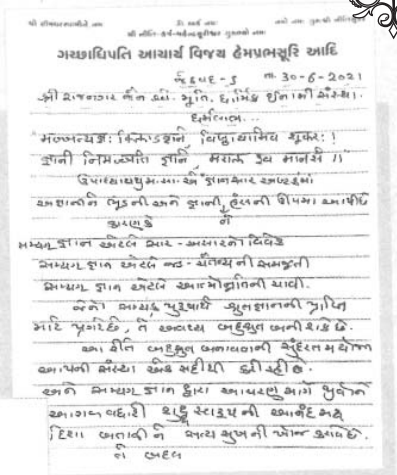

## ગચ્છાધિપતિ આચાર્ય વિજય હેમપ્રભસૂરિ આદિ

જેઠ વદ-૬ તા. 30-6-2021

શ્રી રાજનગર જૈન શ્વે. મૂ. ધાર્મિક ઇનામી સંસ્થા.

ધર્મલાભ...

"મજ્જન્ત્યજ્ઞઃ કિલાઽજ્ઞાને વિષ્ઠાયામિવ શૂકરઃ ।
જ્ઞાની નિમજ્જતિ જ્ઞાને મરાલ ઇવ માનસે ॥"

ઉપાધ્યાયજી મ.સા.એ જ્ઞાનસાર અષ્ટકમાં અજ્ઞાનીને ભૂંડની અને જ્ઞાનીને હંસની ઉપમા આપી છે કારણ કે

સમ્યગ્ જ્ઞાન એટલે સાર-અસારનો વિવેક
સમ્યગ્ જ્ઞાન એટલે જડ-ચૈતન્યની સમજૂતી
સમ્યગ્ જ્ઞાન એટલે આત્મોન્નતિની ચાવી.

જેઓ સમ્યક્ પુરુષાર્થ શ્રુતજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ માટે પ્રવર્તે છે, તે અવશ્ય બહુશ્રુત બની શકે છે.

આ રીતે બહુશ્રુત બનાવવાની સુંદરતમ યોજના આપની સંસ્થા એક સદીથી કરી રહી છે. અને સમ્યગ્ જ્ઞાન દ્વારા આચરણ માર્ગે પુણ્યને આગળ વધારી શુદ્ધ સ્વરૂપની આનંદમય દિશા બતાવીને સત્ય સુખની ખોજ કરાવે છે. તે બદલ

---

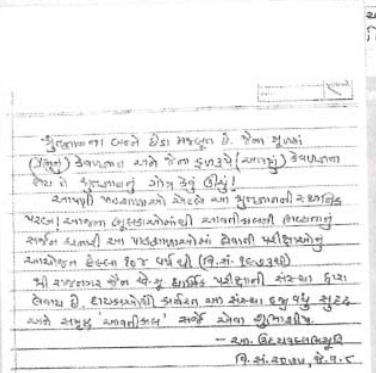

"શ્રુતજ્ઞાનના બન્ને છેડા મજબૂત છે. જેના મૂળમાં (કેવલી) કેવળજ્ઞાન અને જેના ફળરૂપે (આવતું) કેવળજ્ઞાન હોય તે શ્રુતજ્ઞાનનું ગોત્ર કેવું ઊંચું!

આપણી પાઠશાળાઓ એટલે આ શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાનિક પરબ! આજના ભૂલકાઓમાંથી આવતીકાલની ભાવનાનું સર્જન કરનારી આ પાઠશાળાઓમાં લેવાતી પરીક્ષાઓનું આયોજન છેલ્લા ૧૦૪ વર્ષથી (વિ.સં. ૧૯૭૩થી) શ્રી રાજનગર જૈન શ્વે.મૂ. ધાર્મિક પરીક્ષાની સંસ્થા દ્વારા લેવાય છે. દાયકાઓથી કાર્યરત આ સંસ્થા હજુ વધુ સુદૃઢ અને સમૃદ્ધ 'આવતીકાલ' સર્જે એવા શુભાશીષ.

— આ. ઉદયવલ્લભસૂરિ
વિ.સં. ૨૦૭૭, જે.વ.૮

---

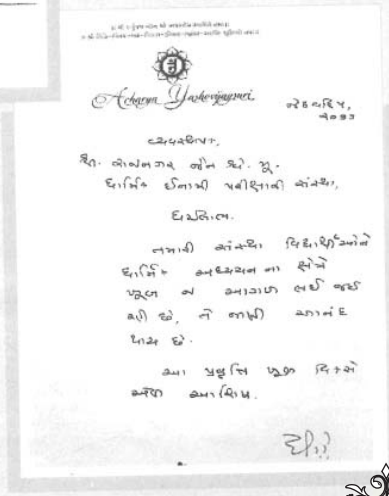

Acharya Yashovijaysuri

જેઠ વદિ ૫,
૨૦૭૭

વ્યવસ્થાપક,
શ્રી રાજનગર જૈન શ્વે. મૂ.
ધાર્મિક ઇનામી પરીક્ષાની સંસ્થા,

ધર્મલાભ.

તમારી સંસ્થા વિદ્યાર્થીઓને ધાર્મિક અધ્યયનના ક્ષેત્રે ઘણા જ આગળ લઈ જઈ રહી છે, તે જાણી આનંદ થાય છે.

આ પ્રવૃત્તિ ખૂબ વિકસે એવા આશિષ.

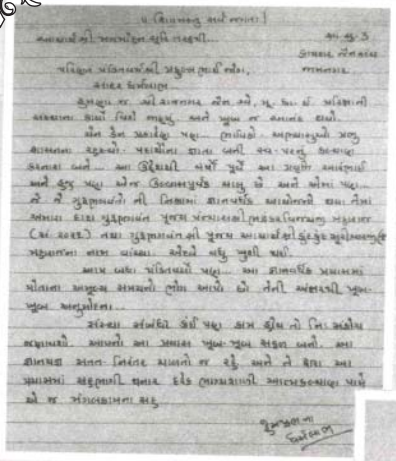

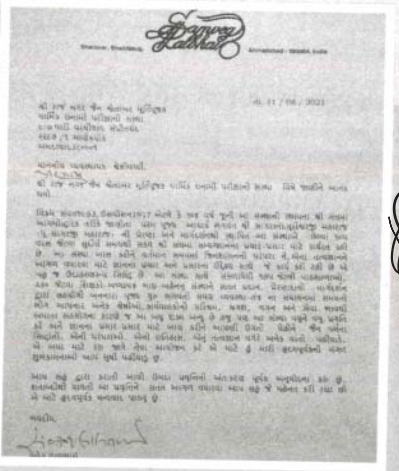

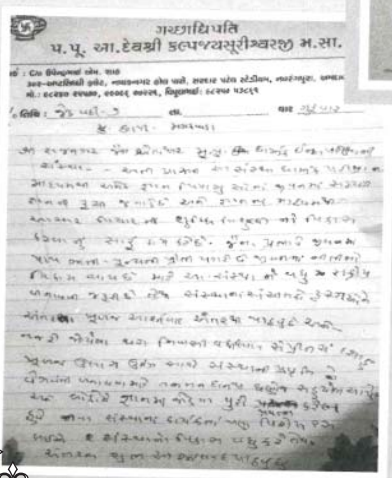

# मौखिक कक्षा १

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | नवकार से सामाइय वयजुत्तो | ३० |
| **काव्य** | : | देखी मूर्ति, आव्यो शरणे... प्रभु दर्शन... दुहा | २० |
| **नाम** | : | चोबीस प्रभु के नाम, नवपद के नाम | १० |
| **विधि** | : | गुरुवंदन, गुजराती महिनों के नाम तथा तिथि | ५ |
| | | आरति मंगळदीवो | १५ |
| **स्तुति** | : | रत्नाकर पच्चीसी १ से ५ गाथा | १० |
| | | राजनगर प्रश्नोत्तरी : १ से १० | १० |
| | | | १०० |

## (१) नमस्कार महामंगल (पंचमंगल सूत्र)

नमो अरिहंताणं ॥१॥
नमो सिद्धाणं ॥२॥
नमो आयरियाणं ॥३॥
नमो उवज्झायाणं ॥४॥
नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥
एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥
सव्वपावप्पणासणो ॥७॥
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ॥८॥

## (२) पंचिंदिय सूत्र (गुरु स्थापना सूत्र)

पंचिंदिय-संवरणो, तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो.
चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥

पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो.
पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरू मज्झ ॥२॥

## (३) खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र)

इच्छामि खमा-समणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि...१.

## (४) इच्छकार सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र)

इच्छकार सुह-राइ? (सुह-देवसि?) सुख-तप? शरीर-निराबाध? सुख-संजम-जात्रा-निर्वहो छो जी? स्वामी! शाता छे जी? भात-पानी नो लाभ देजो जी...१.

## (५) अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरुखामणा सूत्र)

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर-देवसिअं [राइअं] खामेउं?

इच्छं, खामेमि देवसिअं. [राइअं]

जंकिंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं; भत्ते, पाणे; विणए, वेयावच्चे; आलावे, संलावे; उच्चासणे, समासणे; अंतर-भासाए, उवरि-भासाए; जंकिंचि मज्झ विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ..१.

## (६) इरियावहिया सूत्र (लघु प्रतिक्रमण सूत्र)

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? (गुरुः

पडिक्कमेह) इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं॥१॥ इरियावहियाए, विराहणाए॥२॥ गमणागमणे॥३॥ पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे॥४॥ जे मे जीवा विराहिया॥५॥ एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया॥६॥ अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥७॥

## (७) तस्स उत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र)

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं...१

## (८) अन्नत्थ सूत्र (आगार सूत्र)

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए, पित्त-मुच्छाए॥१॥ सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अ-भग्गो अ-विराहियो, हुज्ज मे काउस्सग्गो॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि॥५॥

## (९) लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र)

लोगस्स उज्जोअ-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥

उसभ-मजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च
पउम-प्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥

सुविहिं च पुप्फ-दंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च
वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥

एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा
चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु ॥५॥

कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा
आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु ॥६॥

चंदेसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहियं पयास-यरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

## (१०) करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र)

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, ति-विहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. ॥१॥

## (११) सामाइय-वयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारनेका सूत्र)

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो
छिन्नइ असुहं कम्मं, समाइय जत्तिया वारा १

सामाइअम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा २

सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया,
विधि में जो कोई अविधि हुई हो,
उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ३

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के
कुल बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो,
उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं ४

(काव्य विभाग)

## स्तुति

देखी मूर्ति श्री पार्श्वजिननी, नेत्र मारां ठरे छे,
ने हैयुं आ फरी फरी प्रभु, ध्यान तारुं धरे छे;
आत्मा मारो प्रभु तुज कने, आववा उल्लसे छे,
आपो एवुं बल हृदयमां, माहरी आश ए छे! १

आव्यो शरणे तमारा, जिनवर करजो आश पूरी अमारी,
नाव्यो भव पार मारो, तुम विण जगमां सार ले कोण मारी?
गायो जिनराज आजे, हरख अधिकथी, परम आनंदकारी,
पायो तुम दर्शनार्थे भव भय भ्रमणा नाथ सर्वे अमारी. २

## प्रभु दर्शन के दोहे

प्रभु दरिशन सुख संपदा, प्रभु दरिशन नवनिध;
प्रभु दरिशनथी पामीए सकल पदारथ सिद्ध. १

भावे जिनवर पूजीए, भावे दीजे दान;
भावे भावना भावीए, भावे केवलज्ञान. २

जीवडा जिनवर पूजीए, पूजानां फल होय;
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय. ३

फूलडां केरा बागमां, बेठा श्री जिनराज;
जेम तारामां चंद्रमां, तेम शोभे महाराज. ४

वाडी चंपो मोरियो, सोवन पांखडीए,
पार्श्व जिनेश्वर पूजीए, पांचे आंगळीए. ५

त्रिभुवन नायक तुं धणी, मही म्होटो महाराज,
म्होटे पुण्ये पामीयो, तुम दरिशन हुं आज. ६

आज मनोरथ सवि फल्या, प्रगट्या पुण्य कल्लोल,
पाप करम दूरे टल्यां, नाठां दुःख दंदोल. ७

पंचम काले पामवो, दुल्हो प्रभु देदार,
तो पण ताहारा नामनो, छे म्होटो आधार. ८

## चोविस भगवान के नाम - लंछन - वर्ण

| | नाम | लंछन | वर्ण |
|---|---|---|---|
| १. | ऋषभदेव (आदिनाथ) | वृषभ (बैल) | कंचन जैसा पीला |
| २. | अजितनाथ | हाथी | कंचन जैसा पीला |
| ३. | संभवनाथ | अश्व | कंचन जैसा पीला |
| ४. | अभिनंदनस्वामी | बंदर | कंचन जैसा पीला |
| ५. | सुमतिनाथ | क्रौंचपक्षी (क्रोंच) | कंचन जैसा पीला |
| ६. | पद्मप्रभस्वामी | पद्म (कमल) | रातो (लाल) |
| ७. | सुपार्श्वनाथ | स्वस्तिक (साथियो) | कंचन जैसा पीला |
| ८. | चन्द्रप्रभस्वामी | चंद्र | उज्जवल (श्वेत) |
| ९. | सुविधिनाथ (पुष्पदंत) | मगर | उज्जवल (श्वेत) |
| १०. | शीतलनाथ | श्रीवत्स | कंचन जैसा पीला |
| ११. | श्रेयांसनाथ | गेंडा | कंचन जैसा पीला |
| १२. | वासुपूज्यस्वामी | भैंसा | रातो (लाल) |
| १३. | विमलनाथ | वराह | कंचन जैसा पीला |
| १४. | अनंतनाथ | बाज | कंचन जैसा पीला |
| १५. | धर्मनाथ | वज्र | कंचन जैसा पीला |

| | | |
|---|---|---|
| १६. शांतिनाथ | हरण | कंचन जैसा पीला |
| १७. कुंथुनाथ | बकरा | कंचन जैसा पीला |
| १८. अरनाथ | नंदावर्त | कंचन जैसा पीला |
| १९. मल्लिनाथ | कलश | हरा (नीलो) |
| २०. मुनिसुव्रतस्वामी | कछुआ | श्याम (अंजन) |
| २१. नमिनाथ | नीलकमल | कंचन जैसा पीला |
| २२. नेमिनाथ (अरिष्टनेमि) | शंख | श्याम (अंजन) |
| २३. पार्श्वनाथ | नाग (सर्प) | हरा (नीलो) |
| २४. महावीरस्वामी (वर्धमानस्वामी) | सिंह | कंचन जैसा पीला |

## नवपद के नाम

| क्रम | नवपद के नाम | गुण | क्रम | नवपद के नाम | गुण |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | अरिहंत भगवंत | १२ | ६. | दर्शन | ६७ |
| २. | सिद्ध भगवंत | ०८ | ७. | ज्ञान | ५१ |
| ३. | आचार्य भगवंत | ३६ | ८. | चारित्र | ७० |
| ४. | उपाध्याय भगवंत | २५ | ९. | तप | ५० |
| ५. | साधु भगवंत | २७ | | | |

## गुरुवंदन की विधि

(१) प्रथम दो हाथ जोडकर दो खमासमणा देना। (पंचांगप्रणिपात देना)

(२) फिर खड़े होकर दो हाथ जोड़कर 'इच्छकार सूत्र' बोलना.

(३) फिर दो हाथ जोड़कर यदि 'पदस्थ' हो याने आचार्य भगवंत आदि हो तो एक खमासमणा देना और 'अब्भुट्ठिओ' खमाना, पदवीधर न हो तो

सीधा 'अब्भुट्ठिओ' खमाणा ।

(४) फिर एक खमासमणा देकर शाता पूछना।

**नोंध :** सवेरे 'राइयं' शब्द और मद्यान्ह के बाद 'देवसिअं' शब्द बोलना ! दोनो शब्द साथ में नहीं बोलना ।

## मास के नाम

| | | |
|---|---|---|
| कारतक | फाल्गुन | अषाढ |
| मागसर | चैत्र | श्रावण |
| पोष | वैशाख | भादरवो |
| महा | जेठ | आसो (अश्वीन) |

## गुजराती तिथि

**सुद :** एकम, बीज, त्रीज, चोथ, पांचम, छट्ठ, सातम, आठम, नोम, दशम, अगियारस, बारस, तेरस, चौदस, पूनम

**वद :** एकम, बीज, त्रीज, चोथ, पांचम, छट्ठ, सातम, आठम, नोम, दशम, अगियारस, बारस, तेरस, चौदस, अमास

## आरति

जय जय आरति आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवीको नंदा;
पहेली आरति पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे ॥१॥

दूसरी आरति दीनदयाला, धूलेवा मंडपमां जग अजवाला ॥२॥

तीसरी आरति त्रिभुवन देवा, सुरनर इन्द्र करे तोरी सेवा ॥३॥

चोथी आरति चउगति चूरे, मनवांछित फल शिवसुख पूरे ॥४॥

पंचमी आरति पुण्य उपाया; मूलचंदे ऋषभ गुण गाया ॥५॥

## मंगलदीवो

दीवो रे दीवो प्रभु मंगलिक दीवो,
आरति उतारण बहु चिरंजीवो. दीवो०॥१॥

सोहमने घेर पर्व दिवाली; अंबर खेले अमराबाली दीवो०॥२॥

दीपाल भणे एणे कुल अजवाली;
भावे भगते विघन निवारी. दीवो०॥३॥

दीपाल भणे एणे ए कलिकाले;
आरति उतारी राजा कुमारपाले.०॥४॥

अम घेर मंगलिक तुम घेर मंगलिक;
मंगलिक चतुर्विध संघने होजो. दीवो०॥५॥

## श्री रत्नाकर पच्चीसी

मंदिर छो मुक्तितणा, मांगल्य क्रीडाना प्रभु,
ने इन्द्र नर ने देवता, सेवा करे तारी विभु।
सर्वज्ञ छो स्वामी वळी, शिरदार अतिशय सर्वना,
घणुं जीव तुं, घणु जीव तुं, भंडार ज्ञान कळा तणा... ॥१॥

त्रण जगतना आधार ने, अवतार हे करुणातणा,
वळी वैद्य हे दुर्वार आ संसारना दुःखो तणा।
वीतराग वल्लभ विश्वना तुज पास अरजी उच्चरु,
जाणो छतां पण कही अने, आ हृदय हुँ खाली करुं... ॥२॥

शुं बाळको माँ-बाप पासे, बाळक्रीडा नव करे?
ने मुखमांथी जेम आवे, तेम शुं नव उच्चरे?
तेमज तमारी पास तारक, आज भोळा भावथी,
जेवुं बन्युं तेवु कहुं, तेमां कशुं खोटुं नथी... ॥३॥

मैं दान तो दीधुं नहि, ने शियळ पण पाळ्युं नहीं,
तपथी दमी काया नही, शुभ भाव पण भाव्यो नही,
ए चार भेदे धर्ममांथी, कांई पण प्रभु नव कर्यु,।
म्हारुं भ्रमण भवसागरे, निष्फळ गयुं निष्फळ गयुं... ॥४॥

हुँ क्रोध अग्निथी बळ्यो, वळी लोभ सर्प डस्यो मने,
गळ्यो मानरूपी अजगरे, हुँ केम करी ध्यावुं तने?
मन मारुं मायाजाळमां, मोहन! महा मूंझाय छे,
चडी चार चोरो हाथमां, चेतन घणो चगदाय छे... ५॥

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

*प्र.१ आप कौन है ?
उ. हम जैन है ।
प्र.२. आप किस धर्म का पालन करते है ?
उ. हम जैन धर्म का पालन करते है ।
प्र.३ जैन किसे कहते है ?
उ. श्री जिनेश्वर भगवान की आज्ञा का पालन करते हैं, वे जैन कहलाते हैं ।
प्र.४. जैन धर्म यानि क्या ?
उ. श्री जिनेश्वर भगवंतोने बताया हुआ धर्म ।
प्र.५. श्री जिनेश्वर भगवान किसे कहा जाता है ?
उ. राग-द्वेष को जीतने वाले, जिनमें एक भी दोष नही है, जो सर्व गुण संपन्न है वे श्री जिनेश्वर भगवान कहलाते है ।
प्र.६. जैन धर्म के अन्य नाम क्या हैं ?
उ. जैन धर्म के दयाधर्म, स्याद्वादधर्म, आर्हत् धर्म आदि अन्य नाम है ।
प्र.७. श्री जिनेश्वर भगवान कितने है ?
उ. इस अवसर्पिणी काल में २४ भगवान हुए है ।

* स. यानि सवाल और ज. यानि जवाब समजना.

● बीज, पांचम, आठम, अग्यारस, चौदस, पूनम सुद और वद दोनोमें लीलोतरी का त्याग करना.

प्र.८. श्री जिनेश्वर भगवान के अन्य नाम बताइए.

उ. अरिहंत, तीर्थंकर, वीतराग, जिनेश्वर, परमात्मा, भगवान्, देवाधिदेव आदि ।

प्र.९. जिनमंदिर में प्रवेश करते समय क्या कहना चाहिए ? और परमात्मा के दर्शन होने पर क्या कहना चाहिए ?

उ. जिनमंदिर में प्रवेश करते समय तीन बार निसीहि और परमात्मा के दर्शन होते ही दो हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर, नमो जिणाणं कहना चाहिये ।

प्र.१०. गुरु महाराज मिले तो क्या कहना चाहिये ?

उ. दो हाथ जोडकर, मस्तक झुकाकर 'मत्थएण वंदामि' कहना चाहिये ।

● ● ●

## परीक्षा लेने का उद्देश

- आज की स्कूलों में शिक्षा मिलती है, संस्कार नहीं ।
- उपर से कुसंस्कारों का पोषण होता है । संस्कार दिलाने का स्थान है 'पाठशाळा' ।
- बच्चों के सूत्र कंठस्थ हो जाय, उसमें मौखिक परीक्षाओं के द्वारा उच्चारण की अशुद्धियां दूर हो ।
- अंग्रेजी माध्यम से पढ़ते हुए बच्चों को सूत्रों द्वारा संस्कृत, प्राकृत शब्दों का ज्ञान हो ।
- गुरुभगवंतों के पास बारबार जाने से गाथा लेने के साथ साथ गुरुभगवंतों का परिचय होता है, गुरु प्रति बहुमान बढ़ता है ।
- परीक्षाओं की तैयारी के लिये मोबाइल-टी.वी. जैसे दूषण छूट जाते है - जैन धर्म का अभ्यास बढ़ता है ।
- बच्चों में संस्कारों का सिंचन हो और तत्त्वज्ञान जीवन में उतारकर उत्तरोत्तर चारित्र ग्रहण कर परंपरा से मोक्षसुख प्राप्त हो ।

# मौखिक कक्षा २

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | जगचिंतामणि से संसारदावा | ३० |
| **काव्य** | : | चैत्यवंदन : (१) सकलकुशल | २० |
| | | (२) आश पूरे प्रभु पासजी (३) पद्मप्रभ एवं वासुपूज्य स्तवन : अंतरजामी सुण... | |
| | | थोय : शंखेश्वर पासजी पूजीए (४ गाथा) | |
| | | स्तुति : रत्नाकर पच्चीसी ६ से १० गाथा | १० |
| **विधि** | : | चैत्यवंदन की, सामायिक लेने-पारने की | १० |
| | | अष्टप्रकारी पूजा और नवांगी पूजाके दोहे | १५ |
| | | राजनगर प्रश्नोत्तरी : ११ से ३० | १५ |
| | | | १०० |

## (१२) जगचिंतामणि (चैत्यवंदन सूत्र)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? इच्छं, जग चिंतामणि! जगनाह! जगगुरु! जगरक्खण! जगबंधव! जगसत्थवाह जगभाव-विअक्खण! अट्ठावय संठविअ रुव! कम्मट्ठ विणासण! चउवीसं पि जिणवर! जयंतु अप्पडिहय सासण.....१

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयणि उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ, नवकोडिहिं केवलीण कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ, संपइ जिणवर वीस, मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडि सहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्च विहाणि.....२

जयउ सामिय! जयउ सामिय! रिसह सत्तुंजि, उज्जिंति पहु नेमिजिण! जयउ

वीर! सच्चउरिमंडण! भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय! मुहरिपास! दुह दुरिअखंडण! अवर विदेहिं तित्थयरा, चिंहु दिसि विदिसि जिं के वि, तीआणागय संपइअ, वंदुं जिण सव्वे वि.....३

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ, बत्तीस-सय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे.....४

पन्नरस कोडिसयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना, छत्तीस सहस असीइं सासय बिंबाइं पणमामि.....५

## (१३) जंकिंचि सूत्र (तीर्थवंदना सूत्र)

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि... १

## (१४) नमुत्थुणं सूत्र (शक्रस्तव सूत्र)

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥

आइ-गराणं, तित्थ-यराणं, सयं-संबुद्धाणं ॥२॥

पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं,
पुरिस-वर-पुंडरीआणं, पुरिस-वर-गंध-हत्थीणं ॥३॥

लोगुत्तमाणं, लोग-नाहाणं, लोग-हियाणं,
लोग-पईवाणं, लोग-पज्जोअ-गराणं ॥४॥

अभय-दयाणं, चक्खु-दयाणं, मग्ग-दयाणं,
सरण-दयाणं, बोहि-दयाणं ॥५॥

धम्म-दयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्म-नायगाणं,
धम्म-सारहीणं, धम्म-वर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥६॥

अप्पडिहय-वर-नाण-दंसण-धराणं, वियट्ट-छउमाणं ॥७॥

जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं,
बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥

सव्वन्नूणं, सव्व-दरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-
मपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ-भयाणं ॥९॥

जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति-
णागए काले संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे ति-विहेण वंदामि ॥१०॥

## (१५) जावंति चेइआइं सूत्र (चैत्यवंदन सूत्र)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ,
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

## (१६) जावंत के वि साहू सूत्र (गुरुवंदन/मुनिवंदन सूत्र)

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ,
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

## (१७) नमोऽर्हत् सूत्र (संक्षिप्त पंचपरमेष्ठि नमस्कार सूत्र)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो-पाध्याय सर्वसाधुभ्यः...।

## (१८) उवसग्गहरं सूत्र (उपसर्गहर स्तोत्र)

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं
विसहर-विस-निन्नासं मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥

विसहर-फुलिंगमंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥

तुह सम्मत्ते लद्धे चिंतामणि कप्प-पायवब्भहिए,
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥

इह संथुओ महायस भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण,
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचंद ! ॥५॥

## (१९) जय वीयराय ! (प्रार्थना सूत्र)

जय वीयराय ! जग गुरू !
होउ ममं तुह पभावओ भयवं!
भव-निव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल-सिद्धि ॥१॥

लोग-विरुद्ध-च्चाओ गुरु-जण-पूआ परत्थ-करणं च
सुह-गुरु-जोगो तव्वयण-सेवणा आ-भवमखंडा ॥२॥

वारिज्जइ जइ वि नियाण-बंधणं वीयराय! तुह समये
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥

दुक्ख-खओ कम्म-खओ, समाहि-मरणं च बोहि-लाभो अ
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह! पणाम-करणेणं ॥४॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

## (२०) अरिहंत-चेईयाणं सूत्र (चैत्यस्तव सूत्र)

अरिहंत-चेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

वंदण-वत्तियाए, पूअण-वत्तियाए, सक्कार-वत्तियाए, सम्माण-वत्तियाए,
बोहि-लाभ-वत्तियाए, निरुवसग्ग-वत्तियाए ॥२॥

सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए, ठामि
काउस्सग्गं. ॥३॥

## (२१) कल्लाणकंदं सूत्र (पांच जिन की थोय)

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं संतिं तओ नेमिजिणं मुणिदं,
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं ॥१॥

अपार संसार समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं,
सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाण-वल्लीण-विसाल-कंदा ॥२॥

निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं, पणासिया सेस कुवाइ-दप्पं;
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना, सरोज-हत्था-कमले-निसन्ना,
वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥४॥

## (२२) संसारदावा सूत्र

**(उपजाति छंद)**

संसार-दावा-नल-दाह-नीरं, संमोह-धूली-हरणे समीरं.
माया-रसा-दारण-सार-सीरं, नमामि वीरं गिरि-सार-धीरं ॥१॥

**(वसंत तिलका छंद)**

भावावनाम-सुर-दानव-मानवेन,
चूला-विलोल-कमला-वलि-मालितानि.
संपूरिता-भिनत-लोक-समीहितानि,
कामं नमामि जिनराज-पदानि तानि ॥२॥

**(मन्दाक्रान्ता छंद)**

बोधागाधं सुपद-पदवी-नीर-पूराभिरामं,
जीवा-हिंसा-विरल-लहरी-संगमा-गाह-देहं.
चूला-वेलं गुरु-गम-मणि-संकुलं दूर-पारं,
सारं-वीरा-गम-जल-निधिं सादरं साधु सेवे. ॥३॥

(स्रग्धरा छन्द)

आमूला-लोल-धूली-बहुल-परि-मला-लीढ-लोलालि-माला-,
झंकाराराव-सारा-मल-दल-कमला-गार-भूमी-निवासे!.
छाया-संभार-सारे! वर-कमल-करे! तार-हाराभिरामे!,
वाणी-संदोह-देहे! भव-विरह-वरं देहि मे देवि! सारं. ॥४॥

## चैत्यवंदन विधि

सबसे पहले एक खमासमण देना । उसके बाद 'इरियावहियं, तस्स उत्तरी, अन्नत्थसूत्र' बोलना, फिर एक 'लोगस्स' 'चंदेसु निम्मलयरा' तक (आता न हो तो चार नवकार) का काउसग्ग (कायोत्सर्ग) करना । 'नमो अरिहंताणं' कहकर काउसग्ग पारकर प्रगट 'लोगस्स' कहना।

तत्पश्चात् तीन खमासमण देना, उसके बाद बायां घुटना उंचा करना - 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, चैत्यवंदन करुं ?' 'इच्छं' कहकर योगमुद्रा में 'सकलकुशलवल्ली' बोलना। उसके बाद कोई भी एक चैत्यवंदन बोलना।

फिर 'जंकिंचि', 'नमुत्थुणं', जावंति, एक खमासमण जावतं के वि-साहु बोलना।

फिर नमोऽर्हत् बोल के स्तवन बोलना, स्तवन आता न हो तो उवसग्गहरं बोलना।

फिर 'जयवीयराय' सूत्र बोलना, अर्ध जयवीयराय (आभवमखंडा तक 'मुक्ताशुक्ति' मुद्रा रखना, उसके बाद योगमुद्रा में सूत्र पूर्ण करना ।

फिर खड़े होकर 'अरिहंत चेइआणं' और 'अन्नत्थ' कहकर एक नवकार का काउसग्ग करना । 'नमो अरिहंताणं' से पालकर थोय कहना ।

फिर एक खमासमणा देकर दायां हाथ जमीन पर रखकर 'अविधि' 'आशातना' का 'मिच्छामि दुक्कडम्' मांगना ।

## सामायिक लेने की विधि

(१) प्रथम शुद्ध वस्त्र पहनकर चरवले से जमीन पूंजकर भूमि शुद्ध करना । उँचे आसनपर स्थापनाचार्यजी स्थापित करना अथवा सापडे पर पुस्तक रखना ।

(२) फिर बांये हाथ से मुहपत्ति (मुखवस्त्रिका) मुख के सामने रखना । शक्य हो तो पूर्व या उत्तरदिशा की तरफ मुँह रखकर दायां हाथ स्थापनाजी की ओर रखकर 'नवकार' और 'पंचिंदिय' कहकर स्थापनाजी स्थापित करना ।

(३) फिर एक खमासमणा देकर खड़े होकर 'ईरियावहियं' 'तस्सउत्तरी' और 'अन्नत्थ' कहकर एक लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' तक (आता न हो तो चार नवकार) काउसग्ग करना । फिर नमो अरिहंताणं कहकर काउसग्ग पारकर प्रगट लोगस्स बोलना ।

(४) फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !' 'सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुँ ?' ऐसी आज्ञा मांगकर, गुरु के आदेश देने पर फिर 'इच्छं' कहकर मुँहपत्ति पडिलेहण करना ।

(५) पश्चात् एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुँ ?' गुरु के आदेश देनेपर 'इच्छं' बोलना ।

(६) फिर एक खमासमणा देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं ?' ऐसा पूछना, गुरु के आदेश पर 'इच्छं' कहकर दो हाथ जोड़कर एक 'नवकार' बोलना ।

(७) फिर दो हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर 'इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी' एसा कहकर गुरु भगवंत के पास, गुरु भगवंत न हो तो बुजुर्ग (वडील) व्यक्ति के पास 'करेमि भंते' सूत्र उच्चराना यदि कोई आसपास न हो तो खुद बोलना ।

(८) फिर एक खमासमणा देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुँ ?' (गुरु के आदेश देने पर) 'इच्छं' कहना ।

(९) पश्चात् एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ?' (गुरु आदेश दे उसके पश्चात् 'इच्छं' कहना ।)

(१०) फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुँ ?' गुरु के आदेश के पश्चात् 'इच्छं' कहना ।

(११) फिर एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ?' (गुरु के आदेश पर) 'इच्छं' कहना ।

(१२) फिर हाथ जोड़कर पुरुषो को उभडक पैरों पर बैठकर एवं महिलाओं को खडे खडे 'तीन नवकार' गिनना ।

(१३) तत्पश्चात् दो घडी (४८ मिनिट) स्थिर आसन पर बैठकर स्वाध्याय - धर्मध्यान आदि करना ।

## सामायिक पारने की विधि

(१) प्रथम एक खमासमण देना । 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं' इस तरह आज्ञा लेकर इरियावहीयं, तस्सउत्तरी एवं अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' तक बोलना (न आता हो तो चार नवकार) काउसग्ग होने के बाद नमो अरिहंताणं बोलकर काउसग्ग पारना और प्रगट लोगस्स बोलना ।

(२) फिर एक खमासमण देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, मुँहपत्ति पडिलेहुं ?' गुरु के आदेश के पश्चात् 'इच्छं' कहकर मुंहपत्ति पडिलेहण करें।

(३) पश्चात् एक खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ?' गुरु के आदेश पर 'यथाशक्ति' बोलना ।

(४) फिर एक खमासमण देकर, 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !' सामायिक पार्युं ! गुरु आदेश दे फिर 'तहत्ति' बोलना ।

(५) दाहिने हाथ को, चरवले के उपर स्थापित कर एक नवकार बोलना और 'सामाइय वयजुत्तो' सूत्र बोलना ।

(६) स्थापनाचार्यजी न हो तो सामायिक लेते वक्त स्थापनाचार्यजी की स्थापना की थी उनके सामने दाहिना हाथ अपनी तरफ सीधा रखकर एक नवकार बोलकर स्थापनाचार्यजी का उत्थापन कर योग्य स्थान पर रख देना चाहिए।

## सकल कुशलवल्लि

सकल कुशलवल्लि, पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरित तिमिर भानुः, कल्पवृक्षोपमानः;
भवजलनिधिपोतः, सर्व संपत्ति हेतुः;
स भवतु सततं वः, श्रेयसे शान्तिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः।

## श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पासजी, तोडे भव पास;
वामा माता जनमीया, अहिं लंछन जास. १

अश्वसेन सुत सुखकरुं, नव हाथनी काय;
काशी देश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आया. २

एकसो वरसनुं आउखुं, ए पाळी पार्श्वकुमार;
पद्म कहे मुगते गया, नमतां सुख निरधार. ३

## चोविस जिनके शरीर के वर्ण का चैत्यवंदन

पद्मप्रभ ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए;
चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दो उज्जवल लहीये. १

मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला नीरख्या;
मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरीखा. २

सोले जिन कंचन समा, एहवा जिन चोवीश;
धीरविमलपंडित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य. ३

## श्री पार्श्वनाथ भगवान की थोय

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए;
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु. १

दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचन वर्ण लह्या. २

आगम ते जिनवर भाखीयो, गणधर ते हैडे राखीयो;
तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुवो शिवसुख साखीयो. ३

धरणेन्द्र राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, नयविमलनां वांछित पूरती. ४

## श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो;
सांभळीने आव्यो हुं तीरे, जन्म मरण दु:ख वारो,
सेवक अरज करे छे राज! अमने शिवसुख आपो १

सहुकोनां मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो;
एहवुं बिरूद छे राज! तमारुं, केम राखो छो दूरे? सेवक० २

सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो;
करूणासागर केम कहेवाशो? जो उपगार न करशो. सेवक० ३

लटपटनुं हवे काम नहि छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे;
धुमाडे धीजुं नहि साहिब, पेट पड्या पतीजे. सेवक० ४

श्री शंखेश्वरमंडन साहिब, विनतडी अवधारो;
कहे 'जिनहर्ष' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो. सेवक० ५

## श्री रत्नाकर पच्चीसी

में परभवे के आ भवे पण हित कांइ कर्युं नहि,
तेथी करी संसारमां सुख अल्प पण पाम्यो नहि;
जन्मो अमारा जिनजी भव पूर्ण करवाने थया,
आवेल बाजी हाथमां अज्ञानथी हारी गया. ६

अमृत झरे तुज मुखरूपी चंद्रथी तो पण प्रभु,
भिंजाय नहि मुज मन अरेरे! शुं करुं हुं तो विभु;
पत्थर थकी पण कठण मारुं मन खरे क्यांथी द्रवे,
मरकट समा आ मन थकी हुं तो प्रभु हार्यो हवे. ७

भमतां महाभवसागरे पाम्यो पसाये आपना,
जे ज्ञान दर्शन चरणरूपी रत्नत्रय दुष्कर घणा;
ते पण गया परमादना वशथी प्रभु कहुं छुं खरूं,
कोनी कने किरतार आ, पोकार हुं जइने करूं? ८

ठगवा विभु आ विश्वने वैराग्यना रंगो धर्या,
ने धर्मनो उपदेश रंजन लोकने करवा कर्या;
विद्या भण्यो हुं वाद माटे केटली कथनी कहुं?
साधु थइने बहारथी दांभिक अंदरथी रहुं. ९

में मुखने मेलुं कर्युं दोषो पराया गाइने,
ने नेत्रने निंदित कर्यां परनारीमां लपटाइने;
वळी चित्तने दोषित कर्युं चिंती नठारूं परतणुं,
हे नाथ! मारूं शुं थशे चालाक थइ चूक्यो घणुं. १०

## अष्टप्रकारी पूजा का दोहे

हर पूजा के दोहे से पहले नमोऽर्हत् बोले।

**जल पूजा :** जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश;
जल पूजा फल मुज होजो, मांगो एम प्रभु पास.

---

संयम अर्थात् कषायरूपी अग्नि को शान्त करनेवाला पानी.

हर दोहे के बाद नीचे दिया गया मंत्र बोले

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय, जलं (चंदनं, पुष्पं वगेरे जो पूजा हो उस प्रकार नाम बोले) यजामहे स्वाहा. (२७ डंके बजाऐ.)

**चंदन पूजा:** शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग;
आत्म शीतल करवा भणी, पूजो अरिहा अंग.

**पुष्प पूजा :** सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप;
सुम जंतु भव्य ज परे, करीये समकित छाप.

**धूप पूजा :** ध्यान घटा प्रगटावीए, वाम नयन जिन धूप;
मिच्छत्त दुर्गंध दूरे टळे, प्रगटे आत्म स्वरूप.

**दीपक पूजा :** द्रव्यदीप सुविवेकथी, करतां दु:ख होय फोक;
भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोकालोक.

**अक्षत पूजा :** शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाळ;
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाळी सकळ जंजाळ.

**नैवेद्य पूजा:** अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गइय अनंत;
दूर करी ते दिजिये, अणाहारी शिव संत.

**फळ पूजा :** इंद्रादिक पूजा भणी, फळ लावे धरी राग;
पुरुषोत्तम पूजी करी, मांगे शिव फळ त्याग.

## नव अंग पूजा के दोहे

**१. अंगूठे :** जळ भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत;
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भव जल अंत.

**२. घूंटणे :** जानु बळे काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश;
खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश.

**३. कांडे :** लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसीदान;
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान.

**४. खभे :** मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत;
भुजाबळे भव जल तर्या, पूजो खंध महंत.

**५. मस्तके :** सिद्धशिला गुण उजळी, लोकांते भगवंत;
वसिया तेणे कारण भवि! शिर शिखा पूजंत.

**६. कपाळे :** तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत;
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत.

**७. गळे :** सोळ प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुळ;
मधुर ध्वनि सुर नर सुणे, तिणे गळे तिलक अमूल.

**८. हृदये :** हृदय कमल उपशम बळे, बाळ्या राग ने रोष;
हिम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष.

**९. नाभिए :** रत्नत्रयी गुण उजळी, सकळ सुगुण विश्राम;
नाभि कमळनी पूजना, करतां अविचल धाम.
उपदेशक नवतत्त्वना, तिणे नव अंग जिणंद;
पूजो बहुविध रागशुं, कहे शुभवीर मुणींद.

**नोंध :** (पूजा के दोहे गभारे में ऊँची आवाज में नही बोलने चाहिए, परंतु मनमे उसका चिंतन करे)

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.११. वर्तमान में किसका शासन चल रहा है ?

उ. वर्तमान में २४ वें तीर्थंकर श्री महावीर परमात्मा का शासन चल रहा है ।

प्र.१२. तत्व कितने है ? और वे कौन-से है ?

उ. तत्त्व तीन है (१) देव (२) गुरु (३) धर्म ।

प्र.१३. देव यानि क्या है ?

उ. देव वह है जो सर्व गुण संपन्न हैं और जिनमें एक भी दोष नहीं है ।

प्र.१४. गुरू यानि क्या है ?

उ. गुरू वे है जो पांच महाव्रतों का पालन करते हैं ।

प्र.१५. महाव्रत यानि क्या है ? वे कितने है ? और कौन से है ?

उ. महाव्रत यानि कठोर (कठिन) व्रत । वे पाँच है ।

१. जीवदया (जीवो की हिंसा न करना) पारना

२. सत्य बोलना (झूठ न बोलना)

३. चोरी नहीं करना।

४. शीलव्रत का पालन करना।

५. पैसा (अर्थ) आदि संपत्ति नहीं रखना।

प्र.१६. धर्म यानि क्या है ?

उ. जीव को दुर्गति में जाने से रोक कर सद्गति की तरफ ले जाता है और परंपरा से मोक्षसुख की प्राप्ति करवाता है।

प्र.१७. श्रावक यानि क्या है ?

उ. जो श्री जिनेश्वर भगवान के वचनों पर श्रद्धा रखता है, विनय-विवेक करता है, दर्शन, पूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध तथा देव-गुरु की भक्ति करता है उसे श्रावक कहते है।

प्र.१८. श्रावक शब्द का अर्थ बताये।

उ. 'श्र' – अक्षर से श्रद्धा रखे

'व' – अक्षर से विवेक करे

'क' – अक्षर से क्रिया करे ।

प्र.१९. नवकार मंत्र में कुल कितने अक्षर है ? उसमें सात अक्षर, पांच अक्षर,

आठ अक्षर और नौ अक्षर कौनसे पद में है ?

उ. नवकार मंत्र में ६८ (अड़सठ) अक्षर है। उसमें – पहले, तीसरे और चौथे पदमें सात अक्षर, दूसरे पद में पांच अक्षर, पाँचवे और नोंवे पद में नौं अक्षर तथा छट्ठे, सातवे और आठवें पद में आठ अक्षर है।

प्र.२०. श्री नवकार मंत्र का स्मरण कब/किस समय करना चाहिए ?

उ. श्री नवकार महामंत्र का स्मरण उपद्रव शांति के लिए साथ-साथ मांगलिक के लिए भी किया जाता है। उत्तम मनुष्य सोते उठते-बैठते, चलते-फिरते तथा कोई भी कार्य करते समय रात में या दिन में नवकार मंत्र का स्मरण करते हैं।

प्र.२१. सामायिक यानि क्या है ?

उ. सामायिक यानि समता का लाभ। श्री जिनेश्वर भगवान ने बताई हुई ऐसी क्रिया जिससे पुराने कर्मो का नाश होता है और नए कर्म बंधने से रूकते हैं ।

प्र.२२. सामायिक का समय कितना ?

उ. ४८ मिनिट : पोना घंटा और तीन मिनट अथवा दो घडी ।

प्र.२३. श्री जिनपूजा प्रभुके कौन-कौन से नौ अंगो पर की जाती है ?

उ. १. दाएं और बाएं पैर के अंगूठे पर
२. दाएं और बाएं घुटने पर
३. दाई और बांइ कलाई पर
४. दाएं और बाएं कंधे पर
५. मस्तक (शिखा) पर
६. ललाट पर
७. कंठ (गला) पर

८. हृदय पर

९. नाभि पर

प्र.२४ प्रभु पूजा नव-अंग पर करने का क्या कारण है ? प्रभु की नव-अंगी पूजा क्यों करनी चाहिए ?

उ. प्रभु (परमात्मा) नव तत्व के उपदेशक है और नव तत्वों में संसार के सभी तत्व शामिल है, इसलिए प्रभुकी नव-अंगी पूजा करनी चाहिए ।

प्र.२५. प्रभु दर्शन कैसे करें ?

उ. सांसारिक विचारों का त्याग करके दोनों हाथ जोडकर मस्तक (सिर) झुकाकर, प्रभु के सामने दृष्टि (नजर) रखकर, प्रभु के गुणों को याद करते हुए प्रभुदर्शन करना चाहिए ।

प्र.२६. जैन को पहचानने के प्रकट चिन्ह क्या है ?

उ. केसर का तिलक, रात्रिभोजन का त्याग और कंदमूल का त्याग ।

प्र.२७. तिलक क्यों करना चाहिए ?

उ. यह इंगित [सूचित] करने के लिए कि, मैं श्री जिनेश्वर भगवान की आज्ञा शिरोमान्य कर रहा हूँ।

इंगित – जिसकी ओर इशारा या संकेत किया गया हो ।

प्र.२८. परमात्मा को तीन प्रदक्षिणा [परिक्रमा] क्यों देनी चाहिए ?

उ. दर्शन, ज्ञान और चारित्र इन तीनों की प्राप्ति के लिए – एवं चौरासी लाख जीवयोनि में जन्म-मरण के परिभ्रमण को मिटाने के लिए परमात्मा को तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए ।

प्र.२९. हमारे तीर्थों के नाम बताइए ?

उ. श्री शत्रुंजय, गिरनार, आबु, अष्टापद, अचलगढ, सम्मेतशिखर, शंखेश्वर, कुंभारीयाजी, मक्षीजी, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ, तारंगाजी, राणकपुर, भोयणी, पावापुरी, चंपापुरी, केशरीयाजी, पानसर, शेरीसा, आदि.

प्र.३०. हमारे पर्व के नाम बताईये ? और वे कब कब आते है ?

| | |
|---|---|
| (१) कारतक सुद-५ | ज्ञान-पांचम |
| (२) कारतक सुद-१४ | चोमासी चौदस |
| (३) कारतक सुद-१५ | श्री शंत्रुजय महातीर्थ की यात्रा करना, अथवा श्री शत्रुंजय महातीर्थ के पट के दर्शन करना |
| (४) मागसर सुद-११ | मौन एकादशी |
| (५) पौष वद-१० (पौष दशम) | श्री पार्श्वनाथ प्रभु का जन्म कल्याणक |
| (६) महा वद-१३ (मेरुतेरस) | श्रीऋषभदेव प्रभुका मोक्ष कल्याणक |
| (७) फागण सुद-१३ | श्री शत्रुंजय तीर्थकी छ-गाउ यात्रा |
| (८) फागण सुद-१४ | चौमासी चौदस |
| (९) चैत्र सुद ७ से १५ (९ दिन) | आंयबिल की शाश्वती ओली |
| (१०) चैत्र सुद-१३ | श्री महावीर प्रभुका जन्म कल्याणक |
| (११) चैत्र सुद-१५ | श्री ऋषभदेव प्रभुके गणधर श्री पुंडरिक स्वामी पांच क्रोड साधुओं के साथ मोक्ष गये |
| (१२) वैशाख सुद-३ (अखात्रीज) | श्री ऋषभदेव प्रभुको श्रेयांस कुमारने गन्ने के रस से पारणा कराया. दूसरा नाम अक्षय तृतीया. |
| (१३) आषाढ सुद-१४ | चौमासी चौदस |
| (१४) भादरवा वद १२ से भादरवा सुद ४ | पजुसण (पर्युषण) संवत्सरी क्षमापना पर्व |
| (१५) आसो सुद-७ से १५ (९ दिन) | आंयबिल की शाश्वती ओली |
| (१६) कारतक वद ०)) (अमावस) | श्री महावीर प्रभुका निर्वाण कल्याणक (दिवाली) |

**नोंध** - महिनो के नाम हिन्दी पंचांग और मारवाडी तिथि अनुसार है।

● ● ●

# मौखिक कक्षा ३

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | पुक्खरवर.... से वंदित्तु सूत्र | ३० |
| **अर्थ** | : | नवकार, पंचिंदिय, खमासमण, | २० |
| | | इच्छकार, अब्भुट्ठिओ | |
| **काव्य** | : | दुहा : काळ अनादि... (प्रदिक्षणा का) | |
| | | चैत्यवंदन : सिद्धारथ सुत वंदीए... | २५ |
| | | स्तवन : गिरुआ रे गुण... | |
| | | थोय : जय जय भवि हितकर (४ गाथा) | |
| | | सजझाय : कडवा फळ छे क्रोधना | |
| | | स्तुति : रत्नाकर पच्चीसी ११ से १५ गाथा | १० |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी :** ३१ से ४० | | | १५ |
| | | | १०० |

## (२३) पुक्खरवरदीवड्ढे (श्रुतस्तव) सूत्र

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे य जंबूदीवे य; भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि. ॥१॥

तमतिमिरपडलविद्धंस-णस्स, सुरगणनरिन्दमहियस्स; सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय-मोहजालस्स. ॥२॥

**(वसंततिलका छन्द)**

जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसाल सुहावहस्स, को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं? ॥३॥

(शार्दुलविक्रीडितम् वृतम्)

सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे; देवंनाग-सुवन्नकिन्नरगण, सब्भूअ-भावच्चिए, लोगोजत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ. ॥४॥

सुअस्स भगवओ, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए०

## (२४) सिद्धाणं बुद्धाणं (सिद्धस्तव) सूत्र

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं;
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं. ॥१॥

जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति;
तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं. ॥२॥

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स;
संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा. ॥३॥

उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स;
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि. ॥४॥

चत्तारि अट्ठ दस दो अ, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं;
परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु. ॥५॥

## (२५) वेयावच्चगराणं सूत्र
## (समकिती देवो को संभारने का सूत्र)

### [सम्यगदृष्टि देव की स्तुति]

वेयावच्चगराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं, करेमि काउस्सग्गं. अन्नत्थ०

## (२६) भगवानादि वंदनसूत्र

(भगवान् हं) भगवान्हं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुहं,

## (२७) पडिक्कमणे ठाउं? सूत्र (प्रतिक्रमण बीज सूत्र)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअ (राइअ) पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं, सव्वस्सवि देवसिअ, (राईअ) दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ मिच्छा मि दुक्कडं.

## (२८) इच्छामि ठामि सूत्र (लघु अतिचार सूत्र)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ (राइओ) अइआरो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह-मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं-सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

## (२९) नाणंमि सूत्र (पांच आचार के अतिचार की गाथा)

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि,
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ. ॥१॥

काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे;
वंजण-अत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो. ॥२॥

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ;
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल प्पभावणे अट्ठ. ॥३॥

पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं;
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो. ॥४॥

बारसविहंमिवितवे, सब्भिंतर-बाहिरे कुसलदिट्ठे;
अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो. ॥५॥

---

मोक्ष अर्थात् जन्म-जरा-मरण से सदा के लिए छुटकारा.

अणसणमुणोअरिआ, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ;
कायकिलेसो संलीणया य, बज्झो तवो होइ. ॥६॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ;
झाणं उस्सग्गो विअ, अब्भिंतरओ तवो होइ. ॥७॥

अणिगूहिअ बलवीरिओ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो;
जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो. ॥८॥

## (३०) सुगुरु वांदणा सूत्र (द्वादशावर्त्त वंदन सूत्र)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अ-हो, का-यं, का-य संफासं, खमणिज्जो भे! किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो (राईअ वइक्कंता) वइक्कंतो? ज-त्ता भे! ज-व-णिज्जं चभे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं (राईअं) वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए (राईए) आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए; मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए; सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

## (३१) देवसिअं आलोउं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं (राइअं) आलोउं? इच्छं, आलोएमि जो मे देवसिओ० (राइओ)

## (३२) सात लाख सूत्र
## [चोरासी लाख जीवयोनि से माफी मांगने का सूत्र]

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौद लाख साधारण

वनस्पतिकाय, बे लाख बेइंद्रिय, बे लाख तेइंद्रिय, बे लाख चउरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद लाख मनुष्य एवंकारे चौरासी लाख जीवयोनिमांहि म्हारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं।

## (३३) अढार पापस्थानक सूत्र (अढार पाप आलोचना का सूत्र)

पहले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छट्ठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पंदरमे रति अरति, सोलमे पर परिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद अढारमे मिथ्यात्वशल्य. ए अढार पापस्थानकमांहि म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्यु होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.

## (३४) सव्वस्सवि (प्रतिक्रमण बीज) सूत्र

सव्वस्सवि देवसिअ (राइअ), दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ; इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं.

## (३५) इच्छामि पडिक्कमिउं सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं? जो मे देवसिओ (राइओ) अइयारो कओ०

## (३६) वंदित्तु (श्राद्ध प्रतिक्रमण) सूत्र

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ;
इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स. ॥१॥

जो मे वयाइयारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ;
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥२॥

दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे;
कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥३॥

जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं;
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥४॥

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे;
अभिओगे अ निओगे; पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥५॥

संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु;
सम्मत्तस्सइयारे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥६॥

छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा;
अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे. ॥७॥

पंचण्ह-मणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे;
सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥८॥

पढमे अणुव्वयम्मि, थूलग पाणाइवाय विरईओ;
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥९॥

वह-बंध-छविच्छेए, अइभारे भत्त-पाणवुच्छेए;
पढमवयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१०॥

बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिअ-वयणविरईओ;
आयरिय-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥११॥

सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ;
बीयवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१२॥

तइए अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरण विरईओ;
आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥१३॥

तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ;
कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१४॥

चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमण-विरईओ;
आयरिअ-मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥१५॥

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व-अणुरागे;
चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१६॥

इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थम्मि;
परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं. ॥१७॥

धण धन्न खित्तवत्थू, रूप्पसुवन्ने अ कुविअ-परिमाणे;
दुपए चउप्पयम्मि य, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥१८॥

गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च;
वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे. ॥१९॥

मज्जंमि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंध मल्ले अ;
उवभोगपरिभोगे, बीयम्मि गुणव्वए निंदे. ॥२०॥

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे;
तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥२१॥

इंगाली वण साडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं;
वाणिज्जं चेव दंत, लक्ख रस केस विस विसयं. ॥२२॥

एवं खु जंतपिल्लण कम्मं, निल्लंछणं च दव दाणं;
सर-दह-तलाय-सोसं, असई-पोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥

सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तण-कट्ठे-मंतमूल-भेसज्जे;
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥२४॥

न्हाणु-व्वट्टण-वन्नग, विलेवणे सद्द रूव-रस-गंधे;
वत्थासण-आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं. ॥२५॥

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते;
दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे. ॥२६॥

तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे;
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे. ॥२७॥

आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे;
देसावगासिअम्मि, बीए सिक्खावए निंदे. ॥२८॥

संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए;
पोसहविहि-विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे. ॥२९॥

सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मच्छरे चेव;
कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे. ॥३०॥

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे असंजएसु अणुकंपा;
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥३१॥

साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण करण-जुत्तेसु;
संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥३२॥

इहलोए परलोए, जीविअ-मरणे अ आसंस पओगे;
पंचविहो अइयारो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते. ॥३३॥

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए;
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्सवयाइआरस्स. ॥३४॥

वंदण वय सिक्खा-गारवेसु, सन्ना कसाय दंडेसु;
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे. ॥३५॥

सम्मद्दिट्ठीजीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि;
अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ. ॥३६॥

तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तर गुणं च;
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो. ॥३७॥

जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया;
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं. ॥३८॥

एवं अट्ठ विहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं;
आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ. ॥३९॥

कयपावो वि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरु सगासे;
होइ अइरेग लहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो. ॥४०॥

आवस्सएण एएण, सावओ जइवि बहुरओ होइ;
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण. ॥४१॥

आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण काले;
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि. ॥४२॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए,
विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं. ॥४३॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ;
सव्वाईं ताईं वंदे, इह संतो तत्थ संताईं. ॥४४॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ;
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं. ॥४५॥

चिरसंचिय पावपणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए;
चउवीस जिण विणिग्गय कहाइ, वोलंतु मे दिअहा. ॥४६॥

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ;
सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च. ॥४७॥

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे अपडिक्कमणं;
असद्दहणे अ तहा, विवरीअ परूवणाए अ. ॥४८॥

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे;
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई. ॥४९॥

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं;
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं. ॥५०॥

## (१) श्री नमस्कार महामंत्र (अर्थ सहित)

**नमो अरिहंताणं ॥१॥**
**नमो सिद्धाणं ॥२॥**
**नमो आयरियाणं ॥३॥**
**नमो उवजझायाणं ॥४॥**
**नमो लोए सव्व साहूणं ॥५॥**
**एसो पंच नमुक्कारो ॥६॥**
**सव्व पावप्पणासणो ॥७॥**
**मंगलाणं च सव्वेसिं,**
**पढमं हवइ मंगलं ॥८॥**

श्री अरिहंत भगवंतो को नमस्कार हो.
श्री सिद्ध भगवंतो को नमस्कार हो.
श्री आचार्य भगवंतो को नमस्कार हो.
श्री उपाध्याय भगवंतो को नमस्कार हो.
लोक में रहे सर्व साधु भगवंतो को नमस्कार हो.
इन पाँचों को किया हुआ नमस्कार
सर्व पाप का नाश करने वाला है.
और सर्व मंगल में प्रथम मंगल है॥१॥

## (२) पंचिंदिय सूत्र (गुरुस्थापना सूत्र) अर्थ

**पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह-बंभचेर-गुत्तिधरो,**
**चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥**

पांच इन्द्रियों के विषय को रोकने वाले, ब्रह्मचर्य की नौं वाडों को धारण करने वाले, क्रोध आदि चार कषायों से मुक्त, ऐसे अठारह गुणों से युक्त॥१॥

**पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो,**
**पंच-समिओ ति-गुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥**

पांच महाव्रतों को धारण करने वाले, पांच आचार के पालन करने में समर्थ, पांच समिति और तीन गुप्ति से युक्त, अर्थात् उक्त छतीस गुण वाले मेरे गुरू है॥२॥

## (३) खमासमण सूत्र (पंचांग प्रणिपात सूत्र) अर्थ

**इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिजजाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.**

हे क्षमाश्रमण! मैं अपनी शक्ति के अनुसार, अपने सभी पाप व्यापारो का त्याग करके वंदन करने के लिए इच्छुक हूँ। मेरे मस्तक से/ (मस्तक झुकाकर) [पाचों अंगोसे] मैं वंदन करता हूँ।

## (४) इच्छकार सूत्र (सुगुरु सुखशाता पृच्छा सूत्र)

**इच्छकार! सुह राई? (सुह देवसि?) सुख तप? शरीर निराबाध? सुख संजम जात्रा निर्वहो छो जी? स्वामी! शाता छे जी? भात पाणीनो लाभ देजो जी.**

हे गुरू महाराज। आप की रात (आप का दिन सुखपूर्वक बीता होगा) सुखपूर्वक बीती होगी? आपकी तपश्चर्या सुखपूर्वक होती है? आपका शरीर पीडा रहित है? संयम यात्रा का सुख पूर्वक निर्वाह करते हो जी? हे स्वामी, सुख-शाता में हो जी? आहार, पानी का लाभ देनाजी।

## (५) अब्भुट्ठिओ सूत्र (गुरु खामणा सूत्र)

**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओ मि अब्भिंतर देवसिअं (राइअं) खामेउं?**

**इच्छं, खामेमि देवसिअं. (राइअं)**

**जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए॥१॥**

हे भगवंत! स्वेच्छा से आप आज्ञा प्रदान कीजिये। दिन में(रात्रि में) किये हुए अपराधो की क्षमा मांगने के लिये में उपस्थित हुआ हूँ। (गुरू भगवंत कहे-खामेह) आज्ञा स्वीकार करता हूँ । दिन में (रात्रि में) हुए अपराधों की क्षमा मांगता हूँ। जो कोई अप्रीति, विशेष अप्रीति आहार में पानी में, विनय में वैयावच्च में, एक बार बोलने में, बारबार बोलने मे, ऊँचे आसन पर बैठनें से, समान आसन पर बैठने से, बीच में बोलने से, बात को ज्यादा बोलने से॥१॥

**जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. ॥२॥**

मुझसे जो अविनय हुआ हो, आप जानते हो मैं नही जानता हूँ, मेरे वे सभी अपराध मिथ्या हो॥२॥

## प्रदक्षिणा का दोहे

काळ अनादि अनंतथी, भव भ्रमणनो नहि पार;
ते भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण वार. १

भमतीमां भमतां थकां, भव भावठ दूर पलाय,
दर्शन ज्ञान चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय. २

जन्म मरणादि सवि भय टळे, सीझे जो दर्शन काज,
रत्नत्रयी प्राप्ति भणी, दर्शन करुं जिनराज. ३

ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत;
ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत. ४

चय ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वळी जेह;
चारित्र निर्युक्ते कह्युं, वंदो ते गुणगेह. ५

दर्शन ज्ञान चारित्र ए, रत्नत्रयी शिवद्वार;
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदु:ख भंजनहार. ६

## श्री महावीरस्वामी भगवान का चैत्यवंदन

सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो,
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुरनरपति गायो. १

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काय,
बहोंतेर वर्षनुं आउखुं, वीरजिनेश्वर राय. २

'खिमाविजय' जिनराजनो, ए उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो पद्मविजय विख्यात. ३

## श्री महावीरस्वामी भगवान का स्तवन

गिरूआरे गुण तुम तणा, श्री वर्धमान जिनराया रे,
सुणतां श्रवणे अमी झरे, म्हारी निर्मल थाये काया रे. गि० १

तुम गुणगण गंगा जले, हुं झीलीने निर्मल थाउ रे,
अवर न धंधो आदरूं, निश दिन तोरा गुण गाउं रे. गि० २

झील्या जे गंगा जळे, ते छिल्लर जळ नवि पेसे रे,
जे मालती फूले मोहीया, ते बावळ जई नवि बेसे रे गि० ३

एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वळी माच्या रे,
ते केम परसुर आदरे? जे परनारी वश राच्या रे. गि० ४

तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे,
वाचक 'यश' कहे माहरे, तुं जीव जीवन आधारो रे. गि० ५

## श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय

जय जय भविहितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव;
करुणारसकंदो, वंदो आनंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणी. १

जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे;
ते च्यवन, जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण,
सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण. २

जिहां पंचसमिति युत, पंचमहाव्रत सार,
जेहमां प्रकाश्या, वळी पांचे व्यवहार,
परमेष्ठि, अरिहंत, नाथ, सर्वज्ञ ने पार,
एह पंचपदे लह्यो, आगम अर्थ उदार. ३

मातंग सिद्धाई, देवी जिनपद सेवी,
दु:ख दुरित उपद्रव, जे टाळे नितमेवी;
शासन सुखदायी, आई सुणो अरदास,
श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वांछित आश. ४

## क्रोध की सज्झाय

कडवां फळ छे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले,
रीस तणो रस जाणीए, हलाहल तोले. कडवां. १

क्रोधे क्रोड पूरव तणुं, संयम फल जाय,
क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखे न थाय. कडवां. २

साधु घणो तपीयो हतो, धरतो मन वैराग,
शिष्यना क्रोध थकी थयो, चंडकोशीओ नाग. कडवां. ३

आग ऊठे जे घर थकी, ते पहेलुं घर बाळे,
जळनो जोग जो नवि मळे, तो पासेनुं परजाळे. कडवां. ४

क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवलनाणी,
हाण करे जे हेतनी, जाळवजो एम जाणी. कडवां. ५

उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गळे साही,
काया करजो निर्मळी, उपशम रस नाही. कडवां. ६

## श्री रत्नाकर पच्चीशी

करे काळजाने कतल पीडा, कामनी बीहामणी,
अे विषयमां बनी अंध हुं, विडंबना पाम्यो घणी;
ते पण प्रकाश्युं आज लावी, लाज आप तणी कने,
जाणो सहुं तेथी कहुं, कर माफ मारा वांकने. ११

नवकार मंत्र विनाश कीधो, अन्य मंत्रो जाणीने,
कुशास्त्रनां वाक्यो वडे, हणी आगमोनी वाणीने;
कुदेवनी संगत थकी, कर्मो नकामां आचर्यां,
मति भ्रम थकी रत्नो गुमावी, काच कटका में ग्रह्या. १२

आवेल दृष्टिमार्गमां, मूकी महावीर आपने,
में मूढधीअे हृदयमां, ध्याया मदनना चापने;
नेत्रबाणो ने पयोधर, नाभी ने सुंदर कटी,
शणगार सुंदरीओ तणा, छटकेल थइ जोया अति. १३

मृगनयनीसम नारी तणां, मुखचंद्र नीरखवा थकी,
मुज मन विषे जे रंग लाग्यो, अल्प पण गाढो अति;
ते श्रुतरूप समुद्रमां, धोया छतां जातो नथी,
तेनुं कहो कारण तमे, बचुं केम हुं आ पापथी? १४

सुंदर नथी आ शरीर के, समुदाय गुण तणो नथी,
उत्तम विलास कळा तणी, देदीप्यमान प्रभा नथी;
प्रभुता नथी तो पण प्रभु, अभिमानथी अक्कड फरूं,
चोपाट चार गति तणी, संसारमां खेल्या करूं. १५

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.३१. प्रतिक्रमण यानि क्या है ?

उ. प्रतिक्रमण का अर्थ है पाप से पीछे हटना । जिसमें पाप धुल जाते है, पाप नष्ट होते है ऐसी ज्ञानी भगवंतो की बताई हुई महान क्रिया ।

प्र.३२. प्रतिक्रमण क्यों करना चाहिए ?

उ. दिवस संबंधी एवं रात्रि संबंधी पापों का नाश करने के लिए प्रतिक्रमण करना चाहिए ।

प्र.३३. प्रतिक्रमण कितने है ? और कौन कौन से ?

उ. प्रतिक्रमण पांच है – १. देवसी २. राई ३. पक्खी ४. चौमासी ५. संवत्सरीक ।

प्र.३४. पांच प्रतिक्रमण वर्ष में कितनी बार होते है ?

उ. संवत्सरी प्रतिक्रमण वर्ष में एकबार भादरवा सुद ४ के दिन होता है । चौमासी प्रतिक्रमण वर्ष मे (३) बार – कारतक सुद १४, फागण सुद १४ और अषाढ सुद १४ के दिन होता है । पक्खी प्रतिक्रमण वर्ष में इक्कीस [२१] बार चौमासी अलावा हर सुद चौदस और सभी वद चौदस को होता है, देवसी प्रतिक्रमण उपर के २५ दिनों के अलावा बाकी सभी दिनों में रोज शाम को और राई प्रतिक्रमण वर्ष के सभी दिनों में रोज सुबह किया जाता है ।

प्र.३५. रात्रिभोजन करने से क्या नुकसान होता है ?

उ. रात्रिभोजन करने से जिनाज्ञा [प्रभु आज्ञा] भंग का महान दोष लगता है और शुभ भावों का नाश होता है । और परभव में कौआ, उल्लु, गीध, बिल्ली, लोमडी, साप, बिच्छु और छिपकली जैसे दुष्ट भव की प्राप्ति होती है । ये तो परभव की बात हुई । इस भव में भी

भोजन में चींटी आ जाने से बुद्धि का नाश होता है, जु से जलोदर का रोग होता है, मक्खी से उलटी होती है, मकड़ी से कोढ रोग होता है तथा दूसरें बहुत रोग और खट्टी डकार वगेरे रोग होते है, इसलिए रात्रिभोजन का त्याग करना चाहिए ।

प्र.३६. अट्ठाई यानि क्या ? वे कितनी है ? कौन-कौन सी है ?

उ. धर्म की विशेष आराधना करने के दिनों को अट्ठाई कहते है । वे छः [६] है । वे इस प्रकार है –

a) कारतक सुद ७ से करातक सुद १५ तक – कारतक चौमासी

b) फागुन सुद ७ से फागन सुद १५ तक – फागण चौमासी

c) चैत्र सुद ७ से चैत्र सुद १५ तक – आयंबिल की ओली

d) अषाढ सुद ७ से अषाढ सुद १५ तक – अषाढ चौमासी

e) भादरवा वद १२ से भादरवा सुद ४ तक – पर्युषण की

f) आसो सुद ७ से आसो सुद १५ तक – आयंबिल की ओली ।

प्र.३७. पांच परमेष्ठि के नाम बताइए ।

उ. पांच परमेष्ठि – १. अरिहंत, २. सिद्ध, ३. आचार्य, ४. उपाध्याय, ५. साधु.

प्र.३८. नवपद के नाम, गुण और रंग कहे –

१. अरिहंत – १२ गुण – सफेद

२. सिद्ध – ८ गुण – लाल

३. आचार्य – ३६ गुण – पीला

४. उपाध्याय – २५ गुण – हरा

५. साधु – २७ गुण – काला

६. दर्शन – ६७ गुण – सफेद

७. ज्ञान – ५१ गुण – सफेद

८. चारित्र – ७० गुण – सफेद

९. तप – ५० गुण – सफेद

प्र.३९. नवपद का समावेश देवादि किन तत्व में होता है ?

उ. पहले दो पदोका समावेश देव तत्व में होता है बाद के तीन पदों का समावेश गुरू तत्व में होता है और बाकी [आखरी] चार पदों का धर्मतत्त्व में समावेश होता है ।

प्र.४०. नवकारवली में १०८ मणके रखने का क्या कारण है ?

उ. पंच परमेष्ठी के गुण १०८ हैं। उनको स्मरण करने के लिए १०८ मणके रखे गए हैं।

● ● ●

# मौखिक कक्षा ४

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | आयरिय उवज्झाए... से सकलतीर्थ | ३० |
| **अर्थ** | : | इरियावहिया, तस्सउत्तरी | २० |
| **काव्य** | : | चैत्यवंदन : शान्ति जिनेश्वर सोलमा... | २५ |
| | | स्तवन : शान्ति जिनेश्वर साचो साहिब... | |
| | | थोय : शान्ति सुहंकर...(४ गाथा) | |
| | | सजझाय : रे जीव मान... | |
| | | स्तुति : रत्नाकर पच्चीसी १६ से २० गाथा | १० |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी :** ४१ से ५० | | | १५ |
| | | | १०० |

## (३७) आयरिय उवजझाए सूत्र

आयरिय उवजझाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ;
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि. ॥१॥

सव्वस्स समण-संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे;
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि. ॥२॥

सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म निहिअ-नियचित्तो;
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि. ॥३॥

## (३८) नमोऽस्तु वर्द्धमानाय (वीरप्रभु का चैत्यवंदन)

इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं,
नमोऽर्हत्० नमोऽस्तु वर्द्धमानाय.
स्पर्द्धमानाय कर्मणा; तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम्. ॥१॥

येषां विकचारविंदराज्या, ज्याय: क्रम-कमलावलिं दधत्या;
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा: ॥२॥

कषायतापार्दित-जन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गत:,
स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्. ॥३॥

## (३९) विशाल-लोचन-दलं सूत्र (सुबह का वीरप्रभु का चैत्यवंदन)

विशाल-लोचन-दलं, प्रोद्यद्दंतांशु केसरम्;
प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पुनातु व:. ॥१॥

येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्ष-भरात् सुखं सुरेन्द्रा:;
तृणमपि, गणयन्ति नैव नाकं, प्रात: सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्रा:. ॥२॥

कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्क-राहुग्रसनं सदोदयम्;
अपूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौमि बुधैर्नमस्कृतम्. ॥३॥

## (४०) श्रुतदेवता की स्तुति

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०
सुअदेवया भगवई, नाणावरणीय कम्मसंघायं;
तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती. ॥१॥

## (४१) क्षेत्रदेवता की स्तुति

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०
जिसे खित्ते साहू, दंसण-नाणेहिं, चरण-सहिएहिं;
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरिआइं. ॥१॥

## (४२) कमलदल स्तुति

कमल-दल-विपुल-नयना, कमलमुखी कमलगर्भ-समगौरी,
कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम्. ॥१॥

## (४३) भवनदेवता की स्तुति

भवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०
ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानाम्;
विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम्. ॥१॥

## (४४) क्षेत्रदेवता की स्तुति

यस्या: क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभि: साध्यते क्रिया;
सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्न: सुख दायिनी. ॥१॥

## (४५) अड्ढाइज्जेसु (मुनि वंदन) सूत्र

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु कम्मभूमीसु, जावंत के वि साहू, रयहरणगुच्छ-पडिग्गहधारा, पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्स- सीलंगधारा, अक्खुयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि.॥१॥

## (४६) वरकनक (१७० जिन) स्तुति

वरकनक शंख विद्रुम, मरकत घनसन्निभं विगतमोहम्;
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामर पूजितं वन्दे. ॥१॥

## (४७) लघु शान्ति (श्री शान्तिनाथ) स्तोत्र

शान्तिं शान्ति निशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य;
स्तोतु: शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदै: शान्तये स्तौमि. ॥१॥

ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्;
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्. ॥२॥

सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय;
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नम: शान्तिदेवाय. ॥३॥

सर्वामरसुसमूह-स्वामिकसंपूजिताय न(नि)जिताय;
भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै. ॥४॥

सर्व दुरितौघनाशन कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय;
दुष्टग्रहभूतपिशाच शाकिनीनां प्रमथनाय. ॥५॥

यस्येति नाममंत्र प्रधानवाक्योपयोग कृततोषा;
विजया कुरुते जनहित मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥६॥

भवतु नमस्ते भगवति! विजये सुजये परापरैरजिते!
अपराजिते! जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति! ॥७॥

सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याण मंगलप्रददे;
साधूनां च सदा शिव सुतुष्टि पुष्टिप्रदे! जीया:. ॥८॥

भव्यानां कृतसिद्धे! निर्वृतिनिर्वाणजननि! सत्त्वानाम्;
अभयप्रदाननिरते! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम्. ॥९॥

भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि!
सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानाय. ॥१०॥

जिनशासन निरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम्;
श्री-संपत्कीर्ति यशोवर्द्धनि! जयदेवि! विजयस्व. ॥११॥

सलिलानल विषविषधर दुष्टग्रह-राज-रोग-रणभयत:;
राक्षसरिपुगणमारी चौरेतिश्वापदादिभ्य:! ॥१२॥

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति;
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम्. ॥१३॥

भगवति! गुणवति! शिवशान्ति तुष्टि पुष्टि
स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्,
ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ हूँ ह्र: य: क्ष: ह्रीँ फट् फट् स्वाहा. ॥१४॥

एवं यन्नामाक्षर पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी;
कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै. ॥१५॥

इति पूर्वसूरिदर्शित मंत्रपद-विदर्भितः स्तवः शान्तेः;
सलिलादि भयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम्. ॥१६॥

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा योगम्;
स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च. ॥१७॥

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः;
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे. ॥१८॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याण-कारणम्;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ॥१९॥

## (४८) चउक्कसाय सूत्र

चउक्कसाय-पडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जय-मयण-बाण-मुसुमूरणु;
सरसपियंगु-वन्नु-गय-गामिउ, जयउ पासु भुवणत्तय-सामिउ. ॥१॥

जसु तणु-कंति-कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणि-मणि-किरणालिद्धउ;
नं नवजलहर-तडिल्लय-लंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ. ॥२॥

## (४९) भरहेसरनी सजझाय

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ, ढंढणकुमारो;
सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ. ॥१॥

मेअज्ज, थूलभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सिंहगिरी;
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू. ॥२॥

हल्ल, विहल्ल, सुदंसण, साल, महासाल, सालिभद्दो अ;
भद्दो, दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो. ॥३॥

जंबुपहु, वंकचूलो, गयसुकुमालो, अवंतिसुकुमालो;
धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी. ॥४॥

अज्जगिरी, अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी, उदायगो, मणगो;
कालयसूरी, संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ. ॥५॥

पभवो, विण्हुकुमारो, अद्दकुमारो, दढप्पहारी अ;
सिज्जंस कूरगडू अ, सिज्जं-भव मेहकुमारो अ. ॥६॥

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता;
जेसिं नामग्गहणे, पावप्पबंधा विलयंजंति. ॥७॥

सुलसा, चंदनबाला, मणोरमा, मयणरेहा, दमयंती;
नमयासुंदरी, सीया, नंदा, भद्दा, सुभद्दा य. ॥८॥

राइमई, रिसिदत्ता, पउमावइ, अंजणा, सिरीदेवी;
जिट्ठ, सुजिट्ठ, मिगावइ, पभावई, चिल्लणादेवी. ॥९॥

बंभी, सुंदरी, रुप्पिणी, रेवइ, कुंती, सिवा, जयंती य;
देवइ, दोवइ, धारणी, कलावइ पुप्फचूला य. ॥१०॥

पउमावई अ गोरी, गंधारी, लक्खमणा, सुसीमा य;
जंबूवई, सच्चभामा, रुप्पिणी, कण्हट्ठ महिसीओ. ॥११॥

जक्खा य जक्खदिन्ना भूआ तह चेव भूअदिन्ना य;
सेणा, वेणा, रेणा, भइणीओ थूलभद्दस्स. ॥१२॥

इच्चाइ महासइओ, जयंति अकलंक-सील-कलिआओ;
अज्ज वि वज्जइ जासिं, जस-पडहो तिहुअणे सयले. ॥१३॥

## (५०) मन्हजिणाणं (श्रावक के कृत्यो)की सजझाय

मन्ह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह, धरह सम्मत्तं;
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ (उजजुत्ता होह) पइदिवसं. ॥१॥

पव्वेसु पोसहवयं, दाणं, सीलं, तवो अ भावो अ;
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ. ॥२॥

जिणपूआ, जिणथुणणं, गुरुथुअ, साहम्मिआण वच्छल्लं;
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता, तित्थजत्ता य. ॥३॥

उवसम विवेग संवर, भासासमिइ, छजीवकरुणा य;
धम्मिअ-जण-संसग्गो, करण-दमो चरण-परिणामो. ॥४॥

संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे;
सड्ढाणकिच्च-मेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं. ॥५॥

## (५१) सकलतीर्थ वंदना

सकलतीर्थ वंदुं करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड;
पहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदिश. ॥१॥

बीजे लाख अट्ठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां;
चोथे स्वर्गे अडलख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार. ॥२॥

छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीश सहस प्रासाद;
आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमे वंदुं शत चार. ॥३॥

अग्यार बारमे त्रणसें सार, नवग्रैवेयके त्रणसें अढार;
पांच अनुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिकां वळी. ॥४॥

सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार, जिनवर भवनतणो अधिकार;
लांबा सो जोजन विस्तार, पचास ऊंचा बहोंत्तेर धार. ॥५॥

एकसो एंशी बिंब प्रमाण, सभासहित एक चैत्ये जाण;
सो कोड बावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौंआल. ॥६॥

सातसें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रण काल;
सात कोड ने बहोंतेर लाख, भवनपतिमां देवल भाख. ॥७॥

एकसो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण;
तेरसें कोड नेव्याशी कोड, साठ लाख वंदुं कर जोड. ॥८॥

बत्रीसें ने ओगणसाठ, तिर्च्छा लोकमां चैत्यनो पाठ;
त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीस ते बिंब जुहार. ॥९॥

व्यंतर जयोतिषीमां वळी जेह, शाश्वता जिन वंदुं तेह;
ऋषभ चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान नामे गुणसेण. ॥१०॥

समेतशिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदुं चोवीश;
विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार. ॥११॥

शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार;
अंतरिक्ख वरकाणो पास, जीराउलो ने थंभण पास. ॥१२॥

गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवरचैत्य नमुं गुणगेह;
विहरमान वंदुं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदिश. ॥१३॥

अढीद्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार;
पंच महाव्रत समिति सार, पाळे पळावे पंचाचार. ॥१४॥

बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदु गुणमणिमाल;
नित नित ऊठी कीर्ति करुं, "जीव" कहे भवसायर तरुं. ॥१५॥

## इरियावहिया सूत्र (लधु प्रतिक्रमण सूत्र) का अर्थ

**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि?, इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥**

स्वेच्छा से आज्ञा दीजिये हे भगवंत! मार्ग में चलते जो विराधना का पाप मुझ से हुआ हो, उससे मैं वापस मुडुं? (गुरू भ कहे-वापस मुडो) तब शिष्य कहे, आपकी आज्ञा प्रमाण हैं। मुझसे जो पाप हुआ हो, उससे वापस मुडना चाहता हूँ।१

**इरियावहियाए, विराहणाए ॥२॥**

आने-जाने के मार्ग में हुई जीव-विराधना(पापयुक्त क्रिया) २ जैसे

**गमणागमणे ॥३॥**

**पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसाउत्तिंग-पणगदग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे ॥४॥**

एक स्थानसे दूसरे स्थान आने-जाने में (दो,तीन, चार इन्द्रिय वाले) जीवोको पैर के नीचे कुचलने से, धान्य के बीजों को, हरी वनस्पति को दबाने से, ओस की बूंद को, चीटियों के बिल को, पाँच वर्णवाली लीली काई को, कच्चे पानी से भीगी मिट्टी को, मकडी के जाल को पैंर के नीचे कुचलने से। ४

**जे मे जीवा विराहिया ॥५॥**

जिस किसी जीवों की मुझ से विराधना हुई हो। ५

**एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया ॥६॥**

एक इन्दिय वाले, दो इन्द्रिय वाले, तीन इन्द्रिय वाले, चार इन्द्रिय वाले, पाँच इन्द्रिय वाले जीवों को। ६

**अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥७॥**

आते-जाते पाँव से चोट पहुँचाई हो, धूल से ढके हो, जमीन के साथ मसले हो, परस्पर एक-दूसरे के शरीर से टकराये हो, थोडा सा स्पर्श कराया हो, दुःख उत्पादन करवाया हो, खेद पहुँचाया हो, अतिशय त्रास पहोंचाया हो, एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखे हो, प्राण रहित याने मार दिये हो (ऐसे) मेरे ये सब दुष्कृत निरर्थक (निष्फल) मिथ्या हों।

## तस्स उत्तरी सूत्र (उत्तरीकरण सूत्र)का अर्थ

**तस्स उत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥१॥**

इरियावहिया सूत्रमें बताऐ हुऐ पापों की आलोचना करने के लिये, विशेष शुद्धि करने के लिये, आत्मा को शल्यरहित करने के लिये, पाप कर्मो का नाश-करने के लिये मैं कायोत्सर्ग करना चाहता हुँ॥१॥

## श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

शान्ति जिनेश्वर सोळमा, अचिरासुत वंदो;
विश्वसेन कुल नभोमणि, भविजन सुख कंदो. १

मृगलंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण;
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण. २

चालीश धनुषनी देहडी, समचउरस संठाण;
वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण. ३

## श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

शान्ति जिनेश्वर साचो साहिब, शान्तिकरण इन कलि में हो जिनजी० १
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पलपल में हो० २
भवमां भमतां में दरिशन पायो, आशा पूरो एक पल में हो० ३
निर्मलज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादल में हो० ४
मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जल में हो० ५
जिनरंग कहे प्रभु शान्ति जिनेश्वर, दीठोजी देव सकल में हो० ६

## श्री शान्तिनाथ भगवान की थोय

शान्ति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे,
सुमित्रने घेर पारणुं, भवपार उतारे;
विचरंता अवनीतले, तप उग्र विहारे,
ज्ञान ध्यान एकतानथी, तिर्यंचने तारे. १

पास वीर वासुपूज्यजी, नेम मल्लिकुमारी,
राज्यविहुणा ए थया, आपे व्रतधारी;
शान्तिनाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी,
मल्ली नेम परण्या नहि, बीजा घरबारी. २

कनक कमल पगलां ठवे, जग शान्ति करीजे,
रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे;
योगावंचक प्राणीया, फल लेतां रीझे,
पुष्करावर्तना मेघमां, मगशेल न भींजे. ३

क्रोडवदन शूकरारूढो, श्याम रूपे चार,
हाथ बीजोरूं कमल छे, दक्षिण कर सार;
जक्ष गरूड वाम पाणिए नकुलाक्ष वखाणे,
निर्वाणीनी वात तो, कवि वीर ते जाणे. ४

## मान की सजझाय

रे जीव! मान न कीजीए, माने विनय न आवे रे;
विनय विना विद्या नहीं; तो किम समकित पावे रे? रे० १

समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे;
मुक्तिना सुख छे शाश्वतां, ते केम लहीए जुक्ति रे. रे० २

विनय वडो संसारमां, गुणमांहे अधिकारी रे;
माने गुण जाये गळी, प्राणी जोजो विचारी रे. रे० ३

मान कर्युं जो रावणे, ते तो रामे मार्यो रे;
दुर्योधन गरवे करी, अंते सवि हार्यो रे. रे० ४

सूका लाकडा सारिखो, दु:खदायी ए खोटो रे;
उदयरत्न कहे मानने, देजो देशवटो रे. रे० ५

## श्री रत्नाकर पच्चीसी

आयुष्य घटतुं जाय तो पण पाप बुद्धि नव घटे,
आशा जीवननी जाय पण विषयाभिलाषा नव मटे;
औषध विषे करूं यत्न पण हुं धर्मने तो नव गणुं,
बनी मोहमां मस्तान हुं पाया विनाना घर चणुं. १६

आत्मा नथी परभव नथी, वळी पुण्य पाप कशुं नथी,
मिथ्यात्वनी कटु वाणी में, धरी कान पीधी स्वादथी;
रवि सम हता ज्ञाने करी, प्रभु आपश्री तो पण अरे!
दीवो लइ कूवे पड्यो, धिक्कार छे मुजने खरे. १७

में चित्तथी नहि देवनी के पात्रनी पूजा चही,
ने श्रावको के साधुओनो, धर्म पण पाळ्यो नहि;
पाम्यो प्रभु नरभव छतां, रणमां रड्या जेवुं थयुं,
धोबीतणा कुत्ता समुं, मम जीवन सहु एळे गयुं. १८

हुं कामधेनु कल्पतरु चिंतामणिना प्यारमां,
खोटा छतां झंख्यो घणुं, बनी लुब्ध आ संसारमां;
जे प्रगट सुख देनार ताहरो धर्म ते सेव्यो नहि,
मुज मूर्ख भावोने निहाळी नाथ! कर करुणा कांइ. १९

में भोग सारा चिंतव्या ते रोग सम चिंत्या नहि,
आगमन इच्छ्युं धन तणुं पण मृत्युने पीछ्युं नहि;
नहि चिंतव्युं में नर्क कारागृह समी छे नारीओ,
मधुबिंदुनी आशा महीं भयमात्र हुं भूली गयो. २०

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.४१. विहरमान तीर्थंकर यानि क्या ? वह कितने है ? कहाँ विचरते है ?

उ. विहरमान तीर्थंकर यानि वर्तमान में विचरते हुए तीर्थंकर वे बीस है । वे महाविदेह क्षेत्र में विचरण कर रहे है ।

प्र.४२. संघ यानि क्या ? वे कितने प्रकार के है ? और कहाँ-कहाँ है ?

उ. संघ यानि जिनेश्वर भगवान की आज्ञा माननेवाले और पालन करने वालो का समूह, वे चार प्रकार के है – १. साधु भगवंत, २. साध्वीजी भगवंत, ३. श्रावक, ४. श्राविका ।

प्र.४३. क्षेत्र यानि क्या ? और वे कितने है ? उनके नाम दो ?

उ. क्षेत्र याने जहाँ धन-धान्य-वस्त्र-पात्र वगेरेह उपयोग करने से बहुत लाभ मिलता है ऐसे उत्तम स्थान, जो सात है –

१. जिनमंदिर, २. जिनप्रतिमा, ३. जिनागम, ४. साधु भगवंत, ५. साध्वीजी भगवंत, ६. श्रावक, ७. श्राविका ।

प्र.४४. शियल (ब्रह्मचर्य) व्रत की नव-वाड कौनसी है ?

उ. १. स्त्री-पशु-नपुंसक न रहते हो ऐसे स्थान में रहना ।

२. स्त्री के साथ राग से बात न करना ।

३. स्त्री जिस आसनपर बैठी हों उस आसन पर पुरुष के दो घडी तक बैठना नहीं और पुरुष बैठे हो उस आसनपर स्त्रियों को (तीन) प्रहर तक नहीं बैठना ।

४. स्त्री के आंगोपांग राग से देखना नहीं ।

५. जहाँ स्त्री-पुरुष सोये हो अथवा कामक्रीडा की बाते करते हो वहाँ एक दिवाल के अंतर से रहना नहीं ।

६. स्त्री के साथ पहले भोगे हुए भोग याद करना नहीं ।

७. विकार उत्पन्न करें एसे घी, दुध इत्यादि रसवाले आहार नही करना ।

८. भुख शांत हो जाये उससे ज्यादा और भारी आहार नहीं करना ।

९. शरीर को सजाना नहीं ।

प्र.४५. श्री महावीर प्रभु का संक्षिप्त में जीवनचारित्र्य लिखो ।

उ. श्री महावीर प्रभु का जन्म क्षत्रियकुंड नगर मे हुआ था । उनके पिता का नाम सिद्धार्थ राजा और माता का नाम त्रिशलादेवी था । उनके भाई का नाम नंदीवर्धन, बहेन का नाम सुदर्शना, पत्नि का नाम यशोदा, पुत्री का नाम प्रियदर्शना और जमाई का नाम जमाली था । ३० वर्ष की वय में उन्होंने दीक्षा (चारित्र) ली थी । चारित्र लेने के बाद उन्हें साडे बार वर्ष बाद केवलज्ञान हुआ । उसके बाद चतुर्विध संघ की स्थापना की, वे ३० वर्ष तक भरतक्षेत्र में विचरते रहे, धर्म के उपदेश देते रहे । ७२ साल का आयुष्य पूर्ण कर विक्रम संवत से ४७० वर्ष पहेले दिवाली की रात्री को मोक्ष गये।

प्र.४६. चोबीसवें भगवान का नाम माता-पिता ने वर्धमान और देवताओने महावीर क्यों रखा ?

उ. श्री महावीर प्रभु के माता के गर्भ में आने के बाद धन, धान्य, संपत्ति, आदि बढने लगी. सारे राजा आज्ञा में रहने लगे। प्रभु के गर्भ का ऐसा प्रभाव देख माता-पिताने प्रभु का नाम वर्धमान रखा। एवं बचपन में आंबली-पिपली खेल में देवताको मुट्ठीसे मारकर हराया था। इससे देवताओने उनका नाम महावीर रखा।

प्र.४७. निसिहि यानि क्या ? वे कितनी है ? वे कब-कब बोली जाती है ? और क्यों ?

उ. निसिहि यानि सावद्य क्रियाओं का त्याग करना, वे तीन है –

१. देरासर के मुख्य द्वार पर पहोंचते ही.. इस निसिही से घर संबंधी कार्यों का त्याग होता है ।

२. मंदिरजी के मुख्य गभारे के सामने – दूसरी निसिही से मंदिर संबंधी कार्यों का त्याग होता है ।

३. चैत्यवंदन करने से पहले – तीसरी निसीहि से द्रव्यपूजा का त्याग होता है ।

प्र.४८. आरति और मंगलदीवा क्यों उतारना ?

उ. आरति उतारने से शरीर की और मन की पीडा दूर होती है, और मनको शांती मिलती है । मंगलदीवा उतारने से अपना मंगल होता है और सुख प्राप्त होता है ।

प्र.४९. आरति और मंगलदीवा कैसे उतारना ?

उ. आरति को बांयी तरफ से ऊँची ले जाकर दांई तरफ से नीचे उतारना एवं नाभि से ऊपर और ललाट से नीचे ही रहनी चाहिए । विपरीत रीति से उतारने पर आशातना होती है ।

प्र.५०. आवश्यक यानि क्या ? वे कितने है ? और कौन से है ?

उ. आवश्यक यानि अवश्य करने योग्य करणी, वे छः है – १. सामायिक, २. चउवीसत्थो, ३. वांदणा, ४. पडिक्कमणु, ५. काउस्सग्ग, ६. पच्चक्खाण ।

● ● ●

# मौखिक कक्षा ५

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | सकलार्हत्, स्नातस्या, संतिकरम् | ३० |
| **अर्थ** | : | अन्नत्थ (१६ आगार + १९ दोष के साथ) | २० |
| **काव्य** | : | दुहा : अनंत चउवीसी जिन नमुं | |
| | | चैत्यवंदन : श्री सीमंधर जगधणी | २५ |
| | | स्तवन : सुणो चंदाजी... | |
| | | थोय : सीमंधर जीनवर.. १ गाथा, | |
| | | आदि जीनवर राया... १ गाथा | |
| | | सज्झाय : समकितनुं मूळ... (मायानी) | |
| | | स्तुति : रत्नाकर पच्चीसी २१ से २५ | १० |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी :** ५१ से ६० | | | १५ |
| | | | १०० |

## (५२) श्री सकलार्हत् स्तोत्र

सकलार्हत्प्रतिष्ठान-मधिष्ठानं शिवश्रिय:,
भूर्भुव:स्वस्त्रयीशान-मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥

नामाकृतिद्रव्यभावै: पुनतस्त्रिजगज्जनम्,
क्षेत्रे काले च सर्वस्मिन्नर्हत: समुपास्महे ॥२॥

आदिमं पृथिवीनाथ-मादिमं निष्परिग्रहम्,
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुम: ॥३॥

अर्हन्तमजितं विश्व-कमलाकर-भास्करं,
अम्लान-केवलादर्श-संक्रांतजगतं स्तुवे ॥४॥

विश्वभव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंति ता:,
देशनासमये वाच:, श्री संभव-जगत्पते: ॥५॥

अनेकांतमतांभोधि, समुल्लासनचंद्रमा:,
दद्यादमंदमानंदं, भगवानभिनंदन: ॥६॥

द्युसत्किरीटशाणाग्रो-त्तेजितांघ्रिनखावलि:,
भगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानिव: ॥७॥

पद्मप्रभप्रभोर्देह-भास: पुष्णंतु व: श्रियम्,
अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणा: ॥८॥

श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांघ्रये,
नमश्चतुर्वर्णसंघ-गगनाभोग भास्वते ॥९॥

चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्र मरीचिनिचयोज्ज्वला,
मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु व: ॥१०॥

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया,
अचिंत्यमाहात्म्यनिधि:, सुविधिर्बोधयेऽस्तु व: ॥११॥

सत्त्वानां परमानंद कंदोद्भेदनवांबुद:,
स्याद्वादामृतनि:स्यंदी, शीतल: पातु वो जिन: ॥१२॥

भवरोगार्त्तजंतूना मगदंकारदर्शन:,
नि:श्रेयसश्रीरमण: श्रेयांस: श्रेयसेऽस्तुव: ॥१३॥

विश्वोपकारकीभूत तीर्थकृत्कर्मनिर्मिति:,
सुरासुरनरै: पूज्यो, वासुपूज्य: पुनातु व: ॥१४॥

विमलस्वामिनो वाच:, कतकक्षोदसोदरा:,
जयंति त्रिजगच्चेतो जलनैर्मल्यहेतव: ॥१५॥

स्वयंभूरमणस्पर्द्धी, करुणारसवारिणा,
अनंतजिदनंतां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥१६॥

कल्पद्रुमसधर्माण-मिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम्,
चतुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥१७॥

सुधासोदरवाग्जयोत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः,
मृगलक्ष्मातमःशांत्यै, शान्ति नाथजिनोऽस्तु वः ॥१८॥

श्री कुंथुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः,
सुरासुरनृनाथानामेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥१९॥

अरनाथस्तु भगवांश्चतुर्थारनभोरविः,
चतुर्थपुरुषार्थश्री विलासंवितनोतु वः ॥२०॥

सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदम्,
कर्मद्रुन्मूलने हस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥२१॥

जगन्महामोहानिद्रा प्रत्यूषसमयोपमम्,
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥२२॥

लुठंतो नमतां मूर्ध्नि निर्मलीकारकारणम्,
वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पाद नखांशवः ॥२३॥

यदुवंश समुद्रेन्दुः, कर्मकक्ष हुताशनः,
अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥२४॥

कमठे-धरणेंद्रे च, स्वोचितं-कर्म कुर्वति,
प्रभुस्तुल्य-मनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥२५॥

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया,
महानंदसरोराज मरालायाऽर्हते नमः ॥२६॥

कृतापराधेऽपि जने, कृपामंथरतारयोः,
ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥

ज्ञानी श्वासोश्वास द्वारा कठिन कर्मों को नष्ट करते हैं.

जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्रीमान्,
विमलस्त्रासविरहितस्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥२८॥

वीरः सर्वसुरासुरेंद्र महितो वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः,

वीरात्तीर्थमिदं-प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री धृतिकीर्तिकांतिनिचयः श्री वीर! भद्रंदिश ॥२९॥

अवनितल गतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां,
वरभवन गतानां दिव्य वैमानिकानाम्,
इह मनुज कृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवरभवनानां भावतोऽहं नमामि ॥३०॥

सर्वेषांवेधसामाद्य मादिमं परमेष्ठिनाम्,
देवाधिदेवं सर्वज्ञं, श्री वीरं प्रणिदध्महे ॥३१॥

देवोऽनेकभवार्जितोर्जितमहा पापप्रदीपानलो,
देवः सिद्धिवधू विशालहृदयाऽलंकारहारोपमः,
देवोऽष्टादशदोषसिंधुरघटा निर्भेदपंचाननो,
भव्यानां विदधातु वांछितफलं, श्री वीतरागो जिनः ॥३२॥

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयो मंडपः,
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्री चित्रकूटादय,
स्तत्र श्री ऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥३३॥

## (५३) स्नातस्या स्तुति

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोः शैशवे,
रूपालोकनविस्मयाहृतरस भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा,
उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति श्री वर्धमानो जिनः ॥१॥

हंसांसाहत-पद्मरेणुकपिश क्षीरार्णवांभोभृतै:,
कुंभैरप्सरसां पयोधरभर-प्रस्पर्द्धिभि: कांचनै:,
येषां मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेक: कृत:,
सर्वै: सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं,
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भि:,
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं,
भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥३॥

निष्पंकव्योमनील द्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं,
मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात्,
आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामद: कामरूपी,
यक्ष: सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिम् ॥४॥

## संतिकरं स्मरणम्

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं,
समरामि भत्तपालग, निव्वाणी गरुडकयसेवं ॥१॥

ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणंसंतिसामिपायाणं,
झ्रौँ स्वाहामंतेणं, सव्वासिव दुरिअ-हरणाणं ॥२॥

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ लद्धि पत्ताणं,
सौँ ह्रीँ नमो सव्वोसहि पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥

वाणी तिहुअण सामिणि, सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा,
गह दिसिपाल सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥

रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया,
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥

गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा,
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिया उ देवीओ ॥६॥

जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो,
मायंग विजय अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥

छम्मुह पयाल किन्नर, गरूडो गंधव्व तहय जक्खिंदो।
कुबेर (कूबर) वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगा ॥८॥

देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि काली महाकाली,
अच्चुअ संता जाला सुतारयासोय सिरिवच्छा ॥९॥

चंडाविजयंकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी,
वइरुट्टछुत्त गंधारी, अंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥

इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेवि सुरासुरी य चउहावि,
वंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥

एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिओ संघस्स संति जिणचंदो,
मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअ महिमा ॥१२॥

इअ संतिनाह सम्मदिट्ठि, रक्खं सरइ तिकालं जो,
सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥१३॥

## अन्नत्थ सूत्र का अर्थ

**अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाईएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलीए, पित्त मुच्छाए॥१॥**

जिन आगारों का वर्णन कर रहा हुँ उनके सिवाय दूसरे किसी भी कारण से मैं इस कायोत्सर्गका भंग नही करूँगा। आगारो के नाम-श्वास लेने से, श्वास छोडने से, खांसी आने से, छींक आने से, जम्हाई आने से, डकार आने से, अधो वायु निकलने से, चक्कर आने से, पित्त विकार के प्रकोप से। १

**सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं ॥२॥**

सूक्ष्म शरीर संचार होने से, सूक्ष्म रीति से शरीर में कफ तथा वायु का संचार होने से, सूक्ष्म दृष्टि संचार होने से। २

**एवमाईएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुजज मे काउस्सग्गो ॥३॥**

इत्यादि आगारों और दूसरे आगारों के सिवाय मेरा कायोत्सर्ग अखंडित और अविराधित हो। ३

**जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥**

जब तक अरिहंत भगवंतों को नमस्कार करने के द्वारा पूर्ण न करूँ।४

**ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥**

तब तक अपनी काया को स्थान पूर्वक, मौन पूर्वक(और) ध्यान पूर्वक त्याग करता हूँ॥५॥

## काउस्सग्ग के १६ आगार का स्वरूप

अन्नत्थयाई बारस, आगारा एवमाईया चउरो,
अगणी पणिंदि छिंदण बोहि खोभाई डक्को य. (भा. गा. ५५)

अन्नत्थ उससिएणं वगेरे १२ आगार (१) उंचा श्वास लेने से, (२) श्वास छोडने से, (३) खांसी आने से, (४) छींक आने से, (५) जम्हाई आने से, (६) डकार आने से, (७) अधो वायु निकलने से, (८) चक्कर आने से, (९) पित्त विकार कें कारण मूर्च्छा आने से, (१०) सूक्ष्म अंग संचालन से, (११) सूक्ष्म रूप से कफ और वायु के संचालन से, (१२) सूक्ष्म रूप से दृष्टि के संचालन से।

(१) अग्नि (२) सम्मुख होता हुआ पंचेन्द्रिय वध (३) चोर अथवा राजा के कारण (४) सर्प दंश के भय से, ये १६ आगार है।

## काउस्सग्ग के १९ दोष

घोडग लय खंभाई, मालुद्धी निअल सबरि खलिण वहू,
लंबुत्तर थण संजई, भमुहंगुलि वायस कविट्ठो. (भा.गा. ५६)

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चईज्ज दोस उस्सग्गे,
लंबुत्तर थण संजई, न दोस समणीण सवहु सड्ढीणं. (भा.गा. ५७)

(१) घोटक (२) लता (३) स्तंभादि (४) माल (५) उद्धि (६) निगड (७) शबरी (८) खलिण (९) वधू (१०) लंबुत्तर (११) स्तन (१२) संयति (१३) भमुहंगुलि (१४) वायस (१५) कपित्थ (१६) शिर:कंप (१७) मूक (१८) मदिरा दोष (१९) प्रेक्षादोष (इन १९ दोषोका कायोत्सर्गमें त्याग करना चाहिए। साध्वीजी भगवंत को लंबुत्तर दोष, स्तन दोष और संयति दोष के अतिरिक्त १६ दोष और श्राविका को वधु दोष रहित १५ दोष लगते हैं।)

## दोहे

अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिद्ध अनंती क्रोड;
केवळनाणी मुगते गया, वंदु बे कर जोड १

बे कोडी केवळधरा, विहरमान जिन वीश;
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निशदिश २

जे चारित्रे निर्मळा, जे पंचानन सिंह;
विषय कषाय नागं जीआ, ते प्रणमुं निशदिश ३

## श्री सीमंधरस्वामी का चैत्यवंदन

श्री सीमंधर! जगधणी! आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो. १

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ;
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ. २

सयल संग छंडी करी, चारित्र लइशुं;.
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं. ३

ए अळजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव;
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव. ४

कर जोडीने विनवु, सामो रही इशान;
भाव जिनेश्वर भाणने, देजो समकित दान. ५

## श्री सीमंधरस्वामी का स्तवन

सुणो चंदाजी! सीमंधर परमातम पासे जावजो,
मुज विनतडी, प्रेम धरीने, एणी पेरे तुमे संभळावजो.
जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ इन्द्र पायक छे;
नाण दरिसण जेहने क्षायक छे. सुणो० १

जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे;
पुंडरिगिणी नगरीनो राया छे.सुणो० २

बार पर्षदामांही बिराजे छे, जस चोत्रीस अतिशय छाजे छे;
गुण पांत्रीश वाणीए गाजे छे. सुणो० ३

भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतळगुण सोहे छे;
रूप देखी भविजन मोहे छे. सुणो० ४

तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसियो छुं;
महा मोहराय कर फसियो छुं. सुणो० ५

पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहीओ छे;
तो कांईक मुजथी डरियो छे. सुणो० ६

जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो;
तो वाधे मुज मन अति नूरो. सुणो० ७

पच्चक्खाण अर्थात् पापरूपी शत्रुओं के प्रहार को रोकनेवाला महायोद्धा.

## श्री सीमंधरस्वामी की थोय

श्रीसीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भावधरी करुं सेव,
सकलागम पारग, गणधर भाषित वाणी,
जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी. १

## श्री आदेश्वर भगवान की थोय

आदिजिनवर राया जास सोवन्न काया,
मरूदेवी माया धोरी लंछन पाया,
जगतस्थिति निपाया शुद्धचारित्र पाया,
केवलसिरिराया मोक्षनगरे सिधाया. १

## समकित की सज्झाय

समकितनुं मूळ जाणीएजी, सत्य वचन साक्षात्;
साचामां समकित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे,
प्राणी! म करीश माया लगार. १

मुख मीठो जूठो मने जी, कूड कपटनो रे कोट;
जीभे तो जीजी करे जी, चित्तमां ताके चोट रे. प्रा० २

आप गरजे आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास;
मनशुं राखे आंतरो जी; ए मायानो पास रे. प्रा० ३

जेहशुं बांधे प्रीतडीजी, तेह शुं रहे प्रतिकूळ;
मेल न छंडे मन तणो जी, ए मायानु मूळ रे. प्रा० ४

तप कीधो माया करी जी, मित्रशुं राख्यो रे भेद;
मल्लि जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्रीवेद रे. प्रा० ५

उदयरत्न कहे सांभळो जी, मूको मायानी बुद्ध;
मुक्तिपुरी जावा तणो जी, ए मारग छे शुद्ध रे. प्रा० ६

## श्री रत्नाकर पच्चीसी

हुं शुद्ध आचारो वडे, साधु हृदयमां नव रह्यो,
करी काम पर उपकारनां, यश पण उपार्जन नव कर्या;
वळी तीर्थना उद्धार आदि, कोइ कार्यो नव कर्यां,
फोगट अरे आ लक्ष, चोराशी तणा फेरा फर्या. २१

गुरुवाणीमां वैराग्य केरो, रंग लाग्यो नहि अने,
दुर्जन तणा वाक्यो महीं, शांति मळे क्यांथी मने;
तरुं केम हुं संसार आ, अध्यात्म तो छे नहि जरी,
तुटेल तळीयानो घडो, जळथी भराये केम करी? २२

में परभवे नथी पुन्य कीधुं, ने नथी करतो हजी,
तो आवता भवमां कहो, क्यांथी थशे हे नाथजी;
भूत भावी ने सांप्रत त्रणे, भव नाथ! हुं हारी गयो,
स्वामी! त्रिशंकु जेम हुं, आकाशमां लटकी रह्यो. २३

अथवा नकामुं आप पासे, नाथ शुं बकवुं घणुं?
हे देवताना पूज्य! आ, चारित्र मुज पोता तणुं;
जाणो स्वरूप त्रण लोकनुं, तो म्हारूं शुं मात्र आ,
जयां क्रोडनो हिसाब नहि त्यां, पाइनी तो वात क्यां? २४

ताराथी न समर्थ अन्य दीननो, उद्धारनारो प्रभु!
म्हाराथी नहि अन्य पात्र जगमां, जोतां जडे हे विभु;
मुक्ति मंगळ स्थान तोय मुजने, इच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने, तो तृप्ति थाये घणी. २५

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.५१. छःह आवश्यक का अर्थ समझाओ. प्रतिक्रमण में वे कहाँसे कहाँ तक गिने जाते है ?

उ. (१) सामायिक : जिससे समता का लाभ होता है वह पहला आवश्यक। वह देवसि प्रतिक्रमण ठाणे के बाद "करेमि भंते" से लेकर पंचाचार की आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करते है वहाँ तक गिना जाता है ।

(२) चउवीसत्थो-लोगस्स : जिसमें चौबीस भगवानों के नामों का स्मरण होता है वह दूसरा आवश्यक। पंचाचार के आठ गाथाओं का काउस्सग्ग करने के बाद लोगस्स बोलते है उसे गिना जाता है ।

(३) वांदणा : जिसमें गुरुमहाराज को वंदन किया जाता है वह तीसरा आवश्यक है, तीसरे आवश्यक की मुहपत्ती पडिलेहण के बाद वांदणा दिये जाते है ।

(४) प्रतिक्रमण : जिसमें लगे हुए पापों का प्रायश्चित कर माफी मांगी जाती है वह चौथा आवश्यक है । "इच्छा० देवसिअं आलोउ" से 'आयरिय उवज्जाए' तक गिना जाता है ।

(५) काउसग्ग : मन-वचन एवं काया की एकाग्रता होती है वह पांचवा आवश्यक है । वह 'आयरिय उवज्झाय' के बाद जो दो लोगस्स और एक लोगस्स का काउस्सग्ग करते है उन्हें इस आवश्यक में गिना जाता है ।

(६) पच्चक्खाण : अविरति का त्याग जिसमें किया जाता है एसा पच्चक्खाण छठ्ठे आवश्यक मे है ।

प्र.५२. व्यसन यानि क्या ? वह कितने है और कौन कौन से ?

उ. व्यसन यानि जीवको इस भव और परभव में दुःख देनेवाली भयंकर बुरी आदतें । वे सात है ।

(१) जुआ खेलना, (२) मांसाहार करना, (३) शराब पिना, (४) परस्त्री का संग करना, (५) वेश्या का संग करना, (६) चोरी करना, (७) शिकार करना ।

प्र.५३. स्वस्तिक क्यों निकालना चाहिये ?

उ. चार गति का नाश करने के लिए स्वस्तिक करना चाहिऐ ।

प्र.५४. गतियाँ कितनी है ? कौन कौनसी है ?

उ. गति चार है । (१) देवगति (२) मनुष्यगति (३) तिर्यंचगति (४) नरकगति ।

प्र.५५. स्वस्तिक के उपरकी तीन ढगलियाँ किसका प्रतिक है ?

उ. रत्नत्रयी का प्रतीक है ।

प्र.५६. रत्नत्रयी के नाम बताओ ?

उ. (१) सम्यग्ज्ञान (२) सम्यग्दर्शन (३) सम्यग्चारित्र ।

प्र.५७. स्वस्तिक के उपर तीन ढगलियाँ और उसके उपर अर्धचंद्र अंकित करते है वह क्या कहलाता है ?

उ. उसे सिद्धशिला कहते है ।

प्र.५८. स्वस्तिक करने के बाद क्या बोलना चाहिये ?

उ. हे प्रभु ! चार गतियों में से छुटने के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना कर सिद्धशिला पर पहुँचने के लिये समर्थ बनाना ।

प्र.५९. श्री महावीर प्रभु के अन्य नाम बताओ ?

उ. वीर, वर्धमान, चरमजिन, सिद्धार्थ नंदन, ज्ञातपुत्र आदि ।

प्र.६०. गुरुमहाराज के अन्य नाम बताओ ?

उ. साधु, मुनि, श्रमण, निर्ग्रंथ, अणगार, तपस्वी, संयमी आदि ।

● ● ●

# मौखिक कक्षा ६

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | अजितशान्ति, बडी शान्ति | २५ |
| **अर्थ** | : | लोगस्स सूत्र | २० |
| **काव्य** | : | दोहा : श्री सिद्धाचल के नव | २५ |
| | | चैत्यवंदन : श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र | |
| | | स्तवन : विमलाचल नितु वंदीए... | |
| | | थोय : शत्रुंजय मंडण.... (४ गाथा) | |
| | | सजझाय : तमे लक्षण जो जो लोभना... | |
| **विधि** | : | देवसि प्रतिक्रमण की | १५ |
| **राजनगरनी प्रश्नोत्तरी :** ६१ थी ८० | | | १५ |
| | | | १०० |

## श्री अजितशांति स्तवन

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंत सव्वगयपावं, जय गुरु संतिगुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि. ॥१॥ (गाहा.)

ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे, निरुवम महप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे. ॥२॥ (गाहा.)

सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतीणं, सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतीणं. ॥३॥ (सिलोगो.)

अजिअजिण! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम! नामकित्तणं, तह य धिइमईप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम! संति! कित्तणं. ॥४॥ (मागहिआ.)

किरिआविहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं, अजिअस्स य संति महामुणिणो वि य संतिकरं, सययं मम निव्वुईकारणयं च नमंसणयं. ॥५॥ (आलिंगणयं)

पुरिसा! जई दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं, अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा. ॥६॥ (मागहिआ.)

अरइ रइ तिमिरविरहिअ मुवरय जरमरणं, सुरअसुर-गरुलभुयगवईपयय पणिवइअं, अजिअमहमवि अ सुनय नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे. ॥७॥ (संगययं.)

तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहिनिहिं, संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी! मम संति समाहिवरं दिसउ. ॥८॥ (सोवाणयं.)

सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थयपसत्थ विच्छिन्नसंथियं थिरसरिच्छवच्छं, मयगललीलायमाण वरगंधहत्थि पत्थाणपत्थियं संथवारिहं, हत्थिहत्थबाहुं धंतकणग रुअग निरुवहयपिंजरं, पवरलक्खणोवचिअ सोम चारुरूवं, सुइसुहमणाऽभिराम परमरमणिज्ज वरदेवदुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं. ॥९॥ (वेड्ढओ.)

अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं, पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं. ॥१०॥ (रासालुध्धओ.)

कुरुजणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं, तओ महाचक्क वट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरि पुरवरसहस्स वरनगर निगमजणवयवइ बत्तीसारायवरसहस्साऽणुयायमग्गो, चउदस वररयण नवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसी हयगयरह सयसहस्ससामी छन्नवइगामकोडि सामी आसी जो भारहम्मि भयवं.

॥११॥ (वेड्ढओ.)

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया, संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे. ॥१२॥ (रासानंदिअयं.)

ईक्खाग! विदेहनरीसर! नरवसहा! मुणिवसहा! नवसारय ससिसकलाणण! विगयतमा! विहुअरया! अजिउत्तमतेअ गुणेहिं महामुणि! अमिअबला! विउलकुला! पणमामि ते भवभयमूरण! जगसरणा! मम सरणं. ॥१३॥ (चित्तलेहा.)

देवदाणविंदचंदसुरवंद! हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम लट्ठरूव! धंतरुप्पपट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल दंत पंति संति! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर!, दित्त त्तेअ! वंद! धेय! सव्वलोअ भाविअप्पभावणेअ! पइस मे समाहिं. ॥१४॥ (नारायओ.)

विमलससि कलाइरेअसोमं, वितिमिर सूरकराइरेअतेअं, तिअसवइगणाइरेअ रूवं, धरणि धरप्पवराइरेअसारं. ॥१५॥(कुसुमलया.)

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं तव संजमे अ अजिअं एस थुणामि जिणं अजिअं. ॥१६॥ (भुअग परिरिंगिअं.)

सोमगुणेहिं पावई न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी, रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावई न तं धरणिधरवइ. ॥१७॥ (खिज्जिअयं.)

तित्थवरपवत्तयं, तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं, संतिसुहप्पवत्तयं, तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे. ॥१८॥ (ललिअयं.)

विणओणय सिररइअंजलि रिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवई नरवइ थुअमहिअच्चिअं बहुसो, अईरूग्गय सरयदिवायर समहिअसप्पभं तवसा, गयणं गणवियरण समुइअ चारणवंदिअं सिरसा. ॥१९॥ (किसलयमाला)

असुर-गरूल-परिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं, देवकोडि सयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं. ॥२०॥ (सुमुहं.)

अभयं अणहं, अरयं अरुयं, अजिअं अजिअं, पयओ पणमे.

॥२१॥ (विज्जुविलसिअं.)

आगया वरविमाण दिव्वकणग-रहतुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं, ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुंडलंगय-तिरीड-सोहं तमउलिमाला.

॥२२॥ (वेड्ढओ.)

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ-संभमपिंडिअ सुट्ठुसुविम्हिय-सव्वबलोघा, उत्तमकंचणरयण-परूवियभासुर-भूसण-भासुरि-अंगा, गाय-समोणय-भत्ति वसा-गय-पंजलि-पेसिय-सीसपणामा. ॥२३॥ (रयणमाला)

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं, पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया. ॥२४॥ (खित्तयं.)

तं महामुणिमहंपि पंजली, रागदोस-भय-मोहवजिजअं, देवदाणव-नरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तमं महातवं नमे. ॥२५॥ (खित्तयं.)

अंबरंतर-विआरणिआहिं, ललिअहंसवहु-गामिणिआहिं, पीणसोणिथण-सालिणिआहिं, सकल-कमलदल-लोअणिआहिं. ॥२६॥ (दीवयं.)

पीण-निरंतर-थणभर-विणमिय-गायलयाहिं, मणिकंचणपसिढिल मेहल-सोहिअ-सोणितडाहिं, वरखिंखिणि नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणिआहिं, रईकर-चउर मणोहर-सुंदरदंसणिआहिं. ॥२७॥ (चित्तक्खरा.)

देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डुणप्पगारएहिं केहि केहिं वि, अवंगतिलय पत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयं-गयाहिं, भत्तिसन्नि विट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो. ॥२८॥ (नारायओ.)

---

सामायिक अर्थात् मोहराजा को मारने का अस्त्र.

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं, धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि. ॥२९॥ (नंदिअयं.)

थुअ-वंदिअयस्सा रिसिगण-देवगणेहिं, तो देववहुहिं पयओ पणमिअस्सा, जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागय पिंडिअयाहिं, देववरच्छरसाबहुआहिं, सुरवर-रइगुण-पंडिअयाहिं. ॥३०॥ (भासुरयं.)

वंससद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम-सद्दमीसए कए अ, सुइसमाण-णेअ सुद्ध-सज्ज गीय-पाय-जाल-घंटिआहिं, वलय मेहला कलाव नेउराभिराम सद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं, हावभाव विब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्वसत्तसंतिकारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेसहं, नमामि संति-मुत्तमं जिणं. ॥३१॥ (नारायओ.)

छत्त चामर पडाग जुअ जव मंडिआ, झयवर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा, दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिया, सत्थिअ वसहसीह रह चक्कवरंकिया. ॥३२॥ (ललिअयं)

सहावलट्ठा, समप्पईट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा, पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा. ॥३३॥ (वाणवासिआ.)

ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया, संथुआ अजिअ संति-पायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया. ॥३४॥ (अपरांतिका.)

एवंतव-बल-विउलं, थुअंमए अजिअ-संति-जिण-जुअलं, ववगय-कम्म-रयमलं, गईं गयं सासयं विउलं. ॥३५॥ (गाहा.)

तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं, नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ प्पसायं. ॥३६॥ (गाहा.)

तं मोएउअ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं, परिसावि अ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं. ॥३७॥ (गाहा.)

पक्खिअ चाउम्मासिअ संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो, सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो. ॥३८॥

जो पढइ जो अ निसुणई, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं, न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति. ॥३९॥

जई इच्छह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे, ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह. ॥४०॥

## बडी शान्ति (बृहच्छांति) स्तोत्रम्

भो भो भव्या:! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवन-गुरो-रार्हता! भक्तिभाज:! तेषां शांतिर्भवतु भवता मर्हदादि- प्रभावा, दारोग्यश्रीधृति-मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतु:. ॥१॥

भो! भो! भव्यलोका:! इह हि भरतैरावत विदेह संभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासन प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय, सौधर्माधिपति: सुघोषाघण्टा चालनानन्तरं सकल सुरासुरेन्द्रै: सह समागत्य, सविनय-मर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे, विहितजन्माभिषेक: शान्तिमुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कृतानुकार-मिति कृत्वा, महाजनो येन गत: स पन्था:, इति भव्यजनै: सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रा-स्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा. ॥२॥

ॐ पुण्याहं पुण्याहं, प्रीयन्तां प्रीयन्तां, भगवंतोऽर्हन्त: सर्वज्ञा: सर्वदर्शिन-स्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोकपूजया-स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकरा:. ॥३॥

ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूजय विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानान्ता जिना: शान्ता: शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा. ॥४॥

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-कान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा. ॥५॥

ॐ ह्रीँ श्री धृति मति कीर्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाधन-प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत नामानो जयन्तु ते जिनेन्द्रा:. ॥६॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला वज्राङ्कुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा. ॥७॥

ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु. ॥८॥

ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिता: सलोकपाला: सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायकोपेता:, ये चान्येऽपि ग्राम नगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्ताम्, प्रीयन्ताम् अक्षीण कोश कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा. ॥९॥

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन संबन्धि बन्धुवर्ग सहिता: नित्यं चामोद प्रमोद कारिण:, अस्मिंश्च भूमण्डल आयतन निवासि साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्ग व्याधि दु:ख दुर्भिक्ष दौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु. ॥१०॥

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धिवृद्धि मांगल्योत्सवा: सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रव: पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा. ॥११॥

श्रीमते शांतिनाथाय, नम: शान्तिविधायिने,
त्रैलोकयस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये. ॥१२॥

शान्ति: शान्तिकर: श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरु:,
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहेगृहे. ॥१३॥

उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट, ग्रहगति दु:स्वप्न-दुर्निमित्तादि,
संपादित हित-संपन्नामग्रहणं जयति शान्ते:. ॥१४॥

श्री संघ जगज्जनपद राजाधिप-राजसन्निवेशानाम्,
गोष्ठिक पुरमुख्याणां, व्याहरणै-र्व्याहरेच्छान्तिम्. ॥१५॥

श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु. श्री जनपदानां शान्तिर्भवतु. श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु. श्री राजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु. श्री गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु. श्री पौरमुख्याणां शांतिर्भवतु, श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु. श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु. ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा. ॥१६॥

एषा शांति: प्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुम चन्दन कर्पूराऽगरु धूपवास कुसुमांजलि समेत: स्नात्रचतुष्किकायां श्री संघ समेत: शुचिशुचिवपु:, पुष्प वस्त्र चन्दना भरणालङ्कृत: पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति. ॥१७॥

नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि, स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके. ॥१८॥

शिवमस्तु सर्वजगत:, परहित निरता भवन्तु भूतगणा:,
दोषा: प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोक: ॥१९॥

अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी;
अम्ह सिवं, तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा. ॥२०॥

उपसर्गा: क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लय:,
मन: प्रसन्नतामेति, पूजयमाने जिनेश्वरे. ॥२१॥

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्वकल्याण-कारणम्,
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्. ॥२२॥

## लोगस्स सूत्र (नामस्तव सूत्र) अर्थ

**लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे जिणे,**
**अरिहंते कित्तईस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥**

लोक में प्रकाश करने वाले, धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले, राग-द्वेष को जितनेवाले कर्म शत्रु का नाश करनेवाले(और) त्रिलोक पूज्य ऐसे चौबीसों केवली अरिहंत भगवंतो की मैं स्तुति करता हूँ।१

**उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च,**
**पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥**

श्री ऋषभदेव स्वामी तथा अजितनाथ को वंदन करता हूँ, संभवनाथ, अभिनदंन स्वामी तथा सुमतिनाथ को, पद्मप्रभ, राग-द्वेष को जितने वाले श्री सुपार्श्वनाथ तथा चंद्रप्रभस्वमी को वंदन करता हूँ। २

**सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च,**
**विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥**

श्री सुविधिनाथ (दूसरा नाम) पुष्पदंत को, श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांस नाथ को और श्री वासुपूज्य स्वामी को, श्री विमलनाथ को, अनंतनाथ को और राग-द्वेष को जितने वाले धर्मनाथ को तथा शांतिनाथ को मैं वंदन करता हूँ। ३

**कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च,**
**वंदामि रिट्ठ नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥**

श्री कुंथुनाथ को तथा श्री अरनाथ को, मल्लिनाथ को, मुनिसुव्रतस्वामि को तथा राग-द्वेष को जितनेवाले नमिनाथ को वंदन करता हूँ। श्री अरिष्टनेमि तथा पार्श्वनाथ और वर्धमान स्वामी को मैं वंदन करता हूँ। ४

**एवं मए अभिथुआ, विहुय रय मला पहीण जर मरणा,**
**चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥**

इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये, चौवीस तीर्थंकर तथा दूसरे भी तीर्थंकर जो कर्म रूपी रज और मल से रहित है(तथा जो)वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त है(तथा जो) सामान्य केवलियों से श्रेष्ठ है ऐसे तीर्थंकर मेरे ऊपर प्रसन्न हो। ५

**कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा,**
**आरुग्ग बोहि लाभं, समाहि वरमुत्तमं दिंतु ॥६॥**

(जिनकी इन्द्रादिकने) स्तवना कि है, वंदन-पूजन किया है और जो लोक में प्रधान सिद्ध है, वे आरोग्य बोधिलाभ और उत्तम भाव समाधि प्रदान करे। ६

**चंदेसु निम्मलयरा, आईच्चेसु अहियं पयासयरा,**
**सागरवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥**

चंद्र से अधिक निर्मल, सूर्य से अधिक प्रकाशवान, स्वयंभूरमण समुद्र से अधिक गंभीर ऐसे सिद्ध भगवंत मुझे सिद्धि प्रदान करे। ७

## श्री शत्रुंजय के दोहे

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार;
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार हजार. १

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
शेत्रुंजी नदीए नाह्यो नहीं, एनो एळे गयो अवतार. २

शेत्रुंजी नदीए नाहीने, मुखबांधी मुखकोश;
देव युगादि पूजीए, आणी मन संतोष. ३

एकेकुं डगलुं भरे, शत्रुंजय सामु जेह;
ऋषभ कहे भव क्रोडनां, कर्मखपावे तेह. ४

शत्रुंजय समो तीरथ नहि, ऋषभ समो नहि देव;
गौतम सरिखा गुरु नहि, वळी वळी वंदु तेह. ५

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार;
एक गढ ऋषभ समोसर्या एक गढ नेमकुमार. ६

सिद्धाचल सिद्धि वर्या, मुनिवर कोडी अनंत;
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवि भगवंत. ७

शत्रुंजयगिरि मंडणो, मरूदेवानो नंद;
युगलाधर्म निवारणो, नमो युगादि जिणंद. ८

तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादि सुख भोग;
वळी वळी ए गिरिवंदता, शिवरमणी संयोग. ९

## श्री शत्रुंजय का चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे,
भाव धरीने जे चढे, तेने भव पार उतारे. १

अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय,
पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय. २

सूरजकुंड सोहामणो, कवड जक्ष अभिराम,
नाभिरायाकुल मंडणो, जिनवर करुं प्रणाम. ३

## श्री शत्रुंजय का स्तवन

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा,
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरूं फळ लेवा. विमला० १.

उज्जवल जिनगृह मंडळी, तिहां दीपे उत्तंगा;
मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा. विमला० २.

कोई अनेरुं जग नहि, ए तीरथ तोले;
एम श्रीमुख हरि आगळे, श्री सीमंधर बोले विमला० ३.

जे सघळां तीरथ कह्यां, यात्रा फळ कहिए;
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिए. विमला० ४.

जन्म सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे;
सुजसविजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे. विमला० ५.

## श्री शत्रुंजय की थोय

श्री शत्रुंजयमंडन, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरूदेवानंदन, वंदन करूं त्रण काल;
ए तीरथ जाणी, पूर्व नव्वाणुं वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार. १

त्रेवीश तीर्थंकर, चढीया इण गिरिराय,
ए तीरथना गुण,सुर असुरादिक गाय;
ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहि तस तोले,
ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले. २

पुंडरिकगिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी, लहीए अविचल रिद्ध;
पंचमी गति पहोंच्या, मुनिवर क्रोडाक्रोड,
इण तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड. ३

श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षाकारी,
श्री आदि जिनेश्वर, आण हृदयमां धारी;
श्री संघ विघनहर, कवडजक्ष गण भूर,
श्री रविबुधसागर, संघना संकट चूर. ४

## लोभ की सजझाय

तमे लक्षण जो जो लोभनां रे, लोभे मुनिजन पामे क्षोभना रे,
लोभे डाह्या मन डोल्या करे रे, लोभे दुर्घट पंथे संचरे रे. तमे० १

तजे लोभ तेहनां लेउं भामणां रे, वळी पाये नमीने करुं खामणां रे,
लोभे मर्यादा न रहे केहनी रे, तमे संगत मूको तेहनी रे. तमे० २

लोभे घर मूकी रणमां मरे रे, लोभे उंच ते नीचुं आदरे रे,
लोभे पाप भणी पगलां भरे रे, लोभे अकार्य करतां न ओसरे रे. तमे० ३

लोभे मनडुं न रहे निर्मळुं रे, लोभे सगपण नासे वेगळुं रे,
लोभे न रहे प्रीति ने पावठुं रे, लोभे धन मेळे बहु एकठुं रे. तमे० ४

लोभे पुत्र प्रत्ये पिता हणे रे, लोभे हत्या पातक नवि गणे रे,
ते तो दामतणे लोभे करी रे, उपर मणिधर थाये ते मरी रे. तमे० ५

जोतां लोभनो थोभ दीसे नही रे, एवुं सूत्र सिद्धांते कह्युं सही रे,
लोभे चक्री सुभूम नामे जुओ रे, ते तो समुद्रमांहे डूबी मुओ रे.तमे० ६

एम जाणीने लोभने छांडजो रे, एक धर्मशुं ममता मांडजो रे,
कवि उदयरतन भाखे मुदा रे, वंदु लोभ तजे तेहने, सदा रे. तमे० ७

## देवसिअ प्रतिक्रमण की विधि

१ प्रथम **सामायिक** लें.

२ फिर (दिन में पानी पिया हो तो) **खमा... इच्छा... मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं** कहकर, **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करें.

३ फिर (आहार किया हो तो) दो बार **वांदना** दें.

४ फिर **इच्छकारि... पच्चक्खाण का आदेश देनाजी** कहकर, **गुरु महाराज** से (न हो तो **सामायिक** में स्थित वडील गृहस्थ से या स्वयं) **पच्चक्खाण** लें.

५ फिर **खमा... इच्छा... चैत्य-वंदन करूं? इच्छं**, कहकर, **गुरु महाराज** (न हो तो **सामायिक** में स्थित वडील गृहस्थ या स्वयं) **सकल-कुशल-वल्ली, चैत्य-वन्दन और जं किंचि** कहें.

६ फिर **नमुत्थुणं, अरिहंत-चेइआणं सूत्र (सूत्र नं.१९) अन्नत्थ सूत्र**

कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर **नमोऽर्हत्** कहकर पहली थोय कहें.

७ फिर **लोगस्स, सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र** (शुरुआत में **सव्व-लोए** शब्द पूर्वक **अरिहंत-चेइआणं सूत्र**) **(सूत्र नं.१९) अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, दूसरी थोय कहें.

८ फिर **पुक्खर-वर सूत्र वंदणवत्तियाए सूत्र, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, तीसरी थोय कहें.

९ फिर **सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्च-गराणं सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोऽर्हत्** कहकर, चौथी थोय कहें.

१० फिर **नमुत्थुणं सूत्र** कहें.

११ फिर **खमा...** पूर्वक **भगवान्हं आदि** चार खमासमण कहें.

१२ फिर **इच्छा... देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं** कहकर, दायां हाथ **चरवले / कटासणे** पर रखकर, **सव्वस्स-वि... (सूत्र नं.२६)** कहें.

१३ फिर **करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, **पंचाचार के अतिचार** (न आता हो तो आठ **नवकार**) का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पार कर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

१४ फिर तीसरे आवश्यक की **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** कर, दो बार **वांदना** दें.

१५ फिर **देवसिअं आलोउं?, सात लाख, अठारह पापस्थानक**, एवं **सव्वस्स वि सूत्र** कहें.

१६ फिर **नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं**? एवं **वंदित्तु सूत्र** कहें. फिर **अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए पद...** (गाथा ४३ वीं के) से खड़े होकर कहें.

१७ फिर दो बार **वांदना** देकर, **अब्भुट्ठिओमि** खमाकर, फिर से दो बार **वांदना** दें.

१८ फिर हाथ जोडकर मस्तक झूकाकर, **आयरिय उवज्झाय सूत्र** कहें.

१९ फिर **करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी** एवं **अन्नत्थ सूत्र** कहकर, दो **लोगस्स** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

२० फिर **सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र** (शुरुआत में **सव्व-लोए** शब्द पूर्वक **अरिहंत-चेइआणं सूत्र) (सूत्र नं.१९) अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **लोगस्स** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर--

२१ **पुक्खर-वर सूत्र, वंदणवत्तियाए सुत्र, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **लोगस्स** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, **सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र** कहें.

२२ फिर **सुअ-देवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, पुरुष **नमोऽर्हत्** और **सुअ-देवया** की स्तुति कहें एवं स्त्रियां मात्र **कमल-दल** की स्तुति कहें.

२३ फिर **खित्त-देवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** करे, **काउस्सग्ग** पारकर, पुरुष **नमोऽर्हत्** और **जिसे खित्ते** की स्तुति कहें एवं स्त्रियां मात्र **यस्याः क्षेत्रं** की स्तुति कहें.

२४ फिर एक **नवकार** कहकर, छट्ठे आवश्यक की **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करके, दो बार **वांदना** दें.

२५ फिर **सामायिक, चउव्वीसत्थो, वंदन, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है** कहें.

२६ फिर बैठकर, **इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं** कहकर, पुरुष **नमोऽर्हत्** और **नमोस्तु वर्धमानाय स्तुति** कहें एवं स्त्रियां **संसार-दावा स्तुति** की तीन गाथा कहें.

२७ फिर **नमुत्थुणं, नमोऽर्हत्, स्तवन** कहें. (फिर सिर्फ पुरुष ही **वरकनक** बोलें.)

२८ फिर **खमा...** पूर्वक **भगवान्हं आदि** चार खमासमण कहें.

२९ फिर दायां हाथ **चरवले / कटासणे** पर रखकर, **अड्ढाइज्जेसु सूत्र** कहें.

३० फिर **इच्छा... देवसिअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, देवसिअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, चार **लोगस्स** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **लोगस्स** कहें.

३१ फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं** कहें.

३२ फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय करूं? इच्छं** कहकर, **नवकार, सज्झाय** एवं **नवकार** कहें.

३३ फिर **खमा... इच्छा... दुक्ख-क्खय कम्म-क्खय निमित्तं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, दुक्ख-क्खय कम्म-क्खय निमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, संपूर्ण चार **लोगस्स** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोऽर्हत्** एवं **लघु-शान्ति** बोलकर, **लोगस्स** कहें. (यदि समूह में **प्रतिक्रमण** करते हो तो प्रथम एक व्यक्ति **काउस्सग्ग** पार कर **लघु-शांति** बोले व अन्य **कायोत्सर्ग** मुद्रा में ही रहकर संपूर्ण **लघु-शांति** सुन लेने के बाद ही **काउस्सग्ग** पारें.)

(यहां पर **देवसिअ प्रतिक्रमण** समाप्त होता है. आगे **सामायिक** पारने के लिए विधि शुरु होती है.)

३४ फिर **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

३५ फिर **चउक्कसाय, नमुत्थुणं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, उवसग्गहरं** एवं **जय वीयराय सूत्र** कहें.

३६ फिर **सामायिक** पारने की विधि के अनुसार आदेश मांगकर, **सामायिक** पारें.

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.६१. पूजा के मुख्य कितने भेद है ? कौन कौन से ?

उ. पूजा के दो भेद है – १. द्रव्यपूजा, २. भावपूजा.

प्र.६२. द्रव्यपूजा और भावपूजा यानि क्या ?

उ. द्रव्यपूजा यानि जल-चंदन-पूष्पादि सामग्री द्वारा प्रभु की पूजा करना और भावपूजा यानि चैत्यवंदन और गुणगान आदि करना ।

प्र.६३. द्रव्यपूजा कितने प्रकार की है ?

उ. द्रव्यपूजा पांच, आठ, सत्रह, एकवीस और एकसो आठ प्रकार की है ।

प्र.६४. भावपूजा कितने प्रकार की होती है ?

उ. चैत्यवंदन करना, स्तुति बोलना, गीत, नृत्य, भावना से भावित होना इत्यादि अनेक प्रकार की होती है ।

प्र.६५. अष्टप्रकारी पूजा के नाम बताओ ?

उ. १. जलपूजा, २. चंदनपूजा, ३. पुष्पपूजा, ४. धूपपूजा, ५. दीपक पूजा, ६. अक्षतपूजा, ७. नैवेद्यपूजा, ८. फलपूजा ।

प्र.६६. द्रव्यपूजा के मुख्य कितने भेद है ? कौन से ?

उ. दो भेद है – १. अंगपूजा, २. अग्रपूजा ।

प्र.६७. अंगपूजा यानि क्या ? कौन कौनसी पूजा अंगपूजा में गिनी जाती है ?

उ. अंगपूजा यानि शुद्ध द्रव्यों द्वारा प्रभुजी की पूजा करना । प्रथम तीन – १. जलपूजा, २. चंदनपूजा, ३. पुष्पपूजा अंगपूजा कहलाती है ।

प्र.६८. अग्रपूजा यानि क्या ? कौन कौन सी पूजा अग्रपूजा में आती है ?

उ. प्रभु के सन्मुख रहकर जो पूजा की जाती है । अंतिम पाँच पूजा अग्रपूजा है। ४. धूपपूजा, ५. दीपकपूजा, ६. अक्षतपूजा, ७. नैवेद्य पूजा, ८. फलपूजा ।

प्र.६९. पंचामृत यानि क्या ?

उ. दूध, दही, शक्कर, घी और पानी ।

प्र.७०. जलपूजा यानि क्या ?

उ. जलपूजा यानि प्रथम पंचामृत से प्रभु का अभिषेक कर फिर पानी से प्रक्षाल करना वह जलपूजा कहलाती है ।

प्र.७१. चंदनपूजा यानि क्या ?

उ. चंदनपूजा यानि केसर, चंदन, बरास, कस्तुरी वगैरह से प्रभु की पूजा करना ।

प्र.७२. पुष्पपूजा यानि क्या ?

उ. पुष्पपूजा यानि सुगंधी रंगबेरंगी विविध उत्तम फुल प्रभु को चढ़ाना ।

प्र.७३. धूपपूजा यानि क्या ?

उ. धूपपूजा यानि प्रभु के सन्मुख खड़े रहकर दशांग कपूर अगरबत्ती चंदन का धूप करना ।

प्र.७४. दीपकपूजा यानि क्या ?

उ. प्रभु के सन्मुख खड़े रहकर आरति-मंगल दीवा उतारना अथवा प्रभु के आगे दीपक उतारना ।

प्र.७५. अक्षतपूजा यानि क्या ?

उ. अक्षतपूजा यानि प्रभु के आगे स्वस्तिक या अष्टमंगल आलेखना ।

प्र.७६. नैवेद्यपूजा यानि क्या ?

उ. नैवेद्यपूजा यानि स्वस्तिक के उपर पतासा, शक्कर, पेंडा, बरफी आदि रखना ।

प्र.७७. फलपूजा यानि क्या ?

उ. फलपूजा यानि सिद्धशिला के उपर श्रीफल, बदाम, सुपारी, नारंगी, मोसंबी, आम, जामफल आदि फल रखना ।

प्र.७८. देवगति और मनुष्यगति में कौन जा सकता है ?

उ. जो जीव दान-शील, तप, भावना, जिनपूजा, सामायिक आदि धार्मिक कार्य करता है वह देवगति या मनुष्यगति पाता है ।

प्र.७९. तिर्यंचगति में कौन जाता है ?

उ. हृदय में वक्रता-शठता रखनेवाले, ठगनेवाले, प्रपंची, शल्यवाले तिर्यंचगति में जाते हैं ।

प्र.८०. नरकगति में कौन जाता है ?

उ. मनुष्य अथवा तिर्यंच बहुत भयंकर पाप करते है वे नरकगति में जाते है । जैसे कि पंचेन्द्रिय प्राणी का वध करे अथवा मांसाहार आदि करे वह नरकगति में जाता है ।

● ● ●

# मौखिक कक्षा ७

| | | | |
|---|---|---|---|
| **सूत्र** | : | अतिचार... नाणंमि... से छठ्ठा व्रत तक | २० |
| **अर्थ** | : | करेमि भंते, सामाईय वय... | १० |
| **काव्य** | : | चैत्यवंदन : कल्पतरुवर कल्पसूत्र... | २० |
| | | स्तवन : सुणजो साजन... | |
| | | थोय : पुण्यनुं पोषण (४ गाथा) | |
| | | स्नात्रपूजा : शुभ लग्ने जिन... तक | १० |
| **पच्चक्खाण** | : | नवकारशी, दिवसचरिम.... पाणहार | १० |
| **विधि** | : | राईअ प्रतिक्रमण की | १० |
| | | मुहपत्ति के ५० बोल और वांदणा सूत्र के | |
| | | २५ आवश्यक | १० |
| | | (प्रेकटीकल करके बताना होगा) | |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** : | | ८१ से ९० | १० |
| | | | १०० |

## श्रावक के अतिचार

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य वीरियंमि,
आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा भणिओ ॥१॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं. ॥१॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार, काले विणए बहुमाणे,
उवहाणे तह अनिन्हवणे,
वंजण अत्थ तदुभए अट्ठविहो नाणमायारो ॥२॥

ज्ञान काळवेळाए भण्यो, गण्यो नहीं, अकाले भण्यो विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो. देव गुरु वांदणे पडिक्कमणे, सजझाय करतां भणतां गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्राए अधिको ओछो भण्यो. सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तदुभय कूडां कह्यां, भणीने विसार्यां.

साधुतणे धर्मे काजो अणउद्धर्ये, दांडो अणपडिलेहे, वसति अणशोधे, अणपवेसे, असजझाय अणोज्झायमांहे श्री दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो. श्रावकतणे धर्मे स्थविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाळा प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, काळवेळाए काजो अणउद्धर्ये पढ्यो. ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाळी, सापडा, सापडी, दस्तरी, वही, ओलिया प्रमुख प्रत्ये पग लाग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो, ओशीसे धर्यो, कन्हे छतां आहार निहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षतां उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधे विणास्यो, विणसता उवेख्यो, छती शक्तिए सारसंभाळ न कीधी, ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष, मत्सर चिंतव्यो, अवज्ञा आशातना कीधी. कोई प्रत्ये भणतां गुणतां अंतराय कीधो, आपणा जाणपणातणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञान तणी असद्हणा आशातना कीधी, कोई तोतडो, बोबडो देखी हस्यो, वितर्क्यो अन्यथा प्ररूपणा कीधी. ज्ञानाचार विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥२॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार,
निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठिअ।
उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ ॥३॥

देव, गुरु धर्मतणे विषे नि:शंकपणुं न कीधुं. तथा एकांत निश्चय न कीधो, धर्म संबंधीया फलतणे विषे नि:संदेह बुद्धि धरी नहीं, साधु साध्वीनां मल मलिन गात्र देखी दुगंछा नीपजावी. कुचारित्रीया देखी चारित्रीया उपर अभाव हुओ, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं, तथा संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अभक्ति नीपजावी, अबहुमान कीधुं, तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणास्यां, विणसतां उवेख्यां, छती शक्तिए सार संभाळ न कीधी,, तथा साधर्मिक साथे कलह कर्मबंध कीधो, अधोती, अष्टपड मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी, बिंबप्रत्ये वासकूंपी, धूपधाणुं कळशतणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथ थकी पाड्युं. ऊसास नि:सास लाग्यो. देहरे, उपाश्रये, मल श्लेष्मादिक लोह्युं, देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधां, पान, सोपारी, निवेदीयां खाधां, ठवणायरिय हाथथकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्या. जिनभवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरु वचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं, दर्शनाचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥३॥

चारित्राचारे आठ अतिचार,
पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तीहिं गुत्तीहिं।
एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥

इर्यासमिति ते अणजोये हिंड्या, भाषासमिति ते सावद्य वचन बोल्या, एषणासमिति ते तृण, डगल, अन्न, पाणी, असूझतुं लीधुं. आदानभंडमत्त निक्खेवणा समिति ते आसन, शयन, उपकरण, मात्रु प्रमुख अणपूंजी जीवाकुळ भूमिकाए मूक्युं लीधुं. पारिष्ठापनिका समिति ते मल, मूत्र, श्लेषमादिक अणपूंजी जीवाकुल, भूमिकाए परठव्युं. मनोगुप्ति ते मनमां आर्तरौद्र ध्यान ध्यायां. वचनगुप्ति ते सावद्य वचन बोल्यां. कायगुप्ति ते

शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा. ए अष्ट प्रवचनमाता साधुतणे धर्मे सदैव अने श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे रूडी पेरे पाल्यां नहीं, खंडणा विराधना हुइ, चारित्राचार विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥४॥

विशेषत: श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्त्व मूल बार व्रत, सम्यक्त्त्वतणा पांच अतिचार,

**संका कंख विगिच्छा.** शंका श्री अरिहंततणां बळ, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, श्री जिन वचनतणो संदेह कीधो.

**आकांक्षा** ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोग आतंक कष्ट आवे इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, प्रसिद्ध, विनायक, जीराउलाने मान्युं, इच्छ्युं, बौद्ध, सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, जोगिया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विना भुलाव्या, मोह्या, कुशास्त्र, शीख्यां, सांभल्या, श्राद्ध, संवच्छरी, होळी, बळेव, माहिपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपंचमी, झीलणाछट्ठी, शीलसातमी, ध्रुवआठमी, नौलीनवमी, अहवादशमी, व्रतअग्यारशी, वच्छबारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण नैवेद्य कीधां. नवोदक, याग, भोग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां. पींपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां, घर बाहिर क्षेत्रे, खले, कूवे, तळावे, नदीए, द्रहे, वावीए, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां, ग्रहण, शनैश्चर माहमासे नवरात्रि ए न्हाया. अजाणतां थाप्यां. अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां.,

**वितिगिच्छा** धर्म संबंधिया फलतणे विषे संदेह कीधो. जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण भणी न मान्या, न पूज्या. महासती, महात्मानी इहलोक परलोक संबंधीया भोगवांछित पूजा कीधी, रोग, आतंक, कष्ट आव्ये खीण वचन भोग मान्या. महात्मानां भात, पाणी, मल शोभा तणी निंदा कीधी, कुचारित्रीया देखी चारित्रीया उपर कुभाव हुओ. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी. प्रीति मांडी. दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म मान्यो, कीधो। श्री सम्यत्त्वव्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥५॥

पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रते पांच अतिचार.

**वह बंध छविच्छेए०॥** द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो. गाढे बंधने बांध्यो, अधिक भार घाल्यो, निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेळाए सारसंभाळ न कीधी. लेहणे देहणे कीणही प्रत्ये लंघाव्यो. तेणे भूखे आपणे जम्या. कन्हे रही मराव्यो, बंदीखाने घलाव्यो. सल्यां धान्य तावडे नाख्यां, दळाव्यां भरडाव्यां, शोधी न वावर्या, इंधण छाणां अणशोध्यां बाल्यां. ते मांहि साप, वींछी, खजुरा, सरवला, मांकड, जुआ, गींगोडा साहता मुआ दुहव्या, रूडे स्थानके न मूक्या. कीडी मंकोडीनां इंडां विछोह्यां, लीख फोडी, उदेही, कीडी, मंकोडी, धीमेल, कातरा, चूडेल, पतंगियां, देडका, अलसीयां, इयल, कुंता, डांस, मसा, बगतरां, माखी, तीड प्रमुख जीव विणट्ठा, माला हलावतां चलावतां पंखी, चकलां, काग तणां इंडां फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, दुहव्या, कांई हलावतां चलावतां, पाणी छांटतां, अनेरा कांई कामकाज करतां, निर्ध्वंसपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी, संखारो सूकव्यो. रूडुं गलणुं न कीधुं. अणगळ पाणी वावर्युं, रूडी जयणा न कीधी. अणगळ पाणीए झील्या, लूगडां धोयां. खाटला तावडे नांख्या, झाट्क्या. जीवाकुल भूमि लींपी. वाशी गार राखी. दलणे, खांडणे,

जिनपूजा अर्थात् भगवान के अनन्त उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना.

लींपणे रूडी जयणा न कीधी, आठम चउदशना नियम भांग्या. धूणी करावी. पहेले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥१॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमण व्रते पांच अतिचार.

**सहसारहस्सदारे०॥** सहसात्कारे कुणही प्रत्ये अजुगतुं आळ अभ्याख्यान दीधुं. स्वदारा मंत्रभेद कीधो. अनेरो कुणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो. कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी. कूडो लेख लख्यो. कूडी साख भरी. थापणमोसो कीधो. कन्या, गौ, ढोर, भूमि संबंधी लेहणे देहणे व्यवसाये वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ पग तणी गाल दीधी. कडकडा मोड्या. मर्मवचन बोल्या. बीजे स्थूलमृषावाद विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥२॥

त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रते पांच अतिचार.

**तेनाहडप्पओगे०॥** घर, बाहिर, क्षेत्रे, खळे पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराई वस्तु वहोरी, चोर धाड प्रत्ये संकेत कीधो, तेहने संबल दीधुं, तेहनी वस्तु लीधी, विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो. नवा, पुराणा, सरस विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा, कूडे काटले तोले, माने, मापे वहोर्यां, दाणचोरी कीधी. कुणहने लेखे वरास्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो. परवंचना कीधी, पासंग कूडां कीधां. दांडी चढावी, लहके त्रहके कूडां काटलां मान मापां कीधां. माता पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र वंची कुणहीने दीधुं. जुदी गांठ कीधी, थापण ओळवी. कुणहीने लेखे पलेखे भूलव्युं, पडी वस्तु ओळवी लीधी. त्रीजे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥३॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रते पांच अतिचार.

**अपरिग्गहिया इत्तर॥** अपरिगृहिता गमन, इत्वरपरिगृहिता गमन कीधुं, विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना स्वदारा शोक तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम, चउदश, अनेरी पर्वतिथिना नियम लई भांग्या, घरघरणां कीधां, कराव्यां, वरवहू वखाण्यां कुविकल्प चिंतव्यो, अनंगक्रीडा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या, ढींगला ढींगली परणाव्यां, कामभोगतणे विषे तीव्र अभिलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरे हुआ, कुस्वप्न लाध्यां, नट, विट, स्त्रीशुं, हांसु कीधुं, चोथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥४॥

पांचमे परिग्रह परिमाण व्रते पांच अतिचार.

**धण धन्न खित्त वत्थु०॥** धन धान्य, क्षेत्र वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य द्विपद, चतुष्पद ए नवविध परिग्रहतणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्च्छा लगे संक्षेप न कीधो, माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो, परिग्रह परिमाण लीधुं नहीं, लईने पढ्युं नहि, पढवुं विसार्युं, अलीधुं मेल्युं, नियम विसार्या. पांचमे परिग्रह परिमाण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥५॥

छट्ठे दिग्परिमाण व्रते पांच अतिचार.

**गमणस्स उ परिमाणे०॥** ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशिए जावा आववा तणा नियम लई भांग्या, अनाभोगे विस्मृत लगे अधिक भूमि गया, पाठवणी आघी पाछी मोकली, वहाण व्यवसाय कीधो, वर्षाकाले, गामतरुं कीधुं. भूमिका एक गमा संक्षेपी, बीजी गमा वधारी, छट्ठे दिग्परिमाण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि. ॥६॥

## करेमि भंते सूत्र (सामायिक दंडक सूत्र) अर्थ

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

हे भगवंत! मैं(रागद्वेष के अभाव रुप) (ज्ञानादि गुण के) लाभरूप सामायिक करता हूँ(अर्थात्) पाप व्यापार का पच्चक्खाण करता हूँ(निषेध करता हूं) जब तक मैं नियम में रहता हूँ, तब तक दो तरह से और तीन प्रकार से यानि मन वचन काया से(मैं) नही करूँगा(और) नही करवाऊँगा, ऐसी प्रतिज्ञा करता हूं।

हे भगवंत! भूतकाल में किए हुए उन पापों से मैं वापस मुड़ता हूँ, आत्म-साक्षी से निंदा करता हूँ और गुरु भगवंत की साक्षी से गर्हा करता हूँ (और) आत्मा का मैं त्याग करता हूँ।

## सामाईय वयजुत्तो सूत्र (सामायिक पारने का सूत्र) अर्थ

**सामाइअ वय जुत्तो, जाव मणे होई नियम संजुत्तो,**
**छिन्नई असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥**

जब तक (सामायिक व्रत धारी का) मन सामायिक व्रत के नियम से जुडा हुआ रहता है और जितनी बार(वह) सामायिक करता है, उतनी बार अशुभ कर्मों का नाश करता है॥१॥

**सामाईअम्मि उ कए, समणो ईव सावओ हवई जम्हा,**
**एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥**

सामायिक व्रत लेने से जिस कारण श्रावक श्रमण के जैसा बनता है, उस कारण से सामायिक बारबार करनी चाहिए॥२॥

**सामायिक विधिए लीधुं, विधिए पार्युं, विधि करतां, जे कोई अविधि हुओ होय, ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं॥३॥**

---

सभी अरिहंत प्रभु के जीव का जब च्यवन होता है तब नरक के जीवों को भी सुख की प्राप्ति होती है.

**दश मनना, दश वचनना, बार कायाना ए बत्रीश दोषमांही जे कोई दोष लाग्यो होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कड ॥४॥**

## काव्य विभाग

### पर्युषणपर्व का चैत्यवंदन

कल्पतरूवर कल्पसूत्र, पूरे मन वांछित;
कल्पधरे धुरथी सुणो, श्रीमहावीर चरित. १

क्षत्रियकुंडे नरपति, सिद्धारथ राय;
राणी त्रिशला तणी कूखे, कंचन समकाय २

पुष्पोत्तरवरथी चव्या ए, उपज्या पुण्य पवित्र;
चतुरा चौद सुपन लहे, उपजे विनय विनीत. ३

### पर्युषणपर्व का स्तवन

सुणजो साजन संत पजुसण आव्या रे.....
तमे पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे....
वीर जिणेसर अति अलवेसर, व्हाला मारा, परमेश्वर एम बोले रे,
पर्वमांहे पजुसण महोटां, अवर न आवे तस तोले. रे पजु० १

चउपदमां जेम केशरी मोटो, व्हाला० खगमां गरूड ते कहीए रे,
नदीमांही जेम गंगा म्होटी, नगमां मेरू लहीए रे. पजु० २

भूपतिमां भरतेश्वर भाख्यो, व्हाला० देव मांहे सुरइन्द्र रे,
तीरथमां शत्रुंजय दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे. पजु० ३

दशरा दिवाळी ने वळी होळी, व्हाला० अखात्रीज दिवासो रे,
बळेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहि मुक्तिनो वासो रे. पजु० ४

ते माटे तमे अमर पळावो, व्हाला० अठ्ठाई महोत्सव कीजे रे,
अठ्ठमतप अधिकाईए करीने, नरभव लाहो लीजे रे. पजु० ५

सभी अरिहंत प्रभु के जन्म के समय चौदह राजलोक प्रकाशित होता है.

ढोल ददामा भेरी ने फेरी, व्हाला० कल्पसूत्रने जगावो रे,
झांझरना झमकार करीने, गौरीनी टोळी मळी आवो रे. पजु० ६

सोना रूपाना फूलडे वधावो, व्हाला० कल्पसूत्रने पूजो रे,
नव वखाण विधिए सांभळता, पाप मेवासी ध्रुजो रे. पजु० ७

एम अठ्ठाई महोत्सव करतां, व्हाला० बहुजीव जग उद्धरीया रे,
विबुध विमल वर सेवक नय कहे, नव निधि ऋद्धि सिद्धिवरीया रे. पजु० ८

## पर्युषणपर्व की थोय

पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पजुसण पामीजी,
कल्प घरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिर नामीजी;
कुंवर गयवर खंधे चढावी, ढोल निशान वजडावोजी,
सद्गुरु संगे चढते रंगे, वीरचरित्र सुणावोजी. १

प्रथम वखाणे धर्मसारथीपद, बीजे सुपना चारजी,
त्रीजे सुपन पाठक वळी चोथे, वीर जनम अधिकारजी;
पांचमे दीक्षा छट्ठे शिवपद, सातमे जिन त्रेवीशजी,
आठमे थिरावली संभळावी, पियूडा पूरो जगीशजी. २

छठ्ठ अठ्ठम अठ्ठाई कीजे, जिनवर चैत्य नमीजे जी,
वरसी पडिक्कमणुं मुनि वंदन, संघ सयल खामीजेजी;
आठ दिवस लगे अमर पळावी, दान सुपात्रे दीजेजी,
भद्रबाहु गुरु वयण सुणीने, ज्ञान सुधारस पीजेजी. ३

तीरथमां विमलाचल गिरिमां, मेरु महीधर जेमजी,
मुनिवरमांहि जिनवर मोटा, पर्व पजुसण तेमजी;
अवसर पामी साहम्मिवच्छल, बहु पकवान्न वडाइजी,
खिमाविजय जिन देवी सिद्धाइ, दिन दिन अधिक वधाइजी. ४

# स्नात्रपूजा

**(पंडित श्री वीरविजयजी कृत)**

## स्नात्र विधि

१ प्रथम पूर्व दिशा या उत्तर दिशा अथवा मूल प्रतिमा सन्मुख तीन सुंदर पाट रखकर उस पर सिंहासन रखे।

२ नीचे के पाट(बाजोट) पर बीच में केसर का स्वस्तिक करे और उस पर चावल रखकर श्रीफल रखें।

३ फिर उस पाट के सामने पाटले के ऊपर चार साथियें करके उसके उपर चार कलश नाडाछडी बांधकर पंचामृत(दूध, दही, घी, जल और शक्कर का मिश्रण करके) भरके रखे।

४ सिंहासन के बीच में केसर का स्वस्तिक करें और उस पर चावल की ढगली और रूपये का सिक्का रखकर, तीन नवकार गिनकर उस पर धातु की प्रतिमाजी बिराजमान करे।

५ प्रतिमाजी के आगे साथिया कर के उसके उपर श्री सिद्धचक्रजी स्थापित करे।

६ प्रतिमाजी के दाहिनी ओर, प्रतिमाजी को नाक की ऊँचाई तक घी का दीप रखें।

७ बाद में स्नात्र पूजा करनेवाले नाडाछडी बाँधकर हाथ में पंचामृत भरा हुआ कलश लेकर तीन नवकार गिन शुरूआत करे।

८ फिर वालाकुंची करके पानी का पक्षाल कर तीन अंग लुछना करके केसर से पुजा करे।

९ बाद में हाथ धोकर खुद के दाहिने हाथ की हथेली में केसर का स्वस्तिक करे।

१० बाद में स्नात्र करने वाले कुसुमांजली का थाल लेकर खडे रहें।

## स्नात्र पूजा में जरुरी वस्तुओ की यादी

१. तीन बाजोठ २. सिंहासन ३. कळश ४. थाळ ५. चामर ६. दर्पण ७. घंट ८. आरती ९. मंगळ दीवो १०. वाळाकुंची ११. केसर १२. पाणी १३. अंग लुंछणा १४. दूध १५. दहीं १६. घी १७. साकर १८. नाडाछडी १९. कंकु २०. चोखा २१. मीठुं २२. माटी २३. श्रीफळ २४. कपूर २५. रूपानाणुं २६. धूप २७. पूंठियुं २८. चंदरवो २९. कटोरीयाँ ३०. पंखो ३१. अग्नि ३२. दीपक ३३. फानस.

**(पहले कळश लेकर खडे रहना)**

**काव्यम् द्रुतविलंबितवृत्तम्**

सरसशान्तिसुधारससागरं शुचितरं गुणरत्नमहागरम्;
भविकपंकजबोधदिवाकरं, प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरम्. १

**दुहो** कुसुमाभरण उतारीने, पडिमा धरिय विवेक,
मज्जनपीठे थापीने, करीए जळ अभिषेक. २

(दाहिने अंगुठे प्रक्षाल करके अंगलूछणा करके कुसुमांजलि की थाली लेकर खडे रहना)

**गाथा आर्या गीति**

जिण जन्म समये मेरुसिहरे, रयण कणय कलसेहिं;
देवासुरेहिं ण्हविओ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि. ३

(जहा जहा "कुसुमांजलि मेलो हो" वहा-वहा प्रभु के दाहिने अंगुठे पर कुसुमांजलि रखे)

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः**

**कुसुमांजलि ढाळ**

निर्मळ जळकळशे न्हवरावे, वस्त्र अमूलक अंग धरावे;
कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा,
सिद्धस्वरूपी अंग पखाली, आतम निर्मळ हुइ सुकुमाली, कुसुमां०४

**गाथा आर्या गीति**

मचकुंद चंप मालइ; कमलाइं पुप्फ पंचवण्णाइं;
जगनाह न्हवण समये, देवा कुसुमांजलि दिंति. ५

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य:**

**कुसुमांजलि ढाळ**

रयण सिंहासन जिन थापीजे, कुसुमांजलि प्रभु चरणे दीजे,
कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा. ६

**दुहो**

जिण तिहुं कालय सिद्धनी, पडिमा गुणभंडार;
तसु चरणे कुसुमांजलि, भविक दुरित हरनार. ७

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य:**

**कुसुमांजलि ढाळ**

कृष्णागरु वर धूप धरीजे, सुगंधकर कुसुमांजलि दीजे;
कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा. ८

**गाथा आर्यागीति**

जसु परिमल बल दह दिसि, महुकरझंकार सद्दसंगीया;
जिणचरणोवरि मुक्का, सुरनर कुसुमांजलि सिद्धा. ९

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य:**

**कुसुमांजलि ढाळ**

पास जिणेसर जग जयकारी, जलथल फूल उदक कर धारी;
कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा. १०

**दुहो**

मूके कुसुमांजलि सुरा, वीरचरण सुकुमाल;
ते कुसुमांजलि भविकनां, पाप हरे त्रण काळ. ११.

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः**

**कुसुमांजलि ढाळ**

विविध कुसुम वर जाति गहेवी, जिनचरणे पणमंत ठवेवी;
कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा. १२

**वस्तु छंद**

न्हवणकाले न्हवणकाले, देवदाणव समुच्चिय,
कुसुमांजलि तहि संठविय, पसरंत दिसि परिमल सुगंधिय;
जिणपयकमले निवडेहिं, विग्घहर जस नाम मंतो,
अनंत चउवीस जिन, वासव मलीय असेस;
सा कुसुमांजलि सुहकरो, चउविह संघ विशेष. १३

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः**

**कुसुमांजलि ढाळ**

अनंत चउवीसी जिनजी जुहारुं, वर्तमान चउवीसी संभारुं;
कुसुमांजलि मेलो चोवीस जिणंदा. १४

**दुहो**

महाविदेहे संप्रति, विहरमान जिन वीस;
भक्ति भरे ते पूजिया, करो संघ सुजगीश. १५

**नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः**

**कुसुमांजलि ढाळ**

अपच्छरमंडली गीत उच्चारा, श्री शुभवीरविजय जयकारा;
कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणंदा. १६

(स्नात्रपूजा करने वाले प्रभुजी के दाहिने अंगूठे पर कुसुमांजलि फिर तीन प्रदक्षिणा देते हुए नीचेका दोहा बोले, प्रत्येक दोहा बोलते हुऐ सिंहासन को प्रदक्षिणा दे कर प्रभु सन्मुख खमासमण दे.)

# प्रदक्षिणा के दोहे

(१) सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार;
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदु वार हजार. १

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार;
शेत्रुंजी नदीए नाह्यो नहीं, एनो एळे गयो अवतार. २

(२) शेत्रुंजी नदीए नाहीने, मुखबांधी मुखकोश;
देव युगादि पूजीए, आणी मन संतोष. ३

एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा सामुं जेह;
ऋषभ कहे भव क्रोडनां, कर्मखपावे तेह. ४

(३) शेत्रुंजा समो तीरथ नहि, ऋषभ समो नहि देव;
गौतम सरिखा गुरु नहि, वळी वळी वंदु तेह. ५

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार;
एक गढ ऋषभ समोसर्या एक गढ नेमकुमार. ६

(फिर, स्नात्र करने वाले तीन खमासमण देकर जगचिंतामणि का चैत्यवंदन करके 'नमुत्थुणं' से 'जयवीयराय' तक कहे फिर हाथ धोकर मुखकोश बांधकर कलश लेकर खडे रहे.)

दुहो सयल जिणेसर पाय नमी, कल्याणक विधि तास;
वर्णवतां सुणतां थकां, संघनी पूरे आश. १.

**ढाळ**

समकितगुणठाणे परिणम्या, वळी व्रतधर संयमसुख रम्या;
वीशस्थानकविधिए तप करी, एसी भावदया दिलमां धरी. १

जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करुं शासनरसी;
शुचिरस ढलते तिहां बांधता, तीर्थंकर नाम निकाचतां. २

सरागथी संयम आचरी, वचमां एक देवनो भव करी;
च्यवी पन्नर क्षेत्रे अवतरे, मध्यखंडे पण राजवीकुले. ३

पटराणी कुखे गुणनीलो, जेम मानसरोवर हंसलो;
सुखशय्याए रजनीशेषे, उतरतां चौद सुपन देखे. ४

**ढाळ चौद स्वप्ननी**

पहेले गजवर दीठो, बीजे वृषभ पइठ्ठो;
त्रीजे केसरीसिंह, चोथे लक्ष्मी अबीह. १

पांचमे फूलनी माळा, छठ्ठे चन्द्र विशाळा;
रवि रातो ध्वज म्होटो, पूरण कळश नहि छोटो. २

दशमे पद्म सरोवर, अगियारमे रत्नाकर;
भवन विमान रत्नगंजी, अग्निशिखा धूमवर्जि. ३

स्वप्न लइ जइ रायने भासे, राजा अर्थ प्रकाशे;
पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फळशे. ४

**वस्तु छंद**

अवधिनाणे अवधिनाणे, उपन्या जिनराज,
जगत जस परमाणुआ, विस्तर्या विश्वजंतु सुखकार;
मिथ्यात्व तारा निर्बला, धर्मउदय परभात सुंदर,
माता पण आणंदिया, जागती धर्म विधान;
जाणंती जगतिलक समो, होशे पुत्र प्रधान. १.

**दुहो**

शुभलग्ने जिन जनमीया, नारकीमां सुखजयोत;
सुख पाम्या त्रिभुवनजना, हुओ जगत उद्योत. १.

## पच्चक्खाण

### नवकारशी

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि) चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ. (वोसिरामि.)

(हमें स्वयं पच्चक्खाण करना हो तो पच्चक्खाई तथा वोसिरई की जगह अनुक्रमे पच्चक्खामि और वोसिरामि बोलना चाहिये।)

(गुरु भगवंत पच्चक्खाण देते हो तब वे (गुरू) पच्चक्खाई/वोसिरई बोले तब हमें पच्चक्खामि / वोसिरामि बोलना चाहिये।)

### पोरिसि, साढपोरिसि

उग्गए सूरे पोरिसिं साड्ढपोरिसिं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) उग्गए सूरे चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ (वोसिरामि.)

### चोविहार, तिविहार, दुविहार

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि) चउव्विहं पि आहारं (तिविहं पि आहारं दुविहं पि आहारं) असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ. (वोसिरामि.)

### पाणहार

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि), अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ. (वोसिरामि)

# राई प्रतिक्रमण की विधि

१. प्रथम **सामायिक** लें.

२. फिर **खमा... इच्छा... कुसुमिण-दुसुमिण-उड्डावणी राइअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, कुसुमिण-दुसुमिण-उड्डावणी राइअ-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, चार **लोगस्स** (काम-भोगादि का स्वप्न आया हो तो **सागर-वर-गंभीरा** तक) का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

३. फिर **खमा..., जग-चिंतामणि, जं किंचि, नमुत्थुणं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं** एवं **जय वीयराय सूत्र** कहें.

४. फिर **खमा...** पूर्वक **भगवान्हं आदि** कहें.

५. फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय संदिसाहुं? इच्छं** कहें.

६. फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय करूं? इच्छं** कहकर **नवकार, भरहेसर सज्झाय** एवं **नवकार** कहें.

७. फिर **इच्छकार सूत्र** कहें.

८. फिर **इच्छा... राइअ पडिक्कमणे ठाउं? इच्छं** कहकर, दायां हाथ **चरवले / कटासणे** के उपर रखकर, **सव्वस्स वि राइअ... (सूत्र नं.२६)** कहें.

९. फिर **नमुत्थुणं, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स-उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, एक **लोगस्स** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

१०. फिर **सव्व-लोए अरिहंत-चेइआणं सूत्र** (शुरुआत में **सव्व-लोए** शब्द के साथ **अरिहंत-चेइआणं सूत्र**) **(सूत्र नं. १९)** कहकर, एक

**लोगस्स** का **काउसग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर--

११. **पुक्खर-वर सूत्र** कहकर, **पंचाचार** के **अतिचार** (न आता हो तो आठ **नवकार**) का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र** कहें.

१२. फिर तीसरे आवश्यक की **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करें.

१३. फिर दो बार **वांदना** दें.

१४. फिर **राइअं आलोउं, सात लाख, अठारह पापस्थानक, सव्वस्स वि सूत्र** कहकर--

१५. **नवकार, करेमि भंते, इच्छामि पडिक्कमिउं?** एवं **वंदित्तु सूत्र** कहें. (४३वीं गाथा के अब्भुट्ठिओ मि आराहणाए पद से खड़े होकर बोलें.)

१६. फिर दो बार **वांदना** देकर, **अब्भुट्ठिओमि** खमाकर, फिर से दो बार **वांदना** दें.

१७. फिर **आयरिय-उवज्झाए, करेमि भंते, इच्छामि ठामि, तस्स उत्तरी, अन्नत्थ सूत्र** कहकर, **तप-चिन्तन** (न आता हो तो सोलह **नवकार**) का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **लोगस्स सूत्र** कहें.

१८. फिर छट्ठे आवश्यक की **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करें.

१९. फिर दो बार **वांदना** देकर, **सकल तीर्थ सूत्र** कहें.

२०. फिर **इच्छकारि... पच्चक्खाण का आदेश दो जी** कहकर, यथाशक्ति **पच्चक्खाण** लें.

२१. फिर **सामायिक, चउव्वीसत्थो, वंदण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण किया है; इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं** कहकर, पुरुष **नमोर्हत्** और **विशाल-लोचन** कहें एवं स्त्रियां **संसार-दावा** की तीन गाथाएं कहें.

२२. फिर **नमुत्थुणं, अरिहंत-चेइआणं सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोऽर्हत्** एवं **कल्लाण-कंदं** की प्रथम स्तुति कहें.

२३. फिर **लोगस्स, सव्वलोए अरिहंत चेइआणं सूत्र** (शुरुआत में **सव्व-लोए** शब्द के साथ **अरिहंत-चेइआणं सूत्र**) **(सूत्र नं. १९)** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, द्वितीय स्तुति कहें.

२४. फिर **पुक्खर-वर सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, तृतीय स्तुति कहें.

२५. फिर **सिद्धाणं बुद्धाणं, वेयावच्च-गराणं सूत्र** कहकर, एक **नवकार** का **काउस्सग्ग** कर, **काउस्सग्ग** पारकर, **नमोऽर्हत्** एवं चतुर्थ स्तुति कहें.

२६. फिर **नमुत्थुणं सूत्र** कहकर--

२७. **खमा...** पूर्वक **भगवान्हं आदि** कहें.

२८. फिर दायां हाथ **चरवले / कटासणे** पर रखकर, **अड्ढाइज्जेसु सूत्र** कहें.

२९. फिर **खमा...** पूर्वक **दोहे** कहकर, **चैत्य-वन्दन** की विधि के अनुसार **श्री सीमंधर स्वामी** का **चैत्य-वन्दन** करें.

३०. फिर **खमा...** पूर्वक **दोहे** कहकर, **चैत्य-वन्दन** की विधि के अनुसार **श्री सिद्धाचल तीर्थ** का **चैत्य-वन्दन** करें.

(यहां पर **राइअ प्रतिक्रमण** समाप्त होता है.)

३१. फिर विधि पूर्वक **सामायिक** पारें.

# मुहपत्ति पडिलेहण के ५० बोल

| बोल | संख्या | स्थान |
|---|---|---|
| सूत्र, अर्थ, तत्त्व करी सद्दहुं. | १ | दृष्टिपडिलेहण |
| सम्यक्त्वमोहनीय, मिश्रमोहनीय, मिथ्यात्वमोहनीय परिहरुं | ३ | पुरिम |
| कामराग, स्नेहराग, दृष्टिराग परिहरुं | ३ | पुरिम |
| सुदेव, सुगुरु, सुधर्म आदरुं. | ३ | अक्खोडा |
| कुदेव, कुगुरु, कुधर्म परिहरुं. | ३ | पक्खोडा |
| ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदरुं. | ३ | अक्खोडा |
| ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना, चारित्र विराधना परिहरुं. | ३ | पक्खोडा |
| मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरुं. | ३ | अक्खोडा |
| मनदंड, वचनदंड, कायदंड परिहरुं. | ३ | पक्खोडा |
| | २५ | |
| हास्य, रति, अरति परिहरुं. | ३ | बाऐ हाथ का पीछे का और दोनो बाजु का भाग |
| भय, शोक, जुगुप्सा परिहरुं | ३ | दाहिने हाथके पीछेका और दोनो बाजु का भाग |
| कृष्णलेश्या, नीललेश्या, | | |

| | | |
|---|---|---|
| कापोतलेश्या परिहरुं. | ३ | मस्तक |
| रसगारव, ऋद्धिगारव, | | |
| सातागारव परिहरुं | ३ | मुख |
| मायाशल्य, नियाणशल्य, | | |
| मिथ्यात्वशल्य परिहरुं | ३ | छाती |
| क्रोध, मान परिहरुं | २ | दाहिना कन्धा |
| माया, लोभ परिहरुं | २ | बायां कन्धा |
| पृथ्वीकाय, अप्काय, | | |
| तेउकायनी जयणा करुं. | ३ | डाबो पग |
| वाउकाय, वनस्पतिकाय, | | |
| त्रसकायनी रक्षा करुं. | ३ | जमणो पग |
| | ५० | |

पुरिम = हाथ से मुहपत्ति खंखेरना.

अक्खोडा पक्खोडा = हाथ की अंगुली के तीन आंतरे में मुहपत्ति को पकड के हथेली पर और हथेली से कोणी तक की प्रमार्जना को अक्खोडा कहते है और एसे ही कोणी से हथेली तक की प्रमार्जना को पक्खोडा कहते है।

## वांदणा सूत्र के २५ आवश्यक

(१) १ यथाजात (२) २ अवनत (३) ४ शीर्षनमन (४) १२ आवर्त्त (५) ३ गुप्ति (६) २ प्रवेश (७) १ निष्क्रमण

## राजनगर प्रश्नोत्तरी

प्र.८१. श्री जिनेश्वर भगवंत ने धर्म कितने प्रकार के बताये हैं ?

उ. श्री जिनेश्वर भगवंतों ने धर्म दो प्रकार के बताये हैं – १. साधुधर्म,

२. श्रावक धर्म ।

प्र.८२. प्रभु के दर्शन करने से क्या लाभ होता है ?

उ. प्रभु अट्ठारह दोषों से रहित और सर्व गुणों सहित है। अतः उनके दर्शन करने से हमारी आत्मा उनकी तरफ झुकती है, आकर्षित होती है, इससे हमारे दोष जाते है और गुण प्रगट होते है। संक्षेप में प्रभु के दर्शन से प्रभु जैसे गुण आते है और दोष चले जाते है ।

प्र.८३. कल्याणक यानि क्या ? उनके नाम बताओ –

उ. कल्याणक यानि कल्याण करनेवाले दिन। अर्थात् जिन दिनों में तीर्थंकर परमात्मा देवगति में से अथवा नरकगति में से च्यवन पाकर माता की कुक्षि में आते है, जन्म पाते है, दीक्षा लेते है, केवलज्ञान पाते है और मोक्ष जाते है वे पवित्र दिन –

१. च्यवन, २. जन्म, ३. दीक्षा, ४. केवलज्ञान, ४. मोक्ष ये पांच कल्याणक है ।

प्र.८४. श्री महावीर प्रभु के पाँच कल्याणक कब कब हुए ?

उ.

| | |
|---|---|
| च्यवन कल्याणक | अषाढ शुक्ल ६ |
| जन्म कल्याणक | चैत्र शुक्ल १३ |
| दीक्षा कल्याणक | मागसर वद १० |
| केवलज्ञान कल्याणक | वैशाख शुक्ल १० |
| मोक्ष कल्याणक | कारतक वद ०)) अमावस |

**नोंध** - मारवाडी तिथि अनुसार ।

प्र.८५. त्रिषष्ठि (६३) शलाका पुरुष कौन कौन है ?

उ. २४ तीर्थंकर, ९ वासुदेव, ९ बलदेव ९ प्रतिवासुदेव, १२ चक्रवर्ती।

प्र.८६. ज्यादा से ज्यादा और कम से कम तीर्थंकर केवलज्ञानी एवं साधु कितनी संख्या में विचरते है ?

उ. ज्यादा से ज्यादा तीर्थंकर १७०, केवलज्ञानी ९ करोड और साधु ९ हजार

करोड..... (९० अरब) विचरते है। कम से कम तीर्थंकर २०, केवलज्ञानी २ क्रोड, और साधु दो हजार क्रोड (२० अरब) विचरते है।

प्र.८७. तीनों लोक में शाश्वत मंदिर कितने है ?

उ. ८,५७,००,२८२ – आठ करोड, ५७ लाख, दो सौ बयासी।

प्र.८८. तीनो लोक में शाश्वत प्रतिमाएं कितनी है ?

उ. १५,४२,५८,३६,०८० – पंदरह अरब, बयालीस करोड, अठ्ठावन लाख, छैंतीस हजार, अस्सी।

प्र.८९. थोय जोडे के प्रत्येक गाथामें किन किन की स्तुति होती है ?

उ. पहली गाथा में जो मुख्य भगवान होते है उन भगवान की
दूसरी गाथा में सर्व श्री जिनेश्वर भगवंतो की.
तीसरी गाथा में ज्ञान की
चौथी गाथा में शासन के अधिष्ठायक देव देवियों की स्तुति होती है।

प्र.९०. मुँहपत्ती (मुखवस्त्रिका), चरवला, कटासन यानि क्या ? वे कितने माप के होते है ?

उ. मुँहपत्ती याने सामायिक प्रतिक्रमण में बोलते वक्त मुख के आगे रखने का कपडा, जो एक वेंत और चार अंगुल प्रमाण होता है। चरवला यानि आते-जाते उठते-बैठते जीवरक्षा करने का उपकरण, वह बत्तीस अंगुल प्रमाण होता है। उसमें चौबीस अंगुली की दांडी और आठ अंगुली प्रमाण दशी होती है (ऊन के धागे)।
कटासन यानि बैठने के लिए गरम आसन वह एक गज का होता है।
ये उपकरण जीवरक्षा के लिये रखे जाते है।

● ● ●

# मौखिक कक्षा ८

| | | |
|---|---|---|
| **सूत्र** : | अतिचार : सातमे स्थूल से पूर्ण... | १० |
| **काव्य** : | स्नात्रपूजा : सांभळो कळश जिन... पूर्ण | १५ |
| | प्रभुवीर का सत्तावीस भव का स्तवन | |
| **पच्चक्खाण :** | एकासणा, बियासणा, आयंबिल | १० |
| | तिविहार - चउविहार उपवास | |
| **विधि** : | पक्खि प्रतिक्रमण की | १० |
| | मुद्रा : योग, जिन, मुक्ताशुक्ति | |
| | (प्रेकटीकल करके बताना होगा) | ५ |
| कक्षा१ से कक्षा ७ का संपूर्ण पुनरावर्तन | | ५० |
| | | १०० |

## श्रावक का अतिचार

सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रते भोजन आश्रयी पांच अतिचार अने कर्महुंती पंदर अतिचार एवं वीस अतिचार.

**सच्चित्ते पडिबद्धे०** सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं. अपक्काहार, दुप्पक्काहार, तुच्छौषधितणुं भक्षण कीधुं, ओला, उंबी, पोंक, पापडी खाधां.

सच्चित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु,
वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि न्हाण भत्तेसु ॥१॥

ए चौद नियम दिनगत रात्रिगत लीधा नहि, लईने भांग्या, बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकाय मांहि आदु, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालु, कचूरो, सूरण, कुणी आंबली, गलो, वाघरडां खाधां. वाशी कठोळ, पोली रोटली, त्रण

दिवसनुं ओदन लीधुं, मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फळ, टींबरुं, गुंदा, महोर, बोळ अथाणुं, आंबलबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधां, लगभग वेळाए वाळु कीधुं, दिवस विण उगे शीराव्या. तथा कर्मत:पन्नर कर्मादान, इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडिकम्मे, फोडिकम्मे ए पांच कर्म, दंतवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे ए पांच वाणिज्य, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असइपोसणया, ए पांच सामान्य, ए पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य एवं पन्नर कर्मादान बहु सावद्य, महारंभ, रांगण, लीहाला कराव्या, इंट निभाडा पकाव्या, धाणी, चणा, पकवान्न करी वेच्यां, वाशी माखण तवाव्यां, तिल वहोर्या, फागण मास उपरांत राख्या, दलीदो कीधो, अंगीठा कराव्या, श्वान, बिलाडा, सूडा, सालहि पोष्या. अनेरां जे कांई बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचर्यां, वाशी गार राखी, लींपणे, गुंपणे महारंभ कीधो, अणशोध्या चूला संघ्रुक्या, घी, तेल, गोळ, छाश तणां भाजन उघाडां मूक्यां, ते मांहि माखी, कुंती, उंदर,गरोळी पडी, कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी. सातमे भोगोपभोग विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥७॥

आठमे अनर्थदंड विरमण व्रते पांच अतिचार.

**कंदप्पे कुक्कुइए०** कंदर्प्प लगे विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां, पुरुष स्त्रीना हावभाव, रूप, श्रृंगार, विषयरस वखाण्यां, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराई तांत कीधी, तथा पैशुन्यपणुं कीधुं, आर्तरौद्रध्यान ध्यायां.

खांडा, कटार, कोश, कुहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घंटी, निसाह, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली दाक्षिण्यलगे माग्यां आप्यां, पापोपदेश कीधो, अष्टमी चतुर्दशीए खांडवा दळवातणा नियम भांग्या, मुखरपणा लगे असंबद्ध वाक्य बोल्या प्रमादाचरण सेव्यां.

अंघोले, न्हाणे, दातणे, पग धोअणे, खेल, पाणी तेल छांट्यां, झीलणे झील्या, जुगटे रम्या, हिंचोळे हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां, कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां, कर्कश वचन बोल्या, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा, करकडा मोड्या, मच्छर धर्यो, संभेडा लगाड्या, श्राप दीधा.

भेंसा, सांढ, हुडु, कूकडा, श्वानादिक झूझार्या, झूझता जोया, खादि लगे अदेखाई चिंतवी, माटी, मीठुं कण, कपासीया काज विण चांप्या, ते उपर बेठा, आली वनस्पति खूंदी, सूइ शस्त्रादिक निपजाव्यां, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्यु हानि वांछी. आठमे अनर्थदंड विरमण व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥८॥

नवमे सामायिक व्रते पांच अतिचार.

**तिविहे दुप्पणिहाणे०** सामायिक लीधे मने आहट्टदोहट्ट चितव्युं, सावद्य वचन बोल्यां, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेळाए सामायिक न लीधुं, सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्या, ऊंघ आवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी, वीज दीवातणी उज्जेहि हुइ, कण, कपासीया, माटी मीठुं, खडी, धावडी, अरणेटो, पाषाण प्रमुख चांप्या, पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरियक्काय, बीयक्काय इत्यादिक आभड्यां, स्त्री तिर्यंच तणा निरंतर परंपर संघट्ट हुआ, मुहपत्तिओ संघट्टी, सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारवुं विसार्युं. नवमे सामायिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥९॥

दशमे देशावगाशिक व्रते पांच अतिचार.

**आणवणे पेसवणे०** आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहिया पुग्गलपक्खेवे नियमित भूमिका मांहि बाहेरथी कांई अणाव्युं, आपण कन्हे थकी बाहिर कांई मोकल्युं, अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी आपणपणुं छतुं जणाव्युं. दशमे देशावगाशिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१०॥

अग्यारमे पौषधोपवास व्रते पांच अतिचार.

**संथारुच्चारविहि०** अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि, पोसह लीधे संथारातणी भूमि न पूंजी, बाहिरलां लहुडां वडां स्थंडिल दिवसे शोध्यां नहि, पडिलेह्यां नहि, मात्रु अणपूज्युं हलाव्युं, अणपूंजी भूमिकाए परठव्युं, परठवतां ''अणुजाणह जस्सुग्गहो'' न कह्यो, परठव्या पूंठे वार त्रण ''वोसिरे वोसिरे'' न कह्यो. पोसहशाळा मांहि पेसतां ''निसीहि'' निसरतां ''आवस्सहि'' त्रण वार भणी नहि. पुढवी, अप्, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप, उपद्रव हुआ, संथारा पोरिसीतणो विधि भणवो विसार्यो, पोरिसिमांहे उंघ्या, अविधे संथारो पाथर्यो, पारणादिकतणी चिंता कीधी, काळवेळाए देव न वांद्या, पडिक्कमणुं न कीधुं, पोसह असूरो लीधो, सवेरो पार्यो, पर्व तिथिए पोसह लीधो नहि. अग्यारमे पौषधोपवास व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥११॥

बारमे अतिथि संविभाग व्रते पांच अतिचार.

**सच्चित्ते निक्खिवणे०** सचित्त वस्तु हेठ उपर छतां महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं, देवानी बुद्धिए असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं परायुं फेडी आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धिए सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं. आपणुं फेडी परायुं कीधुं, वहोरवा वेळा टळी रह्या, असूर करी महात्मा तेड्या. मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे भक्ति न साचवी, छती शक्तिए स्वामीवात्सल्य न कीधुं, अनेरा धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तिए उद्धर्यां नही, दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपा दान न दीधुं. बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१२॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार.

**इहलोए परलोए०** इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, इहलोके धर्मना प्रभाव लगे राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार वांछ्या. परलोके देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्तितणी पदवी वांछी, सुख आवे जीवितव्य वांछ्युं, दुःख आवे

संयम अर्थात् आधि, व्याधि, उपाधि से त्रस्त लोगों के लिए विश्राम वृक्ष.

मरण वांछ्युं, काम भोगतणी वांछा कीधी. संलेषणा विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१३॥

तपाचार बार भेद छ बाह्य, छ अभ्यंतर.

**अणसण मुणोअरिया०** अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथिए छती शक्तिए कीधो नही, ऊणोदरी व्रत ते कोळिया पांच सात ऊणा रह्या नहि, वृत्ति संक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं, रसत्याग ते विगई त्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादिक कष्ट सहन कर्यां नहि, संलीनता ते अंगोपांग संकोची राख्यां नहि. पच्चक्खाण भांग्यां. पाटलो डगडगतो फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढ, एकासणुं, बिआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसतां नवकार न भण्यो, उठतां पच्चक्खाण करवुं विसार्युं, गंठसीयुं भाग्युं. नीवी, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुओ, बाह्य तप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥१४॥

अभ्यंतर तप.

**पायच्छित्तं विणओ०** मनशुद्धे गुरुकन्हे आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायश्चित तप लेखा शुद्धे पहोंचाड्यो नहीं, देव, गुरु, संघ, साहम्मी प्रत्ये विनय साचव्यो नहि, बाळ, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वेयावच्च न कीधुं, वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां, आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्यायां, कर्मक्षय निमित्ते लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो. अभ्यंतर तप विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि०॥१५॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार.

**अणिगूहिअ बलवीरिओ०** पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, कायातणुं छतुं बळ, छतुं वीर्य गोपव्युं. रूडां पंचांग खमासमण न दीधा, वांदणां तणा आवर्तविधि साचव्या नहीं, अन्यचित्त निरादरपणे बेठा, उतावळुं

देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं, वीर्याचार विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि०॥ १६॥

नाणाइ अट्ठ पइवय, सम्म संलेहण पण पन्नर कम्मेसु,
बारस तपवीरिअतिगं, चउव्वीससयं अइयारा.

**पडिसिद्धाणं करणे०** प्रतिषेध अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादिक कीधां, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्‌ह्या नहि. आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद मिथ्यात्वशल्य ए अढार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्य प्रतिक्रमण विनय वेयावच्च न कीधां. अनेरुं जे कांई वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं अनुमोद्युं होय. ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सवि हु मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.॥ १७॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बार व्रत एकसो चोवीस अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.

## काव्य : स्नात्रपूजा

**ढाळ कडखानी देशी**

सांभळो कळश जिन महोत्सवनो ईहां,
छप्पन कुमरी दिशि विदिशि आवे तिहां;
माय सुत नमीय, आनंद अधिको धरे,
अष्ट संवर्त्त वायुथी कचरो हरे. १

तप कर्मरूपी लकड़ी को जलानेवाली प्रबल अग्नि.

वृष्टि गंधोदके, अष्ट कुमरी करे,
अष्ट कलशा भरी, अष्ट दर्पण धरे;
अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही,
चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही. २

घर करी केळना, माय सुत लावती,
करण शुचिकर्म जळ कळशे न्हवरावती;
कुसुम पूजी, अलंकार पहेरावती;
राखडी बांधी जई, शयन पधरावती. ३

नमीय कहे माय तुज बाळ लीलावती,
मेरु रवि चन्द्र लगे, जीवजो जगपति;
स्वामी गुण गावती, निज घर जावती,
तेणे समे ईन्द्रसिंहासन कंपती. ४

**ढाळ एकवीशानी देशी**

जिन जन्म्याजी, जिण वेळा जननी घरे,
तिण वेळाजी, ईन्द्र सिंहासन थरहरे;
दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा,
दिशिनायकजी, सोहम इशान बिहुं तदा. १

**त्रोटक छंद**

तदा चिंते ईन्द्र मनमां कोण अवसर ए बन्यो,
जिनजन्म अवधिनाणे जाणी हर्ष आनंद उपन्यो;
सुघोष आदे घंटनादे घोषणा सुरमें करे,
सवि देवी देवा जन्म महोत्सवे आवजो सुरगिरिवरे. २

**(यहा घंट बजाऐ)**

**ढाळ**

एम सांभळीजी, सुरवर कोडी आवी मळे,
जन्म महोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले;
सोहमपतिजी, बहु परिवारे आवीया,
माय जिननेजी, वांदी प्रभुने वधावीया. ३

**(यहा प्रभु को अक्षत से वधाये)**

**त्रोटक छंद**

वधावी बोले हे रत्नकुक्षी धारिणी तुज सुततणो,
हुं शक्र सोहम नामे करशुं, जन्म महोत्सव अति घणो;
एम कही जिनप्रतिबिंब थापी, पंचरूपे प्रभु ग्रही,
देवदेवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही. ४

**ढाल**

मेरु उपरजी, पांडुकवन में चिहुं दिशे,
शिला उपरजी, सिंहासन मन उल्लसे;
तिहां बेसीजी, शक्रे जिन खोळे धर्या,
हरि त्रेसठजी, बीजा तिहां आवी मळ्या. ५

**त्रोटक छंद**

मळ्या चोसठ सुरपति तिहां, करे कळश अड जातिना,
मागधादि जळतीर्थ औषधि, धूप वळी बहु भातिना;
अच्युतपतिए हुकम कीनो, सांभळो देवा सवे,
खीरजलधि गंगा नीर लावो, झटिति जिन जन्म महोत्सवे. ६

**ढाळ विवाहलानी देशी**

सुर सांभळीने संचरीया, मागध वरदामे चलीया;
पद्मद्रह गंगा आवे, निर्मल जळकळशा भरावे. १

तीरथजळ औषधि लेता, वळी खीरसमुद्रे जाता;
जळकळशा बहुल भरावे, फूल चंगेरी थाळा लावे. २

सिंहासन चामर धारी, धूपधाणां रकेबी सारी;
सिद्धांते भाख्या जेह, उपकरण मिलावे तेह. ३

ते देवा सुरगिरि आवे, प्रभु देखी आनंद पावे;
कळशादिक सहु तिहां ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे. ४

**ढाळ राग धन्याश्री**

आतमभकित मळ्या केई देवा, केता मित्तनुजाई,
नारीप्रेर्या वळी निज कुलवट, धर्मी धर्मसखाई;
जोईस व्यंतर भवनपतिना, वैमानिक सुर आवे,
अच्युतपति हुकमे धरी कळशा, अरिहाने नवरावे. १

अडजाति कळशा प्रत्येके, आठ आठ सहस प्रमाणो,
चउसठ सहस हुआ अभिषेके, अढीसें गुणा करी जाणो;
साठ लाख उपर एक कोडी, कळशानो अधिकार,
बासठ ईन्द्र तणा तिहां बासठ, लोकपालना चार. २

चन्द्रनी पंक्ति छासठ छासठ, रविश्रेणि नरलोको,
गुरुस्थानक सुर केरो एकज, सामानिकनो एको;
सोहमपति ईशानपतिनी, इन्द्राणीना सोळ,
असुरनी दश इन्द्राणी, नागनी बार करे कल्लोल. ३

जयोतिष व्यंतर ईन्द्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको,
कटकपति अंगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको;
परचुरण सुरनो एक छेल्लो, ए अढीसें अभिषेको,
इशान ईन्द्र कहे मुज आपो, प्रभुने क्षण अतिरेको. ४

तव तस खोळे ठवी अरिहाने, सोहमपति मनरंगे,
वृषभ रूप करी शृंग जळे भरी, न्हवण करे प्रभु अंगे;
पुष्पादिक पूजीने छांटे, करी केसर रंग रोले,
मंगळदीवो आरती करतां, सुरवर जय जय बोले. ५

भेरी भुंगळ ताल बजावत, वळिया जिन कर धारी,
जननी घर माताने सोंपी, एणीपरे वचन उच्चारी;
'पुत्र तुमारो, स्वामी हमारो, अम सेवक आधार;
पंच धावी रंभादिक थापी, प्रभु खेलावण हार. ६

बत्रीस कोडी कनक मणि माणेक, वस्त्रनी वृष्टि करावे,
पूरण हर्ष करेवा कारण, द्वीप नंदीसर जावे;
करीय अठ्ठाई उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे,
दीक्षा केवलने अभिलाषे, नित नित जिन गुण गावे. ७

तपगच्छ इसर सिंहसूरीश्वर, केरा शिष्य वडेरा,
सत्यविजय पंन्यासतणे पद, कपूरविजय गंभीरा;
खिमाविजय तस सुजसविजयना, श्री शुभविजय सवाया,
पंडित वीरविजय शिष्ये, जिन जन्म महोत्सव गाया. ८

उत्कृष्टा एकसो ने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश,
अतीत अनागत काले अनंता, तीर्थंकर जगदीश;
साधारण ए कळश जे गावे, श्री शुभवीर सवाई,
मंगळलीला सुखभर पावे, घर घर हर्ष वधाई. ९

## श्री महावीरप्रभु का सत्तावीशभव का स्तवन

(१)

श्रीशुभविजय सुगुरु नमी, नमी पद्मावतीमाय;
भव सत्तावीश वर्णवुं, सुणतां समकित थाय. १

समकित पामे जीवने, भव गणतीए गणाय;
जो वळी संसारे भमे, तो पण मुगते जाय. २

वीर जिनेश्वर साहेबो, भमीयो काळ अनंत;
पण समकित पाम्या पछी, अंते थया अरिहंत. ३

**(ढाळ पहेली)**

पहेले भवे एक गामनो रे, राय नामे नयसार;
काष्ट लेवा अटवी गयो रे, भोजनवेळा थाय रे,
प्राणी! धरिये समकित रंग, जिम पामिये सुख अभंग रे,
प्राणी! धरिये समकित रंग. १

मन चिंते महिमा नीलो रे, आवे तपसी कोय;
दान देई भोजन करुं रे, तो वांछित फळ होय रे. प्राणी० २

मारग देखी मुनिवरा रे, वंदे देई उपयोग;
पूछे केम भटको इहां रे? मुनि कहे सार्थवियोग रे. प्राणी० ३

हरखभेर तेडी गयो रे, पडिलाभ्या मुनिराज;
भोजन करी कहे चालीए रे, सार्थ भेळां करुं आज रे. प्राणी० ४

पगवटीये भेळां कर्या रे, कहे मुनि द्रव्य ए मार्ग
संसारे भूला भमो रे, भावमारग अपवर्ग रे. प्राणी० ५

देव गुरु ओळखावीयां रे, दीधो विधि नवकार;
पश्चिम महाविदेहमां रे, पाम्यो समकित सार रे. प्राणी० ६

शुभध्याने मरी सुर हुओ रे, पहेला स्वर्ग मोझार;
पल्योपम आयु च्यवी रे, भरत घरे अवतार रे. प्राणी० ७

नामे मरीचि यौवने रे, संयम लीये प्रभु पास;
दुष्कर चरण लही थयो रे, त्रिदंडिक शुभ वास रे. प्राणी० ८

**(ढाळ बीजी)**

नवो वेष रचे तेणी वेळा, विचरे आदीश्वर भेळा,
जळ थोडे स्नान विशेषे पग पावडी भगवे वेषे. १

धरे त्रिदंड लाकडी म्होटी, शिर मुंडण ने धरे चोटी;
वळी छत्र विलेपन अंगे, थूलथी व्रत धरतो रंगे. २

सोनानी जनोई राखे, सहुने मुनिमारग भाखे;
समोसरणे पूछे नरेश, कोई आगे होशे जिनेश. ३

जिन जंपे भरतने ताम, तुज पुत्र मरिचि नाम;
वीर नामे थशे जिन छेल्ला, आ भरते वासुदेव पहेला. ४

चक्रवर्ती विदेहे थाशे, सुणी आव्या भरत उल्लासे;
मरीचिने प्रदक्षिणा देता नमी वंदीने एम कहेता. ५

तमे पुन्याईवंत गवाशो, हरि चक्री चरमजिन थाशो;
नवि वंदुं त्रिदंडिक वेष, नमुं भक्तिये वीरजिनेश. ६

एम स्तवना करी घर जावे, मरीचि मन हर्ष न मावे;
म्हारे त्रण पदवीनी छाप, दादा जिन चक्री बाप. ७

अमे वासुदेव धुर थईशुं, कुल उत्तम म्हारुं कहीशुं;
नाचे कुळमदशुं भराणो, नीचगोत्र तिहां बंधाणो. ८

एक दिन तनु रोगे व्यापे, कोई साधु पाणी न आपे;
त्यारे वंछे चेलो एक, तव मळियो कपिल अविवेक. ९

देशना सुणी दीक्षा वासे, कहे मरीचि लीयो प्रभु पासे;
राजपुत्र कहे तुम पासे, लेशुं अमे दीक्षा उल्लासे. १०

तुम दरशने धरमनो व्हेम, सुणी चिंते मरीचि एम;
मुज योग्य मळ्यो ए चेलो, मूळ कडवे कडवो वेलो. ११

मरीचि कहे धर्म उभयमां, लीये दीक्षा यौवन वयमां;
एणे वचने वध्यो संसार, ए त्रीजो कह्यो अवतार. १२

लाख चोराशी पूरव आय, पाळी पांचमे स्वर्गे सिधाय;
दश सागर जीवित त्यांही, शुभवीर सदा सुखमांही. १३

**(ढाळ त्रीजी)**

पांचमे भव कोल्लागसन्निवेश, कौशिक नामे ब्राह्मण वेष;
एंशीलाखपूरव अनुसरी, त्रिदंडीयाने वेषे मरी. १

---

पाठशाला अर्थात् विनय, विवेक, वैराग्य, विरति का पाठ पढानेवाला स्थान.

काळ बहु भमीयो संसार, थुणापुरी छट्ठो अवतार;
बहोंतेरलाख पूरवने आय, विप्र त्रिदंडी वेष धराय. २

सौधर्मे मध्यस्थितिए थयो, आठमे चैत्य सन्निवेषे गयो;
अग्निद्योत द्विज त्रिदंडीयो, पूर्व आयु लाख साठे मूओ. ३

मध्यस्थितिये सुर स्वर्ग इशान, दशमे मंदिरपुर द्विजठाण;
लाखछप्पनपूरवायुधरी अग्निभूति त्रिदंडीक मरी. ४

त्रीजे सरगे मध्यायु धरी, बारमे भवे श्वेतांबीपुरी;
पूरवलाख चुम्माळीश आय, भारद्विज त्रिदंडीक थाय. ५

तेरमे चोथे स्वर्गे रमी, काळ घणो संसारे भमी;
चउदमे भव राजगृही जाय, चोत्रीशलाख पूरवनुं आय. ६

थावर विप्र त्रिदंडी थयो, पांचमे स्वर्गे मरीने गयो;
सोळमे भव क्रोड वरसनुं आय, राजकुमार विश्वभूति थाय. ७

संभूतिमुनि पासे अणगार, दुष्करतप करी वरस हजार;
मासखमण पारणे धरी दया, मथुरामां गोचरीए गया. ८

गाये हण्या मुनि पडीया वसा, विशाखानंदी पितरिया हस्या;
गौशृंगे मुनि गरवे करी, गयण उछाळी धरती धरी. ९

तप बळथी होजो बळ धणी, करी नियाणुं मुनि अणसणी;
सत्तरमे महाशुक्रे सुरा, श्रीशुभवीर सत्तरसागरा. १०

**(ढाळ चोथी)**

अढारमे भवे सात, सुपन सूचितसती,
पोतनपुरीये प्रजापति, राणी मृगावती;
तस सुत नामे त्रिपृष्ठ, वासुदेव नीपन्या,
पाप घणुं करी, सातमी नरके उपन्या. १

वीशमे भव थई सिंह, चोथी नरके गया,
तिहांथी चवी संसारे, भव बहुलां थया;

बावीशमे नरभव लही, पुण्य दशा वर्या,
त्रेवीशमे राजधानी, मूकाए संचर्या. २

राय धनंजय धारणी राणीए जनमिया,
लाखचोराशी पूरव आयु जीविआ;
प्रियमित्र नामे चक्रवर्ती दीक्षा लही,
कोडी वरस चारित्रदशा पाळी सही. ३

महाशुक्रे थई देव इणे भरते च्यवी,
छत्रिका नगरीए जितशत्रु राजवी;
भद्रामाय लख पचवीश वरस स्थिति धरी,
नंदननामे पुत्रे दीक्षा आचरी. ४

अगीयारलाखने एंशीहजार छस्सें वळी,
उपर पीस्ताळीश अधिक पण दिन रूळी;
वीशस्थानक मासखमणे, जावज्जीव साधता,
तीर्थंकर नामकर्म तिहां निकाचता. ५

लाखवरस दीक्षापर्याय ते पाळता,
छव्वीशमे भव प्राणतकल्पे देवता;
सागरवीशनुं जीवित सुखभर भोगवे,
श्रीशुभवीरजिनेश्वर भव सुणजो हवे. ६

**(ढाळ पांचमी)**

नयर माहणकुंडमां वसे रे, महाऋद्धि ऋषभदत्त नाम;
देवानंदा द्विज श्राविका रे, पेट लीधो प्रभु विसराम रे,
पेट लीधो प्रभु विसराम. १

ब्याशी दिवसने अंतरे रे, सुर हरिणगमेषी आय;
सिद्धारथ राजा घरे रे, त्रिशलाकूखे छटकाय रे. २

नव मासांतरे जनमीया रे, देव देवीए ओच्छव कीध;
परणी यशोदा यौवने रे, नामे महावीर प्रसिद्ध रे. ३

संसारलीला भोगवी रे, त्रीस वर्षे दीक्षा लीध;
बार वरसे हुआ केवळी रे, शिववहुनुं तिलक शिर दीध रे. ४

संघ चतुर्विध थापीयो रे, देवानंदा ऋषभदत्त प्यार;
संयम देई शिव मोकल्यां रे, भगवतीसूत्रे अधिकार रे. ५

चोत्रीश अतिशय शोभता रे, साथे चउद सहस अणगार,
छत्रीस सहस ते साधवी रे. बीजो देव देवी परिवार रे. ६

त्रीस वरस प्रभु केवळी रे, गाम नगर ते पावन कीध;
बहोंतेर वरसनुं आउखुं रे, दिवाळीये शिवपद लीध रे. ७

अगुरुलघु अवगाहने रे, कीयो सादि अनंत निवास;
मोहराय मल्ल मूळशुं रे, तन मन सुखनो होय नाश रे. ८

तुम सुख एकप्रदेशनुं रे, नवि मावे लोकाकाश;
तो अमने सुखीया करो रे, अमे धरीये तुमारी आश रे. ९

अक्षयखजानो नाथनो रे, में दीठो गुरु उपदेश;
लालच लागी साहेबा रे, नवि भजीये कुमतिनो लेश रे. १०

म्होटानो जे आशरो रे, तेथी पामीये लील विलास;
द्रव्य भाव शत्रु हणी रे, शुभवीर सदा सुखवास रे. ११

॥ कळश ॥

ओगणीश एके वरस छेके, पूर्णिमा श्रावण वरो;
में थुण्यो लायक विश्वनायक, वर्धमानजिनेश्वरो,
संवेग रंग तरंग झीले, जसविजय समता धरो;
शुभविजयपंडित चरण सेवक वीरविजयो जयकरो. १

# पच्चक्खाण

## आयंबिल, नीवि, एकासणुं, बियासणुं

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, सूरे उग्गए पुरिमुड्ढ मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि), उग्गए सूरे, चउव्विहं पि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि वत्तियागारेणं, आयंबिलं नीव्विगइओ विगईओ पच्चक्खाइ, (पच्चक्खामि,) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एगासणं, बियासणं, पच्चक्खाइ (पच्चक्खामि.) तिविहं पि आहारं असणं, खाईमं, साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ. (वोसिरामि.)

## तिविहार उपवास

सूरे उग्गए, अब्भतट्ठं पच्चक्खाई, तिविहं पि आहारं, असणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरई. (वोसिरामि)

## चउविहार उपवास

सूरे उग्गए, अब्भतट्ठं पच्चक्खाई चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई. (वोसिरामि)

# पाक्षिक (पक्खी) प्रतिक्रमण की विधि

१ प्रथम देवसिअ प्रतिक्रमण मे वंदित्तु आए वहाँ तक सब कहना चाहिए, परंतु चैत्यवंदन सकलार्हत् और स्तुति थोय स्नातस्या की कहनी चाहिए, उसके बाद एक खमासमण दे।

२ फिर देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं, कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करें फिर दो बार वांदणा दे।

३ उसके बाद इच्छाकारेण संदिसह भग० संबुद्धा खामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स, पनरस राइ - दियाणं जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं कहे।

४ फिर इच्छाकारेण संदि० भग० पक्खिअं आलोउं ? इच्छं आलोएमि जो मे पक्खिओ अईयारो कओ कहकर -

५ उसके बाद इच्छा० संदि० भग० पक्खी अतिचार आलोउं? इच्छं, यह कहकर पक्खी अतिचार संपूर्ण कहे।

६ उसके बाद सव्वस्सवि पक्खिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, इच्छा० संदि० भग० इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं कहकर -

७ फिर इच्छाकारी भगवन् ! पसाय करी पक्खी तप प्रसाद करशोजी चउत्थेणं, एक उपवास, दो आयंबिल, तीन नीवि, चार एकासणां, आठ बियासणां, दो हजार स्वाध्याय यथाशक्ति तप करके पहुँचाना।

८ फिर प्रवेश किया हो तो 'पइट्ठिओ' कहे और यदि करना चाहते हो तो 'तहत्ति' कहे तथा न करना हो तो मौन रहे ।

९ उसके बाद दो वांदणा देकर, इच्छा० संदि० भग० पत्तेअ खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स, पनरस राइदियाणं जंकिंचि आपत्तिअं० कहकर श्री सकल संघ को मिच्छा मि दुक्कडं बोले, फिर दो वांदणा दे।

१० फिर 'देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छा० भगवन्० पक्खिअं पडिक्कमुं ?' सम्मं पडिक्कमामि ऐसा बोले।

११ करेमि भंते० इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ० कहकर, फिर
१२ खमासमण देकर, इच्छा० संदि० भग० पक्खि सूत्र पढुं ? इच्छं कहकर तीन नवकार गिने। (साधु भगवंत हो तो पक्खीसूत्र कहे) और साधु भगवंत न हो तो श्रावक वंदित्तु सूत्र कहे, उसके बाद सुअदेवया की थोय कहे।
१३ उसके बाद नीचे बैंठकर दाया घुटना खडा रखकर एक नवकार गिनकर, करेमि भंते० इच्छामि पडि० कहकर वंदित्तु बोलें। फिर
१४ करेमि भंते० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर १२ लोगस्स का काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा तक न आता हो तो अडतालीस नवकार का काउस्सग्ग करे।
१५ पारकर प्रगट लोग्सस कहें, मुंहपत्ति पडिलेहण करके दो वांदणा दे, फिर इच्छा० संदि० भग० समत्त खामणेणं अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एक पक्खस्स पनरस राइ-दियाणं जंकिंचि अपत्तिअं कहेना चाहिए।
१६ उसके बाद खमासमण देकर इच्छा० पक्खि खामणा खामुं ? इच्छं, कहकर चरवले पर हाथ स्थापन करके चार खामणा खामना, पहेले, दूसरे और चोथे खामणा मे इच्छामि खमासमणो कहकर १ नवकार गिनकर सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि कहना। और तीसरे खामणां में इच्छामि खमासमणो कहकर १ नवकार गिनकर 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडम्' कहना।
१७ फिर देवसिअ प्रतिक्रमण में वंदित्तु बोलने के बाद दो वांदणा से लेकर सामायिक पारते है तब तक सब विधि करे, परन्तु 'सुअदेवया' तथा 'जिसे खित्ते' की थोय के बदले 'ज्ञानादि' तथा 'यस्याः क्षेत्रं' की थोय बोले। स्तवन अजितशांति का बोले। सज्झाय के स्थान पर नवकार, उवसग्गहरं तथा संसार दावानल की चार थोय बोलें। और लघु शांति के स्थान पर बड़ी शांति बोलें फिर अंत में संतिकरं बोले। फिर दैवसिक प्रतिक्रमण की विधि अनुसार सामायिक पारे।

# लेखित कक्षा १

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | दो प्रतिक्रमण (पाना नं. १ से ४<br>१२ से १६,<br>२९ से ३८,<br>४७ से ५३)<br>स्नातस्या (पाना नं. ६५)<br>संतिकरं (पाना नं. ६६) |
| **अर्थ** | : | नवकार से सामाईय वयजुत्तो (पाना नं. ३८, ३९, ४०, ५४, ५५, ६७, ८३, १००, १०१) |
| **विधि** | : | राई प्रतिक्रमण की विधि (पाना नं. १११) |
| **चैत्यवंदन** | : | श्री सीमंधर जगधणी (गाथा ५) (पाना नं. ६९)<br>श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र (पाना नं. ८५) |
| **स्तवन** | : | सुणो चंदाजी (पाना नं. ७०)<br>विमलाचल नितु वंदीए (पाना नं. ८५) |
| **थोय** | : | श्री सीमंधर जिनवर (गाथा १) (पाना नं. ७१)<br>शत्रुंजय मंडण (गाथा १) (पाना नं. ८६) |
| **दोहा** | : | श्री सीमंधरस्वामी के तीन (पाना नं. ६९)<br>शत्रुंजय के ५ (पाना नं. ८४) |
| **रत्नाकर पच्चीसी** | : | १ से ५ (पाना नं. ९) |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | ३१ से ६० (पाना नं. ४४, ५९, ७२) |

# लेखित कक्षा २

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | सकलार्हत् (पाना नं. ६२),<br>अजितशान्ति (पाना नं. ७५) |
| **अर्थ** | : | जगचिंतामणि से संसारदावा |
| **विधि** | : | देवसि प्रतिक्रमण की (पाना नं. ८७) |
| **चैत्यवंदन** | : | पर्व पर्युषण गुणनीलो |
| **स्तवन** | : | सुणजो साजन संत (पाना नं. १०२) |
| **थोय** | : | पुण्यनुं पोषण (पाना नं. १०३) |
| **सज्झाय** | : | प्रणमुं तुमारा पाय प्रसन्नचंद्र |
| **रत्नाकर पच्चीसी** | : | ६ से १५ (पाना नं. २२, ४३) |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | ६१ से ९० (पाना नं. ९१, ११५) |

## काव्य विभाग

### पर्युषण पर्व का चैत्यवंदन

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्पी विहार;
चार मासान्तर थिर रहे, एही ज अर्थ उदार. १

अषाढ सुदि चौदश थकी, संवत्सरी पचास;
मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिक्कमतां चौमास. २

श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान;
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एकतान. ३

जिनवर चैत्य जुहारीए, गुरु भक्ति विशाल;
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीए शिव वरमाल. ४

दर्पणथी निज रूपनो, जुवे सुदृष्टि रूप;
दर्पण अनुभव अर्पणो, ज्ञानरमण मुनिभूप. ५

आत्म स्वरूप विलोकतां, प्रगटे मित्र स्वभाव;
राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव. ६

नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा;
पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विराधक नियमा. ७

ए नहि पर्व पंचमी, सर्व समाणी चोथे;
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्युं अरिहा नाथे. ८

श्रुतकेवली वयणां सुणीए, लही मानव अवतार;
श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जयजयकार. ९

## श्री प्रसन्नचंद्र राजर्षी की सजझाय

प्रणमुं तुमारा पाय, प्रसन्नचंद्र प्रणमुं तुमारा पाय;
राज छोडी रळीयामणुं रे, जाणी अथिर संसार
वैरागे मन वाळीयुं रे, लीधो संयम भार. प्रसन्न०१

स्मशाने काउस्सग्ग रह्या रे, पग उपर पग चढाय;
बाहु बे उंचा करी ने, सूरज सामी दृष्टि लगाय. प्रसन्न०२

दुर्मुख दुत वचन सुणी ने, कोप चढ्यो तत्काळ;
मनशुं संग्राम मांडीयो रे, जीव पड्यो जंजाळ. प्रसन्न०३

श्रेणिक प्रश्न पूछे ते समे रे, स्वामी एहनी कुण गति थाय;?
भगवंत कहे हमणां मरे तो, सातमी नरके जाय. प्रसन्न०४

क्षण एक आंतरे पूछीयुं रे, सर्वार्थसिद्ध विमान;
वागी देवनी दुंदुभि रे, ऋषि पाम्या केवळज्ञान. प्रसन्न०५

प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगते गया रे, श्री महावीरना शिष्य:
रूपविजय कहे धन्य धन्य, दीठा सूत्र मांहे ए प्रत्यक्ष. प्रसन्न०६

# लेखित कक्षा ३

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | अतिचार (पाना नं. ९४, ११८),<br>बडीशान्ति (पाना नं. ८०) |
| **अर्थ** | : | पुक्खरवरदी से वंदित्ता तक |
| **विधि** | : | पक्खी (पाना नं. १३४), चउमासी,<br>संवत्सरी और छींक के काउस्सग्ग की |
| **चैत्यवंदन** | : | कल्पतरुवर कल्पसूत्र (पाना नं. १०२) |
| **स्तवन** | : | हालरडुं (माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे रे.) |
| **थोय** | : | मणिरचित सिंहासन (१ थी ४ गाथा) |
| **सज्झाय** | : | जगत हे स्वार्थ का साथी |
| **रत्नाकर पच्चीसी** | : | १६ से २५ गाथा |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | ९१ से १२० |

## विधि

### चउमासी प्रतिक्रमण की विधि (पक्खी की विधि पाना नं. १३४)

इसमें पक्खी की विधि के अनुसार करें। परन्तु इतना विशेष रूप से ध्यान रखे कि १२ लोगस्स के काउस्सग्ग के स्थान पर २० लोगस्स का काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा तक करें तथा 'पक्खि' शब्द के बदले 'चउमासी' शब्द कहें। तथा तप में छट्ठेणं, दो उपवास, चार आयंबिल, छह नीवि, आठ एकासणां, सोलह बेयासणां, चार हजार स्वाध्याय कहे।

### संवत्सरी प्रतिक्रमण की विधि

इसमें पक्खी की विधि के अनुसार करें। परन्तु इतना विशेष ध्यान

रखे कि १२ के काउस्सग्ग के स्थान पर ४० लोगस्स का काउस्सग्ग 'चंदेसु निम्मलयरा' तक तथा ऊपर एक नवकार अथवा १६० नवकार का काउस्सग्ग करे। तप के स्थान पर अट्ठम भत्तेणं, तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ नीवि, बारह एकासणां, चौबीस वियासणां, छह हजार स्वाध्याय कहें तथा पक्खी शब्द के बदले संवत्सरी(संवच्छरी) शब्द कहें।

## पक्खी, चउमासी और संवत्सरी प्रतिक्रमण में छींक आऐ तो

प्रतिक्रमण में अतिचार कें पहेल छींक आई हो तो चैत्यवंदन से फिरसे शुरू करे और दुक्खक्खओ-कम्मक्खओ से पहेले छींक आए तो छींक का काउस्सग्ग सज्झाय करने के बाद करें और मांगलिक के लिए श्री सकलचंद्रजी उपाध्याय भगवंत रचित सत्तरभेदी पूजा करवानी चाहिए।

## छींक के काउस्सग्ग की विधि

एक खमासमण देकर इरियावहियं से काउस्सग्ग करके लोगस्स कहे, फिर एक खमासमण देकर इच्छा० संदि० भग० क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं काउस्सग्ग करुं ?, इच्छं, क्षुद्रोपद्रव ओहड्डावणत्थं करोमि काउस्सग्गं, अन्नथ० कहकर चार लोगस्स 'सागरवरगंभीरा तक (ना आए तो १६ नवकारका काउस्सग्ग करें), और नीचेकी थोय कहे।

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने,
क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः॥१॥

फिर लोगस्स बोलकर आगेकी विधि करें।

### काव्य विभाग

## स्तवन (श्री महावीरस्वामी भगवान का हालरडा)

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे,
गावे हालो हालो हालरवाना गीत;

सोना रूपाने वळी रत्ने जडीयुं पारणुं,
रेशम दोरी घुघरी वागे छुमछुम रीत,
हालो हालो हालो हालो मारा नंदने रे. हालो० १

जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसे अंतरे,
होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिनपरिमाण;
केशीस्वामी मुखथी एहवी वाणी सांभली,
साची साची हुई ते म्हारे अमृतवाण. हालो० २

चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज,
वीत्या बारे चक्री नहि हवे चक्रीराज;
जिनजी पासप्रभुना श्रीकेशी गणधार,
तेहने वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज. हालो० ३

म्हारी कूखे आव्या त्रण भुवन शिरताज,
म्हारी कूखे आव्या तारण तरण जहाज;
म्हारी कूखे आव्या संघतीरथनी लाज,
हुं तो पुन्य पनोती इन्द्राणी थई आज. हालो० ४

मुजने दोहलो उपन्यो बेसुं गज अंबाडीए,
सिंहासन पर बेसुं चामर छत्र धराय;
ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहारा तेजना,
ते दिन संभारुं ने आनंद अंग न माय. हालो० ५

करतल पगतल लक्षण एक हजार ने आठ छे;
तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश;
नंदन! जमणी जंघे लंछन सिंह बिराजतो,
में तो पहेले स्वप्ने दीठो विशवावीश. हालो० ६

नंदन! नवला बंधव नंदिवर्धनना तमे,
नंदन! भोजाईओना दीयर छो सुकुमाल;
हसशे भोजाईओ कही दीयर मारा लाडका,

हसशे रमशे ने वळी चूंटी खणशे गाल,
हसशे रमशे ने वळी ठुंसा देशे गाल. हालो० ७

नंदन! नवला चेडा राजाना भाणेज छो,
नंदन! नवला पांचशे मामीना भाणेज छो;
नंदन! मामलीयाना भाणेजा सुकुमाळ,
हसशे हाथ उछाळी कहीने न्हाना भाणेजा,
आंखो आंजीने वळी टपकुं करशे गाल. हालो० ८

नंदन! मामा मामी लावशे टोपी आंगलां,
रतने जडीआं झालर मोती कसबी कोर,
नीलां पीळां ने वळी रातां सर्वे जातिना,
पहेरावशे मामी माहरा नंदकिशोर. हालो० ९

नंदन! मामा मामी सुखलडी बहु लावशे,
नंदन! गजवे भरशे लाडु मोतीचूर,
नंदन! मुखडां जोईने लेशे मामी भामणां,
नंदन! मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर. हालो० १०

नंदन! नवला चेडा मामानी साते सती,
म्हारी भत्रीजी ने बहेन तमारी नंद;
ते पण गजवे भरवा लाखणसाई लावशे,
तमने जोई जोई होशे अधिको परमानंद. हालो० ११

रमवा काजे लावशे लाख टकानो घुघरो,
वळी सूडा मेना पोपट ने गजराज;
सारस हंस कोयल तीतर ने वळी मोरजी,
मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज. हालो० १२

छप्पनकुमरी अमरी जलकळशे नवरावीआ,
नंदन! तमने अमने केली घरनी मांही;
फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मांडले,
'बहु चिरंजीवो' आशिष दीधी तुमने त्यांही. हालो० १३

तमने मेरुगिरि पर सुरपतिए नवरावीआ,
निरखी निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय;
मुखडा उपर वारू कोटी कोटी चंद्रमा,
वळी तन पर वारू ग्रहगणनो समुदाय. हालो० १४

नंदन! नवला भणवा निशाळे पण मूकशुं,
गजपर अंबाडी बेसाडी म्होटे साज;
पसली भरशुं श्रीफल फोफळ नागरवेलशुं,
सुखलडी लेशुं निशाळीयाने काज. हालो० १५

नंदन! नवला म्होटा थाशो ने परणावशुं,
वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार;
सरखा वेवाई वेवाणोने पधरावशुं,
वरवहु पोंखी लेशुं जोई जोइने देदार. हालो० १६

पीयर सासर म्हारा बेउ पख नंदन उजळा,
मारी कूखे आव्या तात पनोता नंद;
म्हारे आंगणे वुठ्या अमृत दूधे मेहुला,
म्हारे आंगणे फलीआ सुरतरु सुखना कंद. हालो० १७

इणि परे गायुं माता त्रिशलासुतनुं पारणुं.
जे कोई गाशे लेशे पुत्रतणा साम्राज्य,
बीलीमोरा नगरे वर्णव्युं वीरनुं हालरूं,
जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज. हालो० १८

## पर्युषण पर्व की थोय

मणिरचित सिंहासन, बेठा जगदाधार,
पर्युषण केरो, महिमा अगम अपार,
निजमुखथी दाखी, साखी सुरनरवृंद,
ए पर्व पर्वमां, जिम तारामां चंद. १

नागकेतुनी परे, कल्प साधना कीजे,
व्रत नियम आखडी, गुरुमुख अधिकी लीजे,
दोय भेदे पूजा, दान पंच प्रकार,
कर पडिक्कमणां धर, शीयल अखंडित धार. २

जे त्रिकरण शुद्धे, आराधे नव वार,
भव सात आठ नव, शेष तास संसार,
सहु सूत्र शिरोमणि, कल्पसूत्र सुखकार,
ते श्रवणे सुणीने, सफळ करो अवतार. ३

सहु चैत्य जुहारी, खमत खामणां कीजे,
करी साहम्मिवत्सल, कुगति द्वारपट दीजे,
अट्ठाई महोत्सव, चिदानंद चित्तलाई,
ईम करतां संघने, शासनदेव सहाई. ४

## वैराग्य की सज्झाय

जगत हे स्वार्थ का साथी, समज ले कौन है अपना;
ये काया काचका कुंभा, नाहक तुं देखके फुलता,
पलकमें फुट जावेगा, पता ज्युं डालसे गिरता. जगत०१

मनुष्यकी एसी जींदगानी, अब तुं चेत अभिमानी;
जीवनका क्या भरोसा है, करी ले धर्म की करणी. जगत० २

खजाना माल ने मिलकत,तुं क्युं कहेता मेरा मेरा;
इहां सब छोड जाना है, न आवे साथ अब तेरा. जगत० ३

कुटुंब परिवार सुत दारा, सुपन सम देख जग सारा;
निकल जब हंस जावेगा, उसी दिन है सभी न्यारा. जगत० ४

तरे संसार सागर को, जपे जो नाम जिनवर को;
कहे खान्ति वही प्राणी, हठावे कर्म जंजीर को. जगत० ५

# लेखित कक्षा ४

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | तिजयपहुत्त, भक्तामर |
| **अर्थ** | : | आयरिय उवजझाय से सकलतीर्थ |
| **विधि** | : | पौषध लेने की, पौषध लेने का पच्चक्खाण, पडिलेहण की, देववंदन की, |
| **स्तवन** | : | २७ भव की ढाळ पहेली (पाना नं. १२७), दूसरी, दोहा : श्री शुभविजय सुगुरु नमी, (१) पहेले भवे, (२) नवो वेष रचे |
| **थोय** | : | जय जय भविहितकर |
| **सजझाय** | : | अईमुत्तामुनि की (बाळकुमार वाळी) |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | १२१ से १३९ |

## पौषध लेने की विधि

### पोसह में जरूरी उपकरण

(१) दिन के पोसह के लिए :-- (१) मुहपत्ति, (२) कटासणा, (३) चरवला, (४) शुद्ध धोती, (५) मातरीया की धोती, (६) खेस, (७) कंदोरा, (८) कामली, (९) खेलीया (ऊन का रूमाल), (१०) दंडासण, (११) पूंजणी, (१२) सुपड़ी, (१३) अचित्त पानी, (१४) मात्रु की कुंडी, (१५) लोटा / गिलास. (१६) स्वाध्याय के लिए पुस्तक आदि.

(२) रात्रि पौषध के लिए :-- उपरोक्त उपकरणों के अलावा (१७) ओढने की कांबली (१८) संथारीया (१९) उत्तरपट्टा (२०) रूई के कुंडल (२१) चूने का अचित्त पानी.

१ प्रथम आवश्यक उपकरणों के साथ पौषधशाला में जाकर गुरु

महाराज हों तो वन्दन करें.

२ **स्थापनाचार्यजी** न हों तो **नवकार** और **पंचिंदिय सूत्र** से **स्थापनाचार्यजी** की स्थापना करें.

३ फिर **इरियावहियं प्रतिक्रमण** कर--

४ **खमा...इच्छा...पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं** कहकर **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करके--

५ **खमा...इच्छा...पोसह संदिसाहुं? इच्छं** कहकर--

६ **खमा...इच्छा...पोसह ठाउं? इच्छं** कहकर, एक **नवकार** गिनकर, **इच्छकारि...पोसह दंडक उच्चरावोजी** कहें.

७ फिर **गुरु महाराज** / वडील **पोसार्थी** / या स्वयं **पोसह दंडक सूत्र** कहें.

८ फिर **सामायिक** लेने की विधि के अनुसार, आदेश मांगकर, **सामायिक मुहपत्ति** के **पडिलेहण** से **सज्झाय** के तीन **नवकार** तक करें.

९ (**राइअ प्रतिक्रमण** न किया हो तो पहले **प्रतिक्रमण** करें, फिर **पडिलेहण** करें. **प्रतिक्रमण** कर लिया हो तो आगे की विधि करें.)

१० **फिर खमा...इच्छा...बहुवेल संदिसाहुं? इच्छं** कहकर--

११ **खमा...इच्छा...बहुवेल करशुं? इच्छं** कहें.

१२ फिर **पडिलेहण** करें.

## पौषध लेने का पच्चक्खाण

करेमि भंते! पोसहं, आहार पोसहं देसओ सव्वओ, शरीर-सक्कार पोसहं सव्वओ, बंभचेर पोसहं सव्वओ, अव्वावार पोसहं सव्वओ चउव्विहं, पोसहं ठामि, जाव दिवसं (अहोरत्तं) पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि.

## प्रातःकालीन पडिलेहण की विधि

१ (**पौषध** लेकर **राइअ प्रतिक्रमण** किया हो तो ही **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करके--)

२ **खमा...इच्छा...पडिलेहण करूं? इच्छं** कहकर, **मुहपत्ति** ५० बोल से,

**चरवला** १० बोल से, **कटासना** २५ बोल से, **कंदोरा** १० बोल से एवं **धोती** २५ बोल से **पडिलेहण** करें. फिर **धोती** पहनकर, **कंदोरा** बांधकर--

३ **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

४ फिर **खमा...इच्छकारि...पडिलेहणा पडिलेहावो जी! इच्छं** कहकर, **स्थापनाचार्यजी** का **पडिलेहण** करें. **मुनि भगवंत** हों तो वे करें; स्थापित **स्थापनाचार्यजी** हों तो फिर से **स्थापन** करें अथवा वडील का **खेस पडिलेहें.**)

५ **खमा...इच्छा...उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं** कहकर **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करें.

६ **खमा...इच्छा...उपधि संदिसाहुं? इच्छं** कहकर--

७ **खमा...इच्छा...उपधि पडिलेहुं? इच्छं** कहकर प्रथम **खेस** फिर शेष सर्व वस्त्र एवं **उपकरण** का **पडिलेहण** करें.

८ **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करके **काजा** लें.

९ फिर **इरियावहियं प्रतिक्रमण** कर, **अणुजाणह जस्सुग्गहो** कहकर, **काजा** को निर्जीव स्थान में परठवे, **वोसिरे** तीन बार कहें.

## शाम के पडिलेहण की विधि

खमा० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुन्ना पोरिसि ? खमा० इरिया० पडि० खमा० पडिलेहण करूं ? इच्छं खमा० इच्छा० पोसहशाला प्रमार्जु ? इच्छं० कहकर उपवास किया हो तो पडिक्कमामि० खमा० इच्छकारि भग० पसाय करके पडिलेहणा पडिलेहावोजी खमा० इच्छा० उपधि-मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं खमा० इच्छा० सज्झाय करुं ? इच्छं कहकर एक नवकार गिनकर 'मन्हजिणाणं' की सज्झाय कहे, खाया हो तो वांदणां देकर खमा० इच्छकारी भग० पसाय करके पच्चक्खाण का आदेश देनाजी कहकर पाणहार का पच्चक्खाण करें, खमा० इच्छा० उपधि संदिसाहुं ? इच्छं० खमा० इच्छा० उपधि पडिलेहुं ? इच्छं कहकर बाकी के वस्त्र पडिलेहन करके काजा लेकर शुद्ध करके परठवे उसके बाद देववंदन करे।

## देववंदन की विधि

प्रथम इरियावही पडिक्कमामि से लोगस्स कहकर उत्तरासन डालकर, चैत्यवंदन, नमुत्थुणं कहकर, अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग करे. फिर नमोऽर्हत० एक थोय फिर लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० काउस्सग्ग, दूसरी थोय, पुक्खरवरदी सुअस्स० अन्नत्थ० काउ० तीसरी थोय, सिद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग नमोऽर्हत्० चौथी थोय, फिर नमुत्थुणं कहकर आगे जैसे फिर चार थोय कहे, फिर नमुत्थुणं तथा जावंति, खमा० और जावंत के वि साहू कहे, नमोऽर्हत्, स्तवन, आधा जय वीयराय आभवमखंडा तक कहे. फिर चैत्यवंदन करे, नमुत्थुणं कहकर संपूर्ण जयवीयराय कहे, फिर एक खमासमण देकर चरवला के उपर हाथ रखकर अविधि आशातना मिच्छा मि दुक्कडं कहे।

### काव्य विभाग

## श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय

जय जय भवि हितकर, वीरजिनेश्वर देव,
सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव,
करुणारस कंदो, वंदो आनंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुणमणि केरो खाणी. १

जस पंचकल्याणक, दिवस विशेष सुहावे,
पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे,
ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण,
सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण. २

जिहां पंच समितियुत, पंच महाव्रत सार,
जेहमां प्रकाश्यां, वळी पांचे व्यवहार,

परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञने पार,
एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार. ३

मातंग सिद्धाई, देवी जिनपद सेवी,
दु:ख दुरित उपद्रव जे टाळे नितमेवी,
शासन सुखदाई, आई सुणो अरदास,
श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वांछित आश. ४

## श्री अईमुत्ता मुनि की सज्झाय

संयम रंगे रंग्यु जीवन, नानो बालकुमार वंदो अइमुत्ता अणगार. १

गौतम स्वामी गोचरी जावे, नाना बालकने मन भावे,
प्रेम थकी निज घेर बोलावे, भाव धरी मोदक वहोरावे.
मारे पण गौतम सम थावुं, एम करे विचार. वंदो. २

मननी ईच्छा पुरण कीधी, मातपितानी आज्ञा लीधी,
राज्यतणी ऋद्धिने छोडी, गौतम पासे दीक्षा लीधी,
रहे उमंगे गुरुने संगे वहेता संयम भार. वंदो. ३

तलावडी जलनी एक आवी, बालमुनिने! मन बहु भावी,
पात्र तणी नौका खेलावी, गुरुने देखी लज्जा आवी,
अणघटतुं कारज कीधुं ते, पाम्या क्षोभ अपार. वंदो.४

समवसरणमां प्रभुजी सामे, इरियावही पडिक्कमी प्रमाणे,
चार कर्मनी गति विरामे, केवल ज्ञान तिहां मुनि पामे,
देव देवी सहु उत्सव करता, वर्त्यो जयजयकार. वंदो.५

क्षणमां सघळा कर्म खपाव्यां, एवा अइमुत्ता मुनिराया ,
भव्यजीवोने बोध पमाडी, अंते मुक्तिपुरी सीधाया
ज्ञान विमल कहे मुनिने! वंदे, थाये बेडो पार. वंदो.६

# लेखित कक्षा ५

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | नमिउण, कल्याण मंदिर |
| **अर्थ** | : | स्नातस्या, संतिकरं |
| **विधि** | : | पच्चक्खाण पारने की, पौषध पारने की, २४ मांडला, पौषध के अढार दोष, सागरचंदो |
| **स्तवन** | : | २७ भव की ढाळ त्रीजी, चोथी (३पांचमे भवे, ४अढारमे भवे सात) (पाना नं. १२९-१३०) |
| **थोय** | : | मनोहर मूर्ति महावीर तणी |
| **सज्झाय** | : | जुओ रे जुओ जैनो केवा व्रतधारी |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | १४० से १७५ |

## विधि विभाग

### पच्चक्खाण पारने की विधि

१. प्रथम **इरियावहियं प्रतिक्रमण** करें.

२. फिर **खमा... इच्छा... चैत्य-वन्दन करूं? इच्छं** कहकर, **जग-चिंतामणि, जं किंचि, नमुत्थु णं, जावंति चेइ, खमा..., जावंत के वि, नमोर्हत्, उवसग्ग-हरं**, एवं **जय वीयराय सूत्र** कहें.

३. फिर **खमा... इच्छा... सज्झाय करूं? इच्छं** कहकर, **नवकार, मन्नह जिणाणं** एवं **नवकार** कहें.

४. फिर **खमा... इच्छा... मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं** कहकर, **मुहपत्ति** का **पडिलेहण** करें.

५. फिर **खमा... इच्छा... पच्चक्खाण पारुं ? यथा-शक्ति** एवं **खमा... इच्छा... पच्चक्खाण पार्युं ! तहत्ति** कहकर--

प्रतिक्रमण अर्थात् पाप के मार्ग से विमुख होना.

६. दायां हाथ **चरवले / कटासणे** पर रखकर **नवकार, पच्चक्खाण पारने का सूत्र** एवं **नवकार** कहें.

## पौषध पारने की विधि

दिन के पौषधवाले शाम को प्रति० के बाद समय हो तब खमा० ईरिया० पडि० चउक्कसायसे जयवीयराय तक बोले. खमा० इच्छा० संवि० भग० मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कहकर मुहपत्ति पडिलेहण करे खमा० ईच्छा० संदि० भग० पौषध पारुं ? यथाशक्ति, खमा० संदि० भग० पोषध-पारा, तहत्ति बोलकर चरवले पर दाया हाथ स्थापित कर एक नवकार गिने, पौषध पालने का सूत्र बोले (पेज नं. १५३) खमा० इच्छा० संदि० भग० मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कहकर मुहपत्ति का पडिलेहन करे खमा० इच्छा० सामायिक पारू ? यथाशक्ति खमा० ईच्छा० सामायिक पार्यु, तहत्ति बोलकर चरवले पर दाया हाथ स्थापित कर नवकार बोलकर 'सामईय वयजुत्तो' कहे.

रात्रि पोषध वाले प्रतिक्रमण के बाद रात्रि में १ प्रहर बाद संथारा पोरिसि करे. उसके बाद संथारे शयन करे (जगह पूंजकर) आखरी प्रहर जागकर नवकार गिनकर मात्रुकी शंका हो तो निवारण करके राई प्रति० करे. फिर समय हो तब पडिलेहण देववंदन करे और उपधि गृहस्थों के साथ मिला ले, समय होते ही पौषध पालने की विधि करे.

## २४ मांडला की विधि

१. आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.

२. आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.

३. आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

४. आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे.

५. आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

६. आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

बीजीवार छ मांडलामां 'अणहियासे' ने बदले 'अहियासे' बोलवुं त्यारपछी बीजा बार मांडलामां 'आघाडे' ने बदले 'अणाघाडे' कहेवुं बाकी उपर प्रमाणे ज कहेवुं. टूंकमां बधा मलीने २४ मांडला करवां.

## पौषध के अढार दोष

१. पौषध में अविरतिधर द्वारा लाए आहार-पाणी का उपयोग करना ।

२. पौषध निमित्त रस भरपूर आहार लेना ।

३. उत्तरवायणा के दिन विविध प्रकार की सामग्री खाना ।

४. पौषध के निमित्त अगले दिन देह की विभूषा करना ।

५. पौषध के निमित्त वस्त्रों को धुलाना ।

६. पौषध के निमित्त आभूषण धारण करना ।

७. पौषध के निमित्त से वस्त्रों को रंगाना ।

८. पौषध में शरीर का मेल उतारना ।

९. पौषध में विहित समय के सिवाय निद्रा लेना (रात्री के दूसरे प्रहर में संथारा-पोरिसी पढाकर सोना विहित है) ।

१०. पौषध में स्त्री संबंधी अच्छी या बूरी कथा करना ।

११. पौषध में आहार को अच्छा या बूरा कहना ।

१२. पौषध में अच्छी या बूरी राज कथा या युद्ध कथा करना ।

१३. पौषध में देशकथा करना ।

१४. पौषध में प्रमार्जन व पडिलेहण किये बिना लघुनीति या वडीनीति जाना।

१५. पौषध में किसी की निंदा करना ।

१६. पौषध में माता, पिता, पुत्र, भाई, स्त्री विगेरे संबंधीयों के साथ वार्तालाप

करना ।

१७. पौषध में चोर संबंधी बाते करना ।

१८. पौषध में स्त्री के अंग-उपांग को देखना ।

## सागरचंदो (पौषध पारने का सूत्र)

सागर चंदो कामो, चंदवडिंसो, सुदंसणो धन्नो;
जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीविअंते वि. १

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा, आणंद कामदेवा य;
जास पसंसई भयवं, दृढव्वयत्तं महावीरो. २

पोसह विधिए लीधो, विधिए पार्यो, विधि करतां जे कोई अविधि हुई होय ते सवि हुं मन, वचन, कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.

पोसहना अढार दोष मांहे जे कोई दोष लाग्यो होय, ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडं.

## श्री महावीरस्वामी भगवान की थोय

मनोहर मूर्ति महावीरतणी, जिणे सोल पहोर देशना पभणी,
नव मल्ली नव लच्छि नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवनधणी. १

शिव पाम्यां ऋषभ चउदश भत्ते, बावीश लह्या शिव मासस्थिते,
छट्ठे शिव पाम्या वीर वळी, कार्तिक वदि अमावास्या निरमली. २

आगामी भावी भाव कह्यां, दीवाळी कल्पे जेह लह्यां,
पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्यां, सवि तहत्ति करीने सद्दह्यां. ३

सवि देव मळी उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे,
ज्ञानविमल सदा गुण विस्तरे, जिनशासनमां जयकार करे. ४

# धर्म दृढता की सज्झाय

जुओ रे जुओ जैनो केवा व्रतधारी,
केवा व्रतधारी आगे थया नरनारी;
थया नरनारी तेने वंदना अमारी.
वंदना अमारी तेने वंदना हमारी. १

जुओ जुओ जंबूस्वामी, बाळ वये बोध पामी;
तजी भोग रिद्धि जेणे, तजी आठ नारी. २

गजसुकुमाल मुनि, धखे शिर पर धूणी;
अडग रह्या ते ध्याने, डग्या ना लगारी. ३

कोश्याना मंदिर मध्ये, रह्या मुनि स्थूलीभद्र;
वेश्या संग वासो तोये, थया ना विकारी. ४

सती ते राजुलनारी, जगमां न जोडी एनी;
पतिव्रता काजे कन्या, रही ते कुंवारी. ५

जनकसुता ते सीता, बार वर्ष वनमां वीत्या;
घणुं कष्ट वेठ्युं तोये, डग्या ना लगारी. ६

धन्य धन्य नरनारी, एवी दृढ टेक धारी;
जीवित सुधार्युं जेणे, पाम्या भव पारी. ७

एवुं जाणी सुज्ञजनो, एवा उत्तम आप बनो;
वीरविजय धर्म प्रेमे, दीए गति सारी. ८

# लेखित कक्षा ६

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | जीवविचार |
| **अर्थ** | : | जीवविचार, सकलार्हत् |
| **स्नात्र** | : | स्नात्रनी विधि, सरस शान्ति सुधारस से शुभ लग्ने जिन... (पाना नं. १०४) |
| **स्तवन** | : | २७ भवकी ढाळ पांचवी (नयर महाणकुंडमां) (पाना नं. १३१) |
| **थोय** | : | प्रह उठी वंदु.. |
| **सज्झाय** | : | आप स्वभाव में अवधु रे |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | १७६ से २१० |

## काव्य विभाग

### श्री सिद्धचक्र की थोय

प्रह ऊठी वंदुं, सिद्धचक्र सदाय,
जपीये नवपदनो, जाप सदा सुखदाय,
विधिपूर्वक ए तप, जे करे थई उजमाळ,
ते सवि सुख पामे, जिम मयणा श्रीपाळ. १

मालवपति पुत्री, मयणा अतिगुणवंत,
तस कर्मसंयोगे, कोढी मळियो कंत,
गुरुवयणे तेणे, आराध्युं तप एह,
सुखसंपद वरीया, तरीया भवजल तेह. २

आंबिल ने उपवास, छट्ठ वळी अट्ठम,
दश अट्ठाई पंदर, मास छमास विशेष,

इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार,
जे भवियण करशे, ते तरशे संसार. ३

तप सांनिध्य करशे, श्री विमळेश्वर यक्ष,
सहु संघना संकट, चूरे थई प्रत्यक्ष,
पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य,
बुध दर्शनविजय कहे, पहोंचे सकळ जगीश. ४

## आतम भाव की सज्झाय

आप स्वभावमां रे, अवधू सदा मगनमें रहेना;
जगत जीव है करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना. आ० १

तुं नहिं केरा कोई नहिं तेरा, क्यां करे मेरा मेरा;
तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सब अनेरा. आ० २

वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनका विलासी;
वपु संग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी. आ० ३

राग ने रीसा दोय खविसा, ए तुम दु:खका दीसा;
जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा. आ० ४

परकी आशा सदा निराशा, ए है जगजन पासा;
वो काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा, आ० ५

कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी;
कबहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी. आ० ६

शुद्ध उपयोग ने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी;
कर्म कलंक कुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी. आ० ७

# लेखित कक्षा ७

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | नवतत्त्व |
| **अर्थ** | : | नवतत्त्व |
| **स्तवन** | : | पंचकल्याणक की पहेली ढाळ<br>(दोहे : शासननायक शिवकरण,<br>सांभळजो ससनेहि सयणां) |
| **थोय** | : | जीवाजीव पुन्नं |
| **सजझाय** | : | (बुढापे की) जोईतुं नथी जोइतुं नथी |
| **स्नात्रपूजा** | : | सांभळो कळश से पूर्ण तक (पाना नं. १२३) |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | २११ से २६१ |

## काव्य विभाग

## श्रीमहावीरस्वामी भगवान का पंचकल्याणक का स्तवन

**दुहा**

शासननायक शिवकरण, वंदुं वीरजिणंद;
पंचकल्याणक जेहना, गाशुं धरी आणंद. १

सुणतां थुणतां प्रभुतणां, गुण गिरुआ एक तार;
ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफल हुवे अवतार. २

**ढाळ : (१)**

सांभळजो ससनेहि सयणां, प्रभुजीना चरित्र उल्लासे रे;
जे सांभळशे प्रभु गुण तेहनां, समकित निर्मळ थाशे रे. सां० १

जंबूद्वीपे दक्षिणभरते, वर माहणकुंड गामे रे,
ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामे रे. सां० २

अषाढसुदि छट्ठे प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी चवीया रे;
उत्तराफाल्गुनी योगे आवी, तस कूखे अवतरीया रे. सां० ३

तिण रयणी सा देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे रे;
प्रभाते सुणी कंत ऋषभदत्त, हैडामांही हरखे रे. सां० ४

भाखे भोग अर्थ सुख होस्ये, होस्ये पुत्र सुजाण रे;
ते निसुणी सा देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाण रे. सां० ५

भोग भला भोगवतां विचरे, एहवे अचरिज होवे रे;
शतक्रतु जीव सुरेसर हरख्यो, अवधि प्रभुने जोवे रे. सां० ६

करी वंदनने इन्द्र सन्मुख, सात आठ पग आवे रे;
शक्रस्तव विधिसहित भणीने, सिंहासन सोहावे रे. सां० ७

संशय पडीयो एम विमासे, जिन चक्री हरि राम रे;
तुच्छ दरिद्र माहणकुल नावे, उग्र भोग विण धाम रे. सां० ८

अंतिम जिन माहणकुल आव्या, एह अच्छेरुं कहीए रे;
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एहवुं लहीए रे. सां० ९

इण अवसर्पिणी दश अच्छेरां, थयां ते कहीए तेह रे;
गर्भहरण गोशाला उपसर्ग, निष्फळ देशना जेह रे. सां० १०

मूलविमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात रे;
ए श्रीवीरजिणेसर वारे, उपना पंच विख्यात रे. सां० ११

स्त्रीतीर्थ मल्लिजिन वारे, शीतलने हरिवंश रे;
ऋषभने अट्ठोत्तरसो सीध्यां, सुविधि असंजति शंस रे. सां० १२

शंखशब्द मीलीयां हरि हरिस्युं, नेमिसरने वारे रे;
तिम प्रभु नीच कुले अवतरीया, सुरपति एम विचारे रे. सां०१३

## नव तत्त्व की थोय

जीवाजीवा पुन्य ने पावा, आश्रव संवर तत्ता जी,
सातमे निर्जरा आठमे बंध, नवमे मोक्षपद सत्ता जी,
ए नवतत्ता समकित सत्ता, भाखे श्री अरिहंता जी,
भूजनयर मंडण रिसहेसर, वंदो ते भगवंता जी. १

धम्माधम्मागासा पुग्गल, समया पंच अजीवा जी,
नाण विनाण शुभाशुभ योगे, चेतन लक्षण जीवा जी,

इत्यादिक षट् द्रव्य प्ररूपक, लोकालोक दिणंदा जी,
प्रह ऊठी नित्यनमिये विधिशुं, सित्तरिसो जिनचंदा जी. २
सूक्ष्म बादर दोय एकेन्द्रिय, बी ती चउरिन्द्रि दुविहा जी,
तिविहा पंचिंदा पज्जता, अपज्जता ते विविहा जी,
संसारी असंसारी सिद्धा, निश्चय ने व्यवहार जी,
पन्नवणादिक आगम सुणतां, लहीए शुद्ध विचार जी. ३
भुवनपति व्यंतरज्योतिषवर, वैमानिक सुरवृन्दा जी,
चोवीश जिनना यक्ष यक्षिणि, समकितदृष्टि सुरिंदा जी,
भूजनगर महिमंडळ सघळे, संघ सकल सुख करजो जी,
पंडित मानविजय इम जंपे, समकितगुण चित्त धरजो जी. ४

## बुढापे की सज्झाय

जोईतुं नथी जोईतुं नथी, जोईतुं नथी रे, अल्या जीवडा,
घडपण मारे जोईतुं नथी रे.
हाथमां छे लाकडी ने, पगमां छे पावडी,
दांत विना मोढुं साव खोखुं, अल्या जीवडा. घडपण...१
पहेरवी पडशे धाबळी ने, पीवी पडशे राबडी,
शरीर थयुं साव खोखुं, अल्या जीवडा. घडपण...२
सूवा तूटेल खाटलो ने, थूंकवा फूटेल माटली,
खांसी आवे तो थाय ठुंठुं, अल्या जीवडा. घडपण...३
कर रह्यां केडे ने, पग रह्यां बापजी,
शरीर कंपे अने पग डोले, अल्या जीवडा. घडपण...४
वहुओ कहे छे, फूटो मरतो नथी डोकरो,
वहुओ कहे छे, फूटी मरती नथी डोकरी,
मरे तो घर थाय चोख्खुं, अल्या जीवडा. घडपण...५
चोराशी लाखनां फेरा फरीने, मानवभवनो देह धरीने,
हारी ना जईश तुं आज, अल्या जीवडा. घडपण...६
वीरविजयजी एणी पेरे बोले, नहीं कोई आतम सरीखो तोले,
रत्नचिंतामणि आव्युं हाथ, अल्या जीवडा. घडपण...७

# लेखित कक्षा ८

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | दंडक प्रकरण, लघुसंग्रहणी |
| **अर्थ** | : | दंडक प्रकरण, लघुसंग्रहणी |
| **चैत्यवंदन** | : | कल्पवृक्षनी छांयडी |
| **थोय** | : | श्री आदि जिनवर राया (१ थी ४) |
| **स्तवन** | : | प्रथम जिनेश्वर प्रणमीये |
| **पंचकल्याणकनी ढाळ** | : | बीजी (भव सत्तावीश स्थूलमांही) |
| **हितशिक्षा छत्रीसी** | : | १ से ९ |
| **राजनगर प्रश्नोत्तरी** | : | २६२ से २८७ |

## काव्य विभाग

**श्री आदीश्वर भगवान का चैत्यवंदन**

कल्पवृक्षनी छांयडी, नानडीयो रमतो;
सोवन हिंडोळे हिंचतो, माताने मनगमतो. १

सौ देवी बालक थई, ऋषभजीने तेडे;
व्हाला लागो छो कही, हैडे शुं भीडे. २

जिनपति यौवन पामीया, भावे शुं भगवान;
इन्द्रे घाल्यो मांडवो, विवाहनो मंडाण. ३

चोरी बांधी चिहुं दिशे, सुरगोरी गीत गावे;
सुनंदा सुमंगला, प्रभुजीने परणावे. ४

सकल संग छंडी करी, केवळज्ञानने पामे;
अष्टकर्मनो क्षय करी, पहोंच्या शिवपुर धामे. ५

भरते बिंब भरावीया ए, शत्रुंजय गिरिराय;
श्रीविजयप्रभसूरितणा, उदयरत्न गुण गाय. ६

## श्री आदिश्वर भगवान का स्तवन

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधि रे काय,
कल्पवृक्ष परे तास इन्द्राणी नयन जे, भृंगपरे लपटाय. १

रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वाद,
तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोई नवि करे, जगमां तुमशुं रे वाद.२

वगर धोई तुज निरमळी, काया कंचनवान,
नहि प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान. ३

राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय,
रुधिर आमिषथी राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय. ४

श्वासोश्वास कमळ समो, तुज लोकोत्तर वात,
देखे न आहार निहार, चरमचक्षुधणी, एहवा तुज अवदात. ५

चार अतिशय मूळथी, ओगणीश देवना कीध,
कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध.६

जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग,
पद्मविजय कहे एह समय प्रभु पाळजो, जेम थाउं अक्षय अभंग.७

## श्री महावीरस्वामी भगवान का पंचकल्याणक का स्तवन

**ढाळ (२)**

भव सत्तावीश स्थूलमांही त्रीजे भवे,
मरिचि कीयो कुल मद भरत यदा स्तवे;
नीचगोत्र करम बांध्युं तिहां ते थकी,
अवतरीया माहणकुले अंतिमजिनपति. १

अति अघटतुं एह थयुं थाशे नहीं,
जे प्रसवे जिन चक्री नीचकुले नहीं;
इहां मारो आचार धरुं उत्तमकुले,
हरिणगमेषी देव तेडावे एटले. २

कहे माहणकुंडनयरे जई उचित करो,
देवानंदाकूखेथी प्रभुने संहरो,
नयरक्षत्रियकुंड रायसिद्धारथगेहिनी,
त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनी. ३

त्रिशलागर्भ लईने धरो माहणी उरे,
ब्यासीरात वसिने कह्युं तिम सुर करे;
माहणी देखे सुपन जाणे त्रिशला हर्या,
त्रिशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्या. ४

हाथी वृषभ सिंह लक्ष्मी माला सुंदरुं,
शशि रवि ध्वज कुंभ पद्मसरोवर सागरुं;
देवविमान रयणपुंज अग्नि विमल हवे,
देखे त्रिशला एह के पियुने विनवे. ५

हरख्यो राय सुपनपाठक तेडावीया,
राजभोग सुत फल सुणी तेह वधावीया;
त्रिशलाराणी विधिस्युं गर्भ सुखे वहे,
माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे. ६

माय धरे दु:ख जोर विलाप घणुं करे,
कहे में कीधां पाप अघोर भवांतरे;
गर्भ हर्यो मुज कोणे हवे केम पामीए?
दु:खनुं कारण जाणी विचार्युं स्वामीए. ७

अहो अहो मोह विटंबण जालिम जगतमें,
अणदीठे दु:ख एवडो उपायो पलकमें,

ताम अभिग्रहधारे प्रभु ते कहुं,
मात पिता जीवतां संयम नवि ग्रहुं. ८
करुणा आणी अंग हलाव्युं जिनपति,
बोली त्रिशला मात हैये घणुं हसती;
अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सळवळ्यो,
सेव्यो श्रीजिनधर्म के सुरतरुं जिम फल्यो.. ९
सखीयो कहे शिखामण स्वामिनी सांभलो,
हळवे हळवे बोलो हसो रंगे चलो;
इम आनंदे विचरतां दोहला पूरते,
नवमहिना ने साडासात दिवस थते. १०
चैत्र तणी सुद तेरस नक्षत्र उत्तरा (फा.),
जोगे जन्म्या वीर के तव विकसी धरा;
त्रिभुवन थयो उद्योत के रंग वधामणां,
सोना रूपानी वृष्टि करे घेर सुर घणा. ११
आवी छप्पनकुमारी के ओच्छव प्रभुतणे,
चल्युं रे सिंहासन इन्द्र के घंटा रणझणे;
मळी सुरनी कोड के सुरपति आवीयो,
पंचरूप करी प्रभुने सुरगिरि लावीयो. १२
एक क्रोड साठ लाख कलश जलशुं भर्या,
किम सहेस्ये लघुवीर के इन्द्र संशय धर्या;
प्रभु अंगुठे मेरु चांप्यो अति गडगडे,
गडगडे पृथ्वी लोक जगतना लडथडे. १३
अनंत बळी प्रभु जाणी इन्द्रे खमावीओ,
चार वृषभनां रूप करी जल नामीओ,
पूजी अरची प्रभुने माय पासे धरे,
धरी अंगूठे अमृत गया नंदीश्वरे. १४

# हितशिक्षा छत्रीसी

सांभळजो सज्जन नरनारी हितशिखामण सारीजी,
रीस करे देतां शिखामण, भाग्यदशा परवारीजी.

१. सुणजो सज्जन रे, लोक विरुद्ध निवार,
सुणजो सज्जन रे, जगत वडो व्यवहार.

२. मूरख बालक जाचक व्यसनी, कारुं ने वळी नारुं जी,
जो संसारे सदा सुख वंछो तो, चोरनी संगत वारुं जी.

३. वेश्या साथे वणज न करीए, नीचशुं नेह न धरीए जी,
खांपण आवे घर धन जावे, जीवितने परहरीए जी.

४. काम विना पर घर नवि जईए, आळ जाळ न दीजे जी,
बळिया साथे बाथ न भरीए, कुटुंब कलह नवि कीजे जी.

५. दुश्मन शुं परनारी साथे, तजीए वात एकांते जी,
मात बहेन शुं मारग जाता, वात न करीए राते जी.

६. राजा रमणी घरनो सोनी, विश्वासे नवि रहीए जी,
मात पिता गुरु विण बीजाने, गुह्यनी वात न कहीए जी.

७. अणजाण्या शुं गाम न जईए, झाड तळे नव वसिये जी,
हाथी, घोडा, गाडी जातां, दुर्जनथी दूर खसीए जी.

८. रमत करता रीस न करीए, भय मारग नवि जईए जी,
बे जण वात करे जिहां छानी, तिहां उभा नवि रहीए जी.

९. हुंकारा विण वात न करीए, इच्छा विण नवि जमीए जी,
धनविद्यानो मद परिहरिए, नमतां साथे नमीए जी.

साधर्मिक अर्थात् सच्चे देव गुरु धर्म को माननेवाला.

# लेखित कक्षा ९

**मूळ सूत्र** : प्रथम भाष्य,
**अर्थ** : प्रथम भाष्य
**चैत्यवंदन** : ॐ नम: पार्श्वनाथाय
**स्तवन** : राधा जेवा फूलडा
**थोय** : त्रण निसिही (१० त्रिक की)
**पंचकल्याणकनी ढाळ** : त्रीजी (करी महोच्छव सिद्धारथभूप, कळश : इम चरम जिनवर)
**हितशिक्षा छत्रीसी** : १० से १८
**राजनगर प्रश्नोत्तरी** : २८८ से ३३१

## काव्य विभाग

### श्री पार्श्वनाथ भगवान का चैत्यवंदन

ॐ नम: पार्श्वनाथाय, विश्व चिन्तामणीयते;
ह्रीँ धरणेन्द्र वैरुट्या, पद्मादेवीयुताय ते. १

शान्ति तुष्टि महापुष्टि धृति कीर्ति विधायिने;
ॐ ह्रीँ द्विड् व्याल वैताल सर्वाधि-व्याधि-नाशिने. २

जयाऽजिताख्या विजयाख्याऽपराजितयान्वित:
दिशां पालैर्ग्रहैर्यक्षै र्विद्यादेवीभिरन्वित: ३

ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम्;
चतु:षष्टि सुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्र चामरै: ४

श्रीशंखेश्वरमण्डन! पार्श्वजिन! प्रणत कल्पतरुकल्प!
चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ! ५

## श्री पार्श्वनाथ भगवान का स्तवन

राधा(राता) जेवा फूलडां ने, शामळ जेवो रंग;
आज तारी आंगीनो कांई, रूडो बन्यो छे रंग,
प्यारा पासजी हो लाल! दीनदयाळ मुजने नयणे निहाल. १

जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल्ल;
शामळो सोहामणो कांई, जीत्या आठे मल्ल. प्यारा० २

तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास;
आशा पूरो दासनी कांई सांभळी अरदास. प्यारा० ३

देव सघळा दीठां तेमां, एक तुं अवल्ल;
लाखेणुं छे लटकुं ताहरूं, देखी रीझे दिल्ल. प्यारा० ४

कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम;
उदयरत्न कहे प्रभुजी, मारे तुमशुं काम, प्यारा० ५

## दस (१०) त्रिक की थोय

त्रण निसिही त्रण प्रदक्षिणा, त्रण प्रणाम करीजे जी,
त्रण दिशी वरजी जिन जुओ, भूमि त्रण पुंजीजे जी,
त्रण प्रकारनी पूजा करीने, त्रण अवस्था भावीजे जी,
आलंबन त्रण मुद्रा प्रणिधान, चैत्यवंदन त्रण कीजे जी. १

पहले भावजिन द्रव्यजिन बीजे, त्रीजे एकचैत्य धारो जी,
चोथे नामजिन पांचमे सर्वे, लोक चैत्य जुहारो जी,
विहरमान छठ्ठे जिन वंदो, सातमे नाण निहाळो जी,
सिद्ध वीर उज्जंत अष्टापद, शासनसुर संभारो जी, २

शक्रस्तवमां दोय अधिकार, अरिहंत चेइआणं त्रीजे जी,
नामस्तवमां दोय प्रकार, श्रुतस्तव दोय लीजे जी,
सिद्धस्तवमां पांच प्रकार, ए बारे अधिकारजी,
जितनिर्युक्ति मांहे भाख्यो, तेह तणो विस्तार जी, ३

भोयण पाण तंबोल वाहन, मेहुण एक चित्त धारोजी,
थूंक सळेखम वडी लघुनीति, जुगटे रमवुं वारो जी,
ए दसे आशातना मोटी, वरजो जिनवर द्वारो जी,
क्षमाविजय जिन इणिपरे जंपे, शासनसुर संभारो जी, ४

## श्री महावीरस्वामी भगवान की पंचकल्याणक की ढाळ

**ढंळ : (३)**

**(रंग : हमचडीनी देशी)**

करी महोच्छव सिद्धारथभूप, नाम धरे वर्धमान,
दिनदिन वाधे प्रभु सुरतरु, जिम रूपकला असमान रे. हमचडी० १

एक दिन प्रभुजी रमवा कारण, पुर बाहिर जब जावे;
ईंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वीसुर आवे रे. ह० २

अहिरूपे विंटाणो तरुस्युं, प्रभु ए नाख्यो उछाली;
सात ताडनुं रूप कर्युं तव, मुठे नाख्यो वाली रे. ह० ३

पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर;
जेवो इन्द्रे वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीर रे. ह० ४

माता पिता निशाळे मूके, आठ वरसना जाणी;
इन्द्रतणां तिहां संशय टाळ्या, नव व्याकरण वखाणी रे. ह० ५

अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदाराणी;
अट्ठावीश वरसे प्रभुनां मात पिता निर्वाणी रे. ह० ६

दोयवरस भाईने आग्रहे, प्रभु गृहवासे वसीया;
धर्मपंथ देखाडो ईम कहे, लोकांतिक उल्लसीया रे. ह० ७

एक क्रोड आठ लाख सोनैया, दिन दिन प्रभुजी आपे;
इम संवच्छरी दान दईने जगनां दारिद्र कापे रे. ह० ८

छांड्या राज अंतेउर प्रभुजी, भाईए अनुमति दीधी;
मृगशिरवदि दशमी उत्तराये, वीरे दीक्षा लीधी रे. ह० ९

चउनाणी तिणदिनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझे रे;
चीवरअर्ध ब्राह्मणने आप्युं, खंड खंड बे फेरे रे. ह० १०

घोर परिषह साडाबारे, वरसे जे जे सहीया;
घोर अभिग्रह जे जे धरिया, ते नवि जाये कहीया रे. ह० ११

शूलपाणि ने संगमदेवे, चंडकोशीक गोशाले;
दीधुं दु:ख ने पायस रांधी, पग उपर गोवाले रे. ह० १२

काने गोपे खीला मार्या, काढतां मूकी राटी;
जे सांभळतां त्रिभुवन कंप्यां, पर्वत शीला फाटी रे. ह० १३

ते ते दुष्ट सहु उद्धरिया, प्रभुजी पर उपगारी;
अडदतणा बाकुला लईने, चंदनबाला तारी रे. ह० १४

दोय छ मासी नव चउमासी, अढी मासी त्रण मासी;
दोढ मासी बे बे कीधां, छ कीधां बे मासी रे. ह० १५

बार मास ने पख ब्होंतेर, छट्ठ बसें ओगणत्तीस वखाणुं;
बार अट्ठम भद्रादि प्रतिमा, दिन दोय चार दश जाणुं रे. ह० १६

ईम तप कीधां बारे वरसे, विण पाणी उल्लासे;
तेमां पारणां प्रभुजीए कीधां, त्रणसें ओगणपचास रे. ह० १७

कर्म खपावी वैशाखमासे, सुद दशमी शुभ जाण;
उत्तरायोग शालिवृक्ष तळे, पाम्या केवलनाण रे. ह० १८

ईंद्रभूति आदि प्रतिबोध्या, गणधरपदवी दीधी;
साधु साध्वी श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधी रे. ह० १९

चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीस कहीजे;
एकलाख ने सहस गुणसट्ठि, श्रावक शुद्ध कहीजे रे. ह० २०

तीनलाख अढार सहस वली, श्राविका संख्या जाणी;
त्रणसें चौद पूरवधारी, तेरसें ओहिनाणी रे. ह० २१

सातसयां ते केवलनाणी, लब्धिधारी पण तेटला;
विपुलमतिया पांचसे कहीयां, चारसें वादी जीत्या रे. ह० २२

सातसें अंतेवासी सिध्या, साधवी चौदसें सार;
दिनदिन तेज सवाये दीपे, ए प्रभुजीनो परिवार रे. ह० २३

त्रीस वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे;
त्रीस वरस केवल बेंतालीश, वरस श्रमणावस्थे रे. ह० २४

वरस ब्होंतेर केरुं आयु, वीरजिणंदनुं जाणो;
दीवाली दिन स्वाति नक्षत्रे, प्रभुजीनुं निर्वाण रे. ह० २५

पंचकल्याणक एम वखाण्या, प्रभुजीना उल्लासे;
संघतणे आग्रह हरख भरीने, सुरत रही चोमासुं रे. ह० २६

**कळश**

इम चरम जिनवर, सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी,
अषाढ उज्ज्वल पंचमी दिन, संवत शत त्रिहोत्तरे;
भादरवा सुद पडवा तणे दिन, रविवारे उलट भरे;
(विमलविजय उवज्झाय पंकज, भ्रमर सम शुभ शिष्य ए;)
रामविजय जिनवर नामे, लहे अधिक जगीश ए.

## हितशिक्षा छत्रीसी

१०. मूरख, जोगी, राजा, पंडित, हांसी करी नवि हसीए जी,
हाथी, वाघ, सर्प, नर वढतां, देखीने दूर खसीए जी.

११. कुवा कांठे हांसी न करीए, केफ करी नवि भमीएजी,
वरो न करीए घर वेचीने, जुगटे नवि रमीए जी.

१२. भणतां गणतां आळस तजीए, लखतां वात न करीए जी,
परहस्ते परदेश दुकाने, आपणुं नाम न धरीए जी.

१३. नामुं मांडो आळस छंडी, देवादार न थईए जी,
कष्ट भयानक थानक वरजी, देशावर जई रेहीए जी.

१४. धनवंतोनो वेश मलीनता पगशुं पग घसी धोवे जी,
नापित घर जई शिर मुंडावे, पाणीमां मुख जोवे जी.

१५. नावण दातण सुंदर न करे, बेठो तरणां तोडे जी,
भूंए चित्रामण नागो सूए, तेने लक्ष्मी छोडे जी.

१६. माता चरणे शिश नमावी, बापने करीए प्रणामो जी,
देवगुरुने विधिए वांदी, करे संसारनां कामो जी.

१७. बे हाथे माथुं नवि खणीए, कान नवि खोतरीए जी,
उभा केडे हाथ न दीजे, सामे पूरे न तरीए जी.

१८. तेल तमाकु दूरे तजीए, अळगण जळ नवि पीजे जी,
कुलवंती सतीने शिखामण, हवे नरभेळी दीजे जी.

## गमणागमणे सूत्रं

ईच्छाकारेण संदिसह भगवन्! गमणागमणे आलोउं?, इच्छं, ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभंड मत्तनिक्खेवणासमिति, पारिष्ठापनिकासमिति, मनगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति ए पांच समिति, त्रण गुप्ति ए अष्ट प्रवचनमाता श्रावकतणे धर्मे सामायिक, पोषह लीधे रूडीपेरे पाळी नहीं, जे कांई खंडणा विराधना हुई होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिच्छा मि दुक्कडम्.

# लेखित कक्षा १०

| | | |
|---|---|---|
| मूळ सूत्र | : | बीजु भाष्य |
| अर्थ | : | बीजु भाष्य |
| चैत्यवंदन | : | नेमिनाथ बावीसमा |
| स्तवन | : | में आज दरिसण पाया |
| थोय | : | सुर असुर वंदित पाय |
| हितशिक्षा छत्रीसी | : | १९ से २६ |

## काव्य विभाग

### श्री नेमिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीशमां, शिवादेवी माय;
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय. १

दश धनुष्यनी देहडी, आयु वर्ष हजार;
शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार. २

शौरीपुरी नयरी भलीए, ब्रह्मचारी भगवान;
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल ठाण. ३

### श्री नेमिनाथ भगवान का स्तवन

में आज दरिसण पाया, श्री नेमिनाथ जिनराया,
प्रभु शिवादेवीना जाया, प्रभु समुद्रविजय कुल आया,
कर्मो के फंद छोडाया, ब्रह्मचारी नाम धराया,
जिणे तोडी जगतकी माया. जिने० में० १

रैवतगिरि मंडनराया, कल्याणक तीन सोहाया;
दीक्षा केवल शिवराया, जगतारक बिरुद धराया,
तुम बेठे ध्यान लगाया. तुम० में० २

अब सुनो त्रिभुवन राया, में कर्मो के वश आया;
हुं चतुर्गति भटकाया, में दुःख अनंता पाया,
ते गिनती नाही गणाया. तुम० में० ३

में गर्भावासमें आया, उंघे मस्तक लटकाया;
आहार सरस विरस भुक्ताया, एम अशुभ करम फल पाया,
इण दुःखसे नाही मूकाया. इण० में० ४

नरभव चिंतामणि पाया, तब चार चोर मिल आया;
मुजे चौटेमें लूंट खाया, अब सार करो जिनराया,
किस कारण देर लगाया. किस० में० ५

जिणे अंतरगतमें लाया, प्रभु नेमि निरंजन ध्याया;
दुःख संकट विघन हटाया, ते परमानंद पद पाया.
फिर संसारे नहीं आया. फिर० में० ६

में दूर देशसें आया, प्रभु चरणे शीश नमाया;
में अरज करी सुखदाया, तुमे अवधारो महाराया,
एम वीरविजय गुण गाया. एम० मैं ७

## थोय

सुर असुर वंदित पाय पंकज, मयण मल्लमक्षोभितं,
घन सुघन श्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितं,
शिवादेवी नंदन त्रिजगवंदन, भविक कमळ दिनेश्वरं,
गिरनार गिरिवर शिखर वंदो, नेमिनाथजिनेश्वरं. १

अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरीवरं,
वासुपूज्य चंपानगर सिध्या, नेम रैवतगिरिवरं,
सम्मेतशिखरे वीश जिनवर, मुक्ति पहोंच्या मुनिवरं,
चोवीश जिनवर नित्य वंदो, सकलसंघ सुखकरं. २

अग्यार अंग उपांग बार, दश पयन्ना जाणीए,
छ छेद ग्रंथ पसत्थ सत्था, मूळ चार वखाणीए,
अनुयोगद्वार उदार नंदीसूत्र जिनमत गाईए,
वृत्ति, टीका, भाष्य, चूर्णि, पीस्तालीश आगम ध्याईए. ३

दोय दिशि बाळक दोय जेहने, सदा भवियण सुखकरुं,
दु:खहरु अंब लुंब सुंदर, दुरित दोहग अपहरुं,
गिरनार मंडण नेमिजिनवर, चरण पंकज सेविए,
चउविहसंघ सुप्रसन्न मंगल, करो अंबादेवीए. ४

## हितशिक्षा छत्रीसी

१९. ससरो सासु जेठ जेठाणी, नणदी विनय म मूकोजी,
शाणपणे शेरी संचरतां, चतुरा चाल म चूकोजी.

२०. नीच साहेली संग न कीजे, परमंदिर न भमीए जी,
रात्रि पडे घरबार न जईए, सहुने जमाडीने जमीए जी.

२१. धोबण मालण ने कुंभारण जोगण संग न करीए जी,
सहेजे कोईक आळ चडावे, एवडुं शाने करीए जी.

२२. निज भरथार गयो देशावर, तव शणगार न धरीएजी,
जमवा नाति वचे नव जईए, दुर्जन देखी डरीए जी.

२३. परशेरी गरबो गावाने, मेळे खेले न जईए जी,
नावण धोवण नदी किनारे, जातां निर्लज्ज थईए जी.

२४. उपडते पगे चाल चालीजे, हुन्नर सहु शीखीजेजी,
स्नान सुवस्त्रे रसोई करीने, दान सुपात्रे दीजे जी.

२५. शोक्यतणां लघु बाळ देखी, म धरो खेद हैया में जी,
तेहनी सुख शीतल आशिषे, पुत्र तणां फळ पामे जी.

२६. बार वरस बाळक सुरपडिमा, ए बे सरिखां कहीए जी,
भक्ति करे सुख लीला पामे, खेद करे दुःख लहीए जी.

# लेखित कक्षा ११

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | त्रीजु भाष्य |
| **अर्थ** | : | त्रीजु भाष्य |
| **चैत्यवंदन** | : | दशमे भवे शान्तिनाथ |
| **स्तवन** | : | शान्ति जिनेश्वर साहिबा रे |
| **थोय** | : | सकलकुशलवल्ली (संस्कृत) |
| **हितशिक्षा छत्रीसी** | : | २७ से ३६ |

## काव्य विभाग

## श्री शान्तिनाथ भगवान का चैत्यवंदन

दशमे भवे श्री शान्तिनाथ, मेघरथ राजा राय,
पोषह लीधो प्रेम शुं, आत्मस्वरूप अभिराम. १

एक दिन ईन्द्रे वखाणीयो, मेघरथ महाराय,
धर्मे चळाव्यो नवि चळे, जो प्राण परलोक जाय. २

देव माया धारण करी, पारेवो सिंचाणो थाय,
अणधार्युं आवी पड्युं, पारेवडुं खोळामांय. ३

शरणे आव्युं पारेवडुं, थर थर कंपे काय,
राख राख मुझ राजवी, मुजने सिंचाणो खाय. ४

जीवदया मनमां वसी, कहे सिंचाणाने एह,
नहीं आपुं रे पारेवडुं, कहे तो कापी आपुं देह. ५

एक पारेवानी दया थकी, दोय पदवी पाम्या,
पंचम चक्रवर्ति उपन्या, सोलमा शान्तिनाथ. ६

अभयदान देई करी, बांध्युं तीर्थंकर नाम,
उदयरत्न नित्य प्रणमतां, पामे अविचल ठाम. ७

## श्री शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

शान्ति जिनेश्वर साहिबा रे, शान्ति तणा दातार;
अंतरजामी छो माहरा रे, आतमना आधार. शांति० १

चित्त चाहे प्रभु चाकरी रे, मन चाहे मळवाने काज;
नयन चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिशण महाराज. शांति० २

पलक न विसरो मन थकी रे, जिम मोरा मन मेह;
एक पखो केम राखीए रे, राज कपटनो नेह. शांति० ३

नेह नजरे निहाळता रे, वाधे बमणो वान;
अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजीए वांछित दान. शांति० ४

आश करे जे कोई आपणी रे, नवी मूकीए निराश;
सेवक जाणीने आपणो रे, दीजीए तास विलास. शांति० ५

दायकने देतां थकां रे, क्षण नवि लागे वार;
काज सरे निज दासनां रे, ए म्होटो उपकार. शांति० ६

एवुं जाणीने जगधणी रे, दिलमांही धरजो प्यार;
रूपविजय कविरायनो रे, मोहन जय जयकार. शांति० ७

## थोय

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्तमेघो मदन सदश रूप; पुर्णराकेन्दु वक्र:
प्रथयतु मृग लक्ष्मा, शान्ति नाथो जनानां प्रसृत भुवन कीर्ति, कामितं क्रम कांति.१

जिन पति समुदायो दायको भीप्सीतानाम् दुरित तिमिर भानु: कल्पवृक्षोपमान:
रचयतु शिवशान्तिं, प्रतिहार्य श्रियं यो विकट विषम भूमी जात हेतु र्बिभर्ति. २

प्रथयतु भविकानां ज्ञान संपत् समुहं समय ईह जगत्या माप्त वकत्र प्रसूत:
भवजल निधि पोत: सर्व संपत्ति हेतु: प्रथित घन घटायां, सूर्यकान्त प्रकाश: ३

जयविजय मनिषा मंदिरं ब्रह्मशान्ति: सुर गिरि सम धीर: पूजितो न्यक्षयक्षै:
हरतु सकल विघ्नं योजने चिन्त्यमान: स भवतु सततं व: श्रेयसे शान्तिनाथ: ४

## हितशिक्षा छत्रीसी

२७. नर नारी बेउने शिखामण, मुख लवरी नवि हसीए जी,
नाति सगाना घर छोडीने, एकलडां नव वसीए जी.

२८. वमन करीने चित्त जाळे, नबळे आसन बेसीजी,
विदेशे दक्षिण दिशि अंधारे, बोट्युं पशुए पेसी जी.

२९. अणजाण्ये ऋतुवंती पात्रे, पेट अजीरण वेळाजी,
आकाशे भोजन नवि करीए, बे जण बेसी भेळा जी.

३०. अतिशय उनुं खारुं खाटुं, शाक घणुं नवि खावुं जी,
मौन पणे उठींगण वरजी, जमवा पहेला न्हावुं जी.

३१. धान्य वखाणी वखोडी न खावुं, तडके बेसी न जमवुं जी,
मांदा पासे रात तजीने, नरणां पाणी न पीवुं जी,

३२. कंदमूळ, अभक्ष्य, बोळो, वासी, विदळ ते वर्जो जी,
जूठ तजो परनिंदा, हिंसा, जो वळी नरभव सर्जो जी.

३३. व्रत पच्चक्खाण धरी गुरु हाथे, तीरथ यात्रा करीए जी,
पुण्य उदय जो मोटो प्रगटे, तो संघवी पद धरीए जी.

३४. मारगमां मन मोकळुं राखी, बहुविध संघ जमाडो जी,
सुरलोके सुख सघळां पामे, पण नहि एहवो दहाडो जी.

३५. तीरथ तारण शिवसुख कारण, सिद्धाचल गिरनारे जी,
प्रभुभक्ति गुण श्रेणे भवजल, तरीए एक अवतारे जी.

३६. लौकिक लोकोत्तर हितशिक्षा छत्रीसी ए बोलीजी,
पंडित श्री शुभवीरविजय मुख वाणी मोहन वेली जी.

# लेखित कक्षा १२

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | तत्त्वार्थ १ से ५ अध्याय अर्थ सहित |
| **चैत्यवंदन** | : | श्री सिद्धचक्र आराधीये |
| **स्तवन** | : | नवपदनुं धरजो ध्यान |
| **थोय** | : | अरिहंत नमो |
| **शरणा** | : | १ और २ |

## काव्य विभाग

### श्री नवपदजी का चैत्यवंदन

श्रीसिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास,
नव दिन नव आंबिल करी, कीजीए ओळी खास. १

केसर चंदन घसी घणां, कस्तुरी बरास,
जुगते जिनवर पूजीया, मयणा ने श्रीपाल. २

पूजा अष्टप्रकारनी, देववंदन त्रणकाळ,
मंत्र जपो त्रण काळने, गणणुं तेर हजार. ३

कष्ट टळ्युं उंबर तणुं, जपतां नवपद ध्यान,
श्री श्रीपाल नरींद थया, वाध्यो बमणो वान. ४

सातसें कोढी सुख लह्या ए, पाम्या निज आवास,
पुण्ये मुक्तिविधू वर्या, पाम्या लीलविलास. ५

## श्री नवपदजी का स्तवन

नवपद धरजो ध्यान, भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान;
ए नवपदनुं ध्यान करतां, पामे जीव विश्राम. भवि० १

अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सकळ गुणखाण; भ०
दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो धरी बहुमान. भ० २

आसो चैत्रनी सुदि सातमथी, पूनम लगी परमाण; भ०
एम एकाशी आंबिल कीजे, वरस साडाचारनुं मान. भ० ३

पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पडिलेहण बे वार; भ०
देववंदन त्रण टंकनां कीजे, देव पूजो त्रिकाळ. भ० ४

बार आठ छत्रीस पचवीशनो, सत्तावीश सडसठ सार; भ०
एकावन सित्तेर पचासनो, काउस्सग्ग करो सावधान. भ० ५

एक एक पदनुं गणणुं, गणीए दोय हजार; भ०
एणी विधे जे ए तप आराधे, ते पामे भवपार. भ० ६

करजोडी सेवक गुण गावे, मोहन गुणमणिमाळ; भ०
तास शिष्य मुनि हेम कहे छे, जन्म मरण दुःखटाळ. भ० ७

## श्री नवपदजी की थोय

अरिहंत नमो वळी सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो,
दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो. १

अरिहंत अनंत थया थाशे, वळी भाव निक्षेपे गुण गाशे,
पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिलतप गणणुं गणो विधिशुं. २

छ'रि पाळी जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे,
सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहवा जिन आगम गुण बोले. ३

साडाचार वरसे ए तप पूरो, ए कर्मविदारण तप शूरो,
सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, नयविमलेसर वर आपो. ४

## शरणा

मुजने चार शरणां होजो, अरिहंत सिद्ध सु साधुजी,
केवलीधर्म प्रकाशीयो, रत्न अमुलख लाधुंजी. मुजने० १

चउगति तणां दुःख छेदवा, समरथ शरणां एहोजी;
पूर्वे मुनिवरजे हुआ, तेणे कीधां शरणां तेहोजी. मुजने ०२

संसारमांही जीवने, समरथ शरणां चारोजी;
गणी समयसुंदर एम कहे, कल्याण मंगळकारोजी. मुजने ०३

(२)

लाख चोराशी जीव खमावीए, मनधरी परम विवेकजी;
मिच्छा मि दुक्कडं दीजीए, जिनवचने लहिए टेकजी. लाख० १

सातलाख भू दग तेउ वाउना, दश चौदे वनना भेदोजी;
खट विगल सुर तिरि नारकी, चउ चउ चउदे नरना भेदोजी. लाख० २

मुज वैर नहि केहशुं, सहु शुं मैत्री भावोजी;
गणी समयसुंदर एम कहे, पामीये पुण्य प्रभावोजी. लाख० ३

# लेखित कक्षा १३

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | तत्त्वार्थ ६ से १० अध्याय अर्थ सहित |
| **चैत्यवंदन** | : | आज देव अरिहंत नमुं |
| **स्तवन** | : | आज मारा प्रभु सामुं जोवोने |
| **थोय** | : | षड् अतिशय |
| **शरणा** | : | ३ और ४ |

## काव्य विभाग

### सामान्य जिन चैत्यवंदन

आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम;
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम. १

शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार;
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु रिखव जुहार. २

अष्टापद गिरि उपरे, जिन चोवीशे जोय;
मणिमय मूरति मानशुं, भरते भरावी सोय. ३

समेतशिखर तीरथ वडुं, जिहां वीसे जिन पाय;
वैभार गिरिवर उपरे, श्री वीर जिनेसर राय. ४

मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपास;
ऋषभ कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश. ५

## सामान्य जिन स्तवन

आज मारा प्रभुजी सामुं जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे;
एटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रूठडां बाल मनावो मोरा सांई रे. १

पतित पावन शरणागत वत्सल, ए जश जगमां चावो रे;
मन रे मनाव्या विण नवि मूकुं, एहि ज मारो दावो. मोरा० २

कब्जे आव्यां हवे नहि मूकुं, जिहां लगे तुम सम थावो रे;
जो तुम ध्यान विना शिव लहीए, तो ते दाव बतावो. मोरा० ३

महागोप ने महानिर्यामक, एवा एवा बिरुद धरावो रे;
तो तुम आश्रितने उद्धरतां, बहु बहु शुं कहावो. मोरा० ४

ज्ञानविमलगुणनो निधि महिमा, मंगल एहि वधावो रे;
अचल अभेदपणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावो. मोरा० ५

## षड् अतिशय की थोय

षड् अतिशय कहुं वर्षीदान, सौधर्म इन्द्र सुगुण निधान,
अवसर पुण्य प्रधान,
दोय हाथ पर बेसे सुजाण, थाके नहीं प्रभु देतां दान,
अतिशय पहेलो जाण,
बीजो इन्द्र जे कहीए ईशान, छडीदार थइ रहे एक ध्यान,
शाश्वत एह विधान,
चोसठ इंद्र वर्जीने जाण, लेतां देतां सुर वारे ते ठाण,
अतिशय बीजो प्रमाण. १

भवनपतिमां वडा कहावे, चमर बलीन्द्र नाम सुहावे,
जिनपतिना गुण गावे,
प्रभुजी ज्यारे मुठ्ठी नमावे, याचक भाग्यथी अधिक जावे,
चमरेन्द्र हीन करावे,

भाग्याधिकने ओछा थावे, बलीन्द्र तेहमां अधिक बनावे,
भाग्य प्रमाणे पावे,
निज करणी करी आनंद पावे, त्रीजो अतिशय एह जणावे,
प्रभु भक्ति दिल लावे... २

भवनपतिना नव निकाय, तेहना इन्द्र अढार कहाय,
सूत्रसिद्धांते लखाय,
ते सहु इन्द्रना जीत गणाय, दान समय लही अवसर पाय,
करणी आप कराय,
भरतक्षेत्रना नर समुदाय, दान लेवा जस इच्छा थाय,
ते लेवा मन धाय,
ते सहु माणसने इहां लाय, ए चोथो अतिशय गवाय,
दीपविजय कविराय... ३

वाणव्यंतर ने व्यंतर एह, सहु मळी इन्द्र बत्रीस गुण गेह,
समकित दृष्टि तेह,
भरतवासी मानवने एह, पाछा निज निज धाम धरेह,
अतिशय पंचम एह,
ज्योतिषी इन्द्र करणी एह, विद्याधरने जाण करेह,
छट्ठो अतिशय तेह,
'दीपविजय' कविराज सनेह, ए षड् अतिशय वरसे सदेह,
वीर जगतगुरु मेह... ४

## शरणा

(३)

पाप अढारे जीव परिहरो, अरिहंत सिद्धनी शाखे जी;
आलोव्यां पाप ते छूटीए, भगवंत एणी पेरे भाखे जी. पाप० १

आश्रव कषाय दोय बंधवा, वळी कलह अभ्याख्यान जी;
रति अरति पैशुन निंदना, माया मोह मिथ्यात्व जी. पाप० २

मन वचन कायाए जे कर्या, मिच्छामि दुक्कडं तेहो जी;
गणी समयसुंदर एम कहे, जैन धर्मनो मर्म एहो जी. पाप० ३

(४)

धन धन ते दिन मुज कदि होशे, हुं पामीश संजम सूधोजी;
पूर्व ऋषि पंथे चालशुं, गुरु वचने प्रतिबुद्धो जी. धन० १

आंत प्रान्त भिक्षा गोचरी, रण वने काउस्सग्ग करशुं जी;
समता शत्रु मित्र भावशुं, संवेग सूधो धरशुं जी. धन० २

संसारना संकट थकी छूटीश, जिनवचन अवधारो जी;
धन धन समयसुंदर ते घडी, हुं पामीश भवनो पारोजी. धन० ३

# लेखित कक्षा १४

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | कर्मग्रंथ १लो अर्थ सहित |
| **चैत्यवंदन** | : | दुविध धर्म जिणे |
| **स्तवन** | : | सरस वचनरस ढाळ ३ |
| **थोय बीजनी** | : | अजवाळी बीज सोहावे रे |

## काव्य विभाग

### बीज का चैत्यवंदन

दुविध धर्म जेणे उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन,
बीजे जन्म्या ते प्रभु, भवदु:ख निकंदन. १

दुविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान,
एम प्रकाश्युं सुमतिजिने, ते चवीया बीज दिन. २

दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीए,
मुज परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीए. ३

जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण,
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण. ४

निश्चयने व्यवहार दोय, एकांते न ग्रहीए,
अरजिन बीजदिने च्यवी, एम जिन आगळ कहीए. ५

वर्तमान चोवीशीए, एम जिनकल्याणक,
बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण. ६

एम अनंत चोवीशीए, हुवा बहु कल्याण,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखखाण. ७

## बीज का स्तवन

**(ढाळ पहेली)**

सरसवचनरस वरसती, सरस्वती कळाभंडार;
बीजतणो महिमा कहुं, जेम कह्यो शास्त्र मोझार. १

जंबूद्वीपना भरतमां, राजगृही नगरी उद्यान;
वीरजिणंद समोसर्या, वांदवा आव्या राजन. २

श्रेणिक नामे भूपति, बेठा बेसण ठाय;
विनवे श्रीजिनरायने, द्यो उपदेश महाराय! ३

त्रिगडे बेठा त्रिभुवनपति, देशना दीये जिनराय;
कमळ सुकोमळ पांखडी, एम जिन हृदय सोहाय. ४

शशी प्रगटे जेम ते दिने, धन्य ते दिन सुविहाण;
एकमने आराधतां, पामे पद निर्वाण. ५

**(ढाळ बीजी)**

कल्याणक जिननां कहुं, सुण प्राणीजी रे;
अभिनंदन अरिहंत ए भगवंत, भवि प्राणीजी रे,
माघ सुदि बीजने दिने; सुण प्राणीजी रे,
पाम्या शिवसुख सार, हरख अपार, भवि प्राणीजी रे. १

वासुपूज्य जिन बारमा, सुण प्राणीजी रे,
एहि ज तिथे थयुं नाण, सफळ विहाण. भवि प्राणीजी रे.
अष्टकर्मचूरण करी; सुण० प्राणीजी रे,
अवगाहन एकवार, मुक्ति मोझार. भवि० २

अरनाथजिनजी नमुं, सुण प्राणीजी रे,
अष्टादशमा अरिहंत, ए भगवंत भवि०
उजजवल तिथि फागण भली; सुण प्राणीजी रे,
वरीआ शिववधू सार, सुंदरनार. भवि० ३

दशमा शीतळजिनेश्वरू, सुण प्राणीजी रे,
परमपदनी ए वेल, गुणनी गेल. भवि०
वैशाखवदि बीजने दिने; सुण प्राणीजी रे,
मूक्यो सरवे ए साथ, सुर नरनाथ. भवि० ४

श्रावणसुदनी बीज भली; सुण प्राणीजी रे,
सुमतिनाथजिनदेव सारे सेव, भवि०
एणी तिथिए जिनजी तणा; सुण प्राणीजी रे,
कल्याणकपंच सार, भवनो पार. भवि० ५

**(ढाळ त्रीजी)**

जगपति जिनचोवीशमो रे लाल,
ए भाख्यो अधिकार रे, भविकजन!
श्रेणिक आदे सहु मल्या रे लाल,
शक्तितणे अनुसार रे, भविकजन!
भाव धरीने सांभळो रे लाल. १

दोयवरस दोयमासनी रे लाल,
आराधो धरी खंत रे; भविक०
उजमणुं विधिशुं करो रे लाल,
बीज ते मुक्ति संकेत रे. भविक० भाव० २

मार्ग मिथ्या दूरे तजो रे लाल,
आराधो गुण थोक रे; भविक०
वीरनी वाणी सांभळी रे लाल,
उछरंग थया बहु लोक रे. भविक० भाव० ३

एणी बीजे केइ केइ तर्या रे लाल,
वळी तरशे करशे संग रे; भविक०
शशि निधि अनुमानथी रे लाल,
शैला नागधर अंक रे. भविक० भाव० ४

अषाढ सुदि दशमी दिने रे लाल,
ए गायो स्तवन रसाल रे, भविक०
नवलविजय सुपसायथी रे लाल,
चतुरने मंगलमाल रे. भविक० भाव० ५

**कळश**

इम वीरजिनवर, सयल सुखकर, गायो अति उलट भरे,
अषाढ उज्जवल दशमी दिवसे, संवत अढार अट्ठोत्तरे;
बीजमहिमा एम वर्णव्यो, रही सिद्धपुर चोमास ए,
जेह भविक भावे सुणे गावे, तस घरे लीलविलास ए. १

## बीज की थोय

अजवाळी बीज सोहावे रे, चंदा रूप अनुपम लावे रे,
चंदा विनतडी चित्त धरजो रे, श्री सीमंधरने वंदना कहेजो रे. १

वीश विहरमान जिनने वंदुं रे, जिनशासन पूजी आणंदुं रे,
चंदा एटलुं काम ज करजो रे, श्रीसीमंधरने वंदना कहेजो रे. २

श्रीसीमंधरजिननी वाणी रे, ते तो अमियपान समाणी रे,
चंदा तमे सुणी अमने सुणावो रे, भवसंचित पाप गमावो रे. ३

श्रीसीमंधरजिननी सेवा रे, ते तो शासन भासन मेवा रे,
चंदा होजो संघना त्राता रे, गज लंछन चंद्र विख्याता रे. ४

# लेखित कक्षा १५

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | कर्मग्रंथ २जो ३जो अर्थ सहित |
| **चैत्यवंदन** | : | त्रिगडे बेठा वीरजिन |
| **स्तवन** | : | सुत सिद्धारथ भूपनो रे ढाळ १ |
| **थोय पंचमीनी** | : | श्रावण सुदि दिन पंचमीए |

## काव्य विभाग

### पंचमी का चैत्यवंदन

त्रिगडे बेठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे,
त्रिकरण श्युं त्रिहुं लोकजन, निसुणो मन रागे. १

आराधो भली भातसे, पंचमी अजुवाली,
ज्ञान आराधन कारणे, एही ज तिथि निहाळी. २

ज्ञान विना पशु सारीखा, जाणो एणे संसार,
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार. ३

ज्ञानरहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान,
लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान. ४

ज्ञानी श्वासोश्वासमां करे कर्मनो छेह,
पूर्वकोडी वरसां लगे, अज्ञानी करे तेह. ५

देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान,
ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान. ६

पंचमास लघुपंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी,
पंचवरस पंचमासनी, पंचमी करो शुभदृष्टि. ७

---

साधर्मिक अर्थात् सच्चे देव गुरु धर्म को माननेवाला.

एकावन ही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो,
उजमणुं करो भावशुं, टाळो भव फेरो. ८

एणीपेरे पंचमी आराधीए, आणी भाव अपार,
वरदत्त गुणमंजरी परे,रंगविजय लहो सार. ९

## पंचमी का स्तवन

सुतसिद्धारथभूपनो रे, सिद्धारथभगवान;
बारपर्षदा आगळे रे, भाखे श्रीवर्धमानो रे,
भवियण चित्त धरो मन वच काय उमाह्यो रे,
ज्ञानभगति करो. १

गुण अनंत आतमतणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय;
तेमां पण ज्ञान ज वडुं रे, जिणथी दंसण होय रे. भवि० २

ज्ञाने चारित्रगुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय;
ज्ञाने थविरपणुं लहेरे, आचारज उवजझायो रे. भवि० ३

ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिन करम करे नाश;
वह्नि जेम इंधण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे. भवि० ४

प्रथम ज्ञान पछी दया रे, संवर मोह विनाश;
गुणस्थानक पगथालीए रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे. भवि० ५

मइ सुअ ओहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान;
चउमूंगा श्रुत एक छे रे, स्व परप्रकाश निदानो रे. भवि० ६

तेहनां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि;
लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे. भवि० ७

त्रिविध आशातना जे करे रे, भणतां करे अंतराय;
अंधा ब्हेरा बोबडा रे, मूंगा पांगुळा थाय रे. भवि० ८

भणतां गणतां न आवडे रे, न मळे वल्लभ चीज;
गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे. भवि० ९

प्रेमे पूछे पर्षदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय;
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, कहो अधिकार पसायो रे. भवि० १०

## पंचमी की (श्री नेमिनाथ भगवान) थोय

श्रावणसुदि दिन पंचमीए, जन्म्या नेमि जिणंद तो,
श्यामवरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको चंद तो,
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो,
अष्टकरम हेले हणीए, पहोता मुक्ति महंत तो. १

अष्टापद पर आदिजिनए, पहोंत्या मुक्ति मोझार तो,
वासुपूज्य चंपापुरीए, नेम मुक्ति गिरनार तो,
पावापुरी नगरीमां वळीए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो,
सम्मेतशिखर वीश सिद्ध हुआए, शिर वहु तेहनी आण तो. २

नेमिनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सारवचन तो,
जीवदया गुण वेलडीए, कीजे तास जतन तो,
मृषा न बोलो मानवीए, चोरी चित्त निवार तो,
अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरिए परनार तो. ३

गोमेध नामे जक्ष भलो ए, देवी श्री अंबिका नाम तो,
शासन सान्निध्य जे करे ए, करे वळी धर्मनां काम तो,
तपगच्छनायक गुणनीलो ए, श्री विजयसेनसूरिराय तो,
ऋषभदास पाय सेवतां ए, सफळ करो अवतार तो. ४

# लेखित कक्षा १६

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | कर्मग्रंथ ४थो अर्थ सहित |
| **चैत्यवंदन** | : | महासुदि आठम दिने |
| **स्तवन** | : | श्री राजगृही शुभठाम ढाळ २ |
| **थोय अष्टमीनी** | : | मंगळ आठ करी जस |

## काव्य विभाग

### अष्टमी का चैत्यवंदन

महा सुदि आठम दिने, विजयासूत जायो,
तेम फागण सुदि आठमे, संभव चवी आव्यो. १

चैत्र वदनी आठमे, जन्म्या ऋषभ जिणंद,
दीक्षा पण ए दिन लही, हुवा प्रथम मुनिचंद. २

माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां दूर,
अभिनंदन चोथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर. ३

एहिज आठम उजळी, जन्म्या सुमति जिणंद,
आठ जाति कळशे करी, नवरावे सुर इंद. ४

जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रतस्वामी,
नेम अषाढ सुदी आठमे, अष्टमी गति पामी. ५

श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जगभाण,
तेम श्रावण सुदी आठमे, पासजीनुं निर्वाण. ६

भादरवा वदि आठम दिने, चवीया स्वामी सुपास,
जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास. ७

## अष्टमी का स्तवन

श्री राजगृही शुभठाम, अधिक दीवाजे रे;
विचरंता वीर जिणंद, अतिशय छाजे रे. १

तिहां चोत्रीश ने पांत्रीश, वाणी गुण लावे रे;
पाउधर्या वधामणी जाय, श्रेणिक आवे रे. २

तिहां चोसठ सुरपति आवीने, त्रिगडुं बनावे रे;
तेमां बेसीने उपदेश, प्रभुजी सुणावे रे. ३

तिहां सुर नर ने तिर्यंच, निज निज भाषा रे;
तिहां समजीने भवतीर, पामे सुख खासा रे. ४

तिहां इंद्रभूति गणधार, श्री गुरुवीरने रे;
पूछे अष्टमीनो महिमा, कहो प्रभु अमने रे. ५

तव भाखे वीर जिणंद, सुणो सहु प्राणी रे;
आठमदिन जिननां कल्याण, धरो चित्त आणी रे. ६

## अष्टमी की थोय

मंगळ आठ करी जस आगळ, भावधरी सुरराजजी,
आठ जातिना कळश करीने, न्हवरावे जिनराजजी,
वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिवसुख साधेजी,
आठमनुं तप करतां अम घेर, मंगळ कमळा वाधेजी. १

अष्टकरम वयरी गजगंजन, अष्टापद परे बळियाजी,
आठमे आठ सरूप विचारी, मद आठे तस गळियाजी,

अष्टमी गति पहोंता जे जिनवर, फरस आठ नहि अंगजी,
आठमनुं तप करतां अम घेर, नित नित वाधे रंगजी. २

प्रातिहारज आठ बिराजे, समवसरण जिनराजेजी,
आठमे आठसो आगम भाखी, भविमन संशय भांजेजी,
आठे जे प्रवचननी माता, पाळे निरतिचारोजी,
आठमने दिन अष्टप्रकारे, जीवदया चित्तधारोजी. ३

अष्टप्रकारी पूजा करीने, मानवभव फळ लीजेजी,
सिद्धाईदेवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी,
आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मळ केवलज्ञानजी,
धीरविमळ कवि सेवक नय कहे, तपथी क्रोड कल्याणजी. ४

# लेखित कक्षा १७

| | | |
|---|---|---|
| **मूळ सूत्र** | : | कर्मग्रंथ ५ मो अर्थ सहित |
| **चैत्यवंदन** | : | शासन नायक वीरजी |
| **स्तवन** | : | जगपति नायक नेमि जिणंद |
| **थोय एकादशी की** | : | एकादशी अति रूडी |

## काव्य विभाग

### चैत्यवंदन

शासननायक वीरजिन, मुक्तिपुरी शणगारी,
गौतमनी प्रीति प्रभु, अंतसमय विसारी. १

देवशर्मा प्रतिबोधवा, मोकल्यों मुजने स्वाम,
विश्वासी प्रभु वीरजी, छेतर्यो मुजने आम. २

हा" हा" वीर आ शुं कर्युं! भरतमां अंधारुं,
कुमति मिथ्यात्वी वधी जशे, कोण करशे अजवाळुं. ३

नाथ विनाना सैन्य जेम, थया अमे निरधार,
एम गौतम प्रभु वलवले, आंखे आंसुडानी धार. ४

कोण वीरने कोण तुं, जाणी एहवो विचार,
क्षपकश्रेणि आरोहतां, पाम्या केवलनाण. ५

वीरप्रभु मोक्षे गया ए, दीवाळी दिन जाण,
ओच्छव रंग वधामणां, जस नामे कल्याण. ६

## एकादशी का स्तवन

जगपति तुं तो देवाधिदेव! दासनो दास हुं ताहरो;
जगपति तारक तुं किरतार, मनमोहन प्रभु! माहरो. १

जगपति ताहरे भक्त अनेक, माहरे एक ज तुं धणी;
जगपति वीरमां तुं महावीर, मूरति ताहरी सोहामणी. २

जगपति त्रिशलाराणीनो तुं तन, गंधार बंदरे गाजीयो;
जगपति सिद्धारथ कुल शणगार, राजराजेश्वर राजीयो. ३

जगपति भक्तोनी भांगे तुं भीड, पीड पराई तुं पारखे;
जगपति तुंहि अगम अपार, समज्यो न जाये मुज सारिखे. ४

जगपति खंभात जंबूसर संघ, भगवंत चोवीशमो भेटीयो;
जगपति उदय नमे करजोड, सत्तर नेवुं संघ समेटीयो. ५

## थोय

एकादशी अतिरूडी, गोविंद पूछे नेम,
किण कारण ए पर्व मोटुं, कहोने मुजशुं नेम,
जिनवर कल्याणक अति घणां, एकसो ने पचास,
तिणे कारण ए पर्व मोटुं, करो मौन उपवास. १

अगियार श्रावकतणी पडिमा, कही ते जिनवरदेव,
एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव,
चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग,
जेम गंग निर्मलनीर जेहवो, करो जिनशुं रंग. २

अगीआर अंग लखावीए, अगीआर पाठां सार,
अगीआर कवळी वींटणां, ठवणी पूंजणी सार,

चाबखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार,
एकादशी एम उजवो, जेम पामीए भवपार. ३

वर कमळनयणी कमळवयणी, कमळ सुकोमळ काय,
भुजदंड चंड अखंड जेहने, समरतां सुख थाय,
एकादशी एम मन वसी, गणिहर्षपंडित शिष्य,
शासनदेवी विघ्न निवारो, संघतणां निशदिश. ४

## लेखित कक्षा १८

**मूळ सूत्र** : कर्मग्रंथ ६ठ्ठो अर्थ सहित

**प्रश्नोत्तर** : समकितना सडसठ बोल तथा
अढार पापस्थानक की सजझाय

## लेखित कक्षा १९

ज्ञानसार अष्टक मूळ तथा अर्थ

## लेखित कक्षा २०

हैमसंस्कृत प्रवेशिका भाग १

## लेखित कक्षा २१

हैमसंस्कृत मध्यमा (बीजी बुक)

## लेखित कक्षा २२

प्राकृत विज्ञान पाठमाळा

# तिजयपहुत्त स्तोत्र

तिजय-पहुत्त-पयासय, अट्ठ-महापाडिहेर-जुत्ताणं;
समयक्खित्त-ठिआणं, सरेमिचक्कं-जिणिंदाणं १

पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो;
नासेउ सयल-दुरिअं, भविआणं भत्ति-जुत्ताणं २

वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा;
गहभूअरक्खसाइणी-घोरुवसग्गं पणासंतु. ३

सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो;
वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभयं हरउ. ४

पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा;
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर-पणमिया सिद्धा. ५

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुंसः;
आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं. ६

ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ;
चक्केसरी नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी. ७

गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता;
माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु. ८

पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरी जिणाण सयं;
विविहरयणाइवन्नो-वसोहिअं हरउ दुरिआइं. ९

चउतीस अइसयजुआ, अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा;
तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं. १०

ॐवरकणयसंखविद्रुम, मरगयघणसंनिहं विगयमोहं;
सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा. ११

ॐभवणवईवाणवंतर-जोइसवासी विमाणवासी अ;
जे के वि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा. १२

चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिउण खालिअं पीअं;
एगंतराइगहभूअ-साइणीमुग्गं पणासेई. १३

इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारिपडिलिहिअं;
दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह. १४

## नमिऊण स्तोत्र

नमिऊण पणय-सुर-गण,-चूडा-मणि-किरण-रंजिअं मुणिणो;
चलण-जुअलं महा-भय-पणासणं संथवं वुच्छं. १

सडिय-कर-चरण-नह-मुह-निबुड्ड-नासा विवन्न-लायन्ना;
कुट्ठ-महारोगानल-फुलिंगनिद्दड्ढ-सव्वंगा. २

ते तुह चलणाराहण सलिलंजलि-सेय वुड्ढियच्छाया;
वण-दव-दड्ढा गिरि-पायवव्व, पत्ता पुणो लच्छिं. ३

दुव्वाय-खुभिय-जल-निहि-उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे;
संभंत-भय-विसंठुल-निज्झामय-मुक्कवावारे. ४

अ-विदलिअ-जाण-वत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं;
पास जिण-चलण-जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा. ५

खर-पवणुद्धुअ-वण-दव-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम गहणे;
डज्झंत-मुद्ध-मय-वहु-भीसणरव-भीसणम्मि वणे. ६

जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविअ-सयलति-हुअणाभोअं;
जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं. ७

विलसंत-भोग-भीसण-फुरिया-ऽरुण नयण-तरल-जीहालं;
उग्ग-भुअंगं नवजलय-सत्थहं भीसणाऽऽयारं. ८

मन्नंति कीड-सरिसं, दूर-परिच्छुढ-विसम-विसवेगा;
तुह नामक्खर-फुड-सिद्ध-मंत-गुरुआ नरा लोए. ९

अडवीसु भिल्ल-तक्कर, पुलिंद सद्दुलसद्द-भीमासु; भय
विहुर-वुन्न-कायर-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु. १०

अ-विलुत्त-विहव-सारा, तुह नाह! पणाम-मत्तवावारा;
ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं. ११

पज्जलिआनल-नयणं, दूर-वियारिय-मुहं महा-कायं;
नह कुलिस-घाय-विअलिअ-गइंद-कुंभत्थलाऽऽभोअं. १२

पणय-ससंभम-पत्थिव-नह-मणि-माणिक्क-पडिअ-पडिमस्स;
तुह वयण-पहरण-धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति. १३

ससि-धवल-दंत-मूसलं, दीह-करुल्लाल-वुड्ढि-उच्छाहं;
महु-पिंग-नयणजुअलं, स-सलिल-नवजल-हराऽऽरावं. १४

भीमं महा-गइंदं, अच्चा-ऽऽसन्नं पि ते नवि गणंति;
जे तुम्ह चलण-जुअलं, मुणि-वई! तुंगं समल्लीणा. १५

समरम्मि तिक्ख-खग्गा-ऽभिग्घाय पविद्ध-उद्धुय-कबंधे;
कुंत-विणिभिन्न-करि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरंमि. १६

निज्जिय दप्पुद्धुर-रिउ-नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं;
पावंति पाव-पसमिण! पास-जिण! तुह प्पभावेण. १७

रोग-जल-जलण-विस-हर,-चोराऽरि-मइंद-गय-रण-भयाइं;
पास-जिण-नाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं. १८

एवं महा-भय-हरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं;
भविय-जणा-ऽऽणंद-यरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं. १९

राय-भय-जक्ख-रक्खस-कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु;
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु. २०

जो पढइ जो अ निसुणई, ताणं कइणो य माणतुंगस्स;
पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणऽच्चिअ चलणो. २१

उवसग्गंते कमठा-ऽसुरम्मि, झाणाओ जो न संचलिओ;
सुर नर-किन्नर-जुवइहिं, संथुओ जयउ पास जिणो. २२

एअस्स मज्झयारे, अट्ठारस अक्खरेहिं जो मंतो;
जो जाणई सो झायई, परम पयत्थं फुडं पासं. २३

पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण;
अट्ठुत्तर सय वाहि भय, नासइ तस्स दूरेण. २४

## भक्तामर स्तोत्र

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,
मुद्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम्;
सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा,
-वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् १

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः;
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् २

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ!
स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम्;
बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दुबिम्ब,
-मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्! ३

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र! शशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुर-गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या;
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्? ४

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश!,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः;
प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनाऽर्थम्. ५

अल्प-श्रुतं श्रुतवतां परिहास-धाम,
त्वद्-भक्तिरैव मुखरीकुरूते बलान्माम्;
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारु-चूत-कलिका-निकरैकहेतुः ६

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्;
आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु,
सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ७

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद,
-मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्;
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ८

संयम अर्थात् मनरूपी बन्दर को बांधने का खूँटा.

आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति;
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि. ९

नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूत-नाथ!,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः;
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा?,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति? १०

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः;
पीत्वा पयः शशि-करद्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जल-निधेरशितुं क इच्छेत्? ११

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत!;
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति. १२

वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि.
निःशेषनिर्जित-जगत्त्रितयोपमानम्?;
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशाकरस्य?,
यद्वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्. १३

संपूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति;
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम्? १४

---

पौषध अर्थात् श्रावक के गुणों को पुष्ट करनेवाला अनुष्ठान.

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि-
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम्?;
कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्? १५

निर्धूम-वर्त्तिपवर्जित-तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि;
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः १६

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति;
नाम्भोधरोदरनिरुद्ध-महाप्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके. १७

नित्योदयं दलित-मोहमहान्धकारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्;
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांक-बिम्बम्. १८

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?,
युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सु नाथ!,
निष्पन्न-शालिवनशालिनि जीव लोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार-नम्रैः? १९

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु;
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तुं काच-शकले किरणाकुलेऽपि. २०

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति;
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नाऽन्यः;
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि. २१

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता;
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्. २२

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्;
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः. २३

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम्;
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः. २४

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्,
धाताऽसि धीर! शिवमार्ग-विधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि. २५

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!,
तुभ्यं नमः क्षितितलामल-भूषणाय!;
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय!;
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय. २६

को विस्मयोऽत्र? यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!;
दोषैरुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि. २७

उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्;
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति. २८

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्;
बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं,
तुंगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्र-रश्मेः २९

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्;
उद्यच्छशांक-शुचिनिर्झर-वारि-धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्. ३०

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त,
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्;
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्. ३१

उन्निद्र-हेम-नव-पंकज-पुंज-कान्ति,
पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ;
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति. ३२

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!,
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य;
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि? ३३

श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम्;
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्. ३४

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त-
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः;
बद्ध-क्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते. ३५

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम्;
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्. ३६

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्;
आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शंक-
स्त्वन्नाम-नागदमनी हृदि यस्य पुंसः. ३७

वल्गत्तुरंग-गज-गर्जित-भीम-नाद-
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्;
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति. ३८

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शेणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे;
युद्धे जयं विजितदुर्जय-जेय-पक्षा-
स्त्वत्पादपंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते. ३९

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्बण-वाडवाग्नौ;
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति. ४०

उद्भूत भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः;
त्वत्पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्धदेहा,
र्मत्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य रूपाः. ४१

आपादकण्ठमुरु शृंखल-वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः;
त्वन्नाम मन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति. ४२

मत्त-द्विपेन्द्र-मृग-राज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्;
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते. ४३

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्;
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गतामजस्रं,
तं मान-तुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः. ४४

# कल्याण मंदिर स्तोत्र

कल्याण-मंदिरमुदारमवद्य भेदि,
भीताभय-प्रदमनिन्दितमङ्घ्रि-पद्मम्;
संसार-सागर-निमज्जदशेष-जन्तु-
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य. १

यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्;
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय-धूमकेतो,
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये (युग्मम्) २

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः?;
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशुर्यदिवा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?. ३

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत;
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः?. ४

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य;
बालोऽपि किं न निजबाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्व-धियाम्बु-राशेः?. ५

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश?,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः?;
जाता तदेवमसमीक्षित-कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि. ६

आस्तामचिन्त्य-महिमा-जिन संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति;
तीव्रातपोपहत-पान्थ-जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि. ७

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो! शिथिलीभवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः;
सद्यो भुजंगममया ईव मध्यभाग-
मभ्यागते वन शिखण्डिनि चन्दनस्य. ८

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!,
रौद्रैरुपद्रव शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि;
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः. ९

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः;
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः. १०

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन;
विध्यापिता हुत-भुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्द्धर-वाडवेन?. ११

स्वामिन्ननल्प-गरिमाणमपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः?;
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति-लाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः. १२

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्म-चौराः?;

प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके;
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी?. १३

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्म-रूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज-कोश-देशे;
पूतस्य निर्मल-रुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः?. १४

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति;
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः. १५

अंतः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्?;
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्त्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः; १६

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद-बुद्ध्या;
ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः,
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपाकरोति?. १७

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः;
किं काच कामलिभिरीश! सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण? १८

धर्मोपदेश-समये स-विधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः;

अभ्युद्गते दिनपतौ स-महीरुहोऽपि,
किंवा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः. १९

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक् पतत्यविरला सुर-पुष्प-वृष्टिः?;
त्वद्गोचरे सु-मनसां यदि वा मुनीश?,
गच्छन्ति नूनमध एव हि बंधनानि. २०

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-संभवायाः,
पीयुषतां तव गिरः समुदीरयंति;
पीत्वा यतः परम-संमद-संग-भाजो;
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्. २१

स्वामिन्! सु-दूरमवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः,
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि पुंगवाय,
ते नुनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध भावाः. २२

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न-
सिंहासन-स्थमिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्;
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-
श्चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्. २३

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोक-तरुबभूव;
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि. २४

भो भो प्रमादमवधूय भजध्वमेन,
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्;
एतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नभि-नभः सुर-दुंदुभिस्ते. २५

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः;
मुक्ता-कलाप-कलितोच्छ्वसितातपत्र,
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेतः. २६

स्वेन प्रपूरित-जगत्त्रय-पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यशसामिव संचयेन;
माणिक्य-हेम-रजत प्रविनिर्मितेन,
साल-त्रयेण भगवन्नभितो विभासि. २७

दिव्य-स्रजो जिन! नमत्त्रि-दशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्,
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव. २८

त्वं नाथ! जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्;
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्म-विपाक-शून्यः. २९

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश!;
अ-ज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकाश-हेतुः. ३०

प्राग्भार-संभृतनभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि;
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा. ३१

यद् गर्ज्जदूर्जित-घनौघ-मदभ्र-भीमं,
भ्रश्यत्तडिन्मुसल-मांसल-घोर-धारम्;
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे;
तेनैव तस्य जिन! दुस्तरवारि-कृत्यम्. ३२

ध्वस्तोर्ध्व-केशविकृताकृति-र्मत्य-मुण्ड-
प्रालम्ब-भृद्-भयद-वक्त्रविनिर्यदग्निः;
प्रेत-व्रजः प्रतिभवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः. ३३

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रि-सन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधूतान्य-कृत्याः;
भक्त्योल्लसत्पुलक-पक्ष्मल-देह-देशाः,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्म-भाजः. ३४

अस्मिन्नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!,
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि;
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मन्त्रे,
किंवा विपद्विष-धरी स-विधं समेति?. ३५

जन्मान्तरेऽपि तव पाद-युगं न देव!,
मन्ये मया महित-मीहित-दान-दक्षम्;
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्. ३६

नूनं न मोह-तिमिरावृत-लोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि;
मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतयः कथमन्यथैते? ३७

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या;

जातोऽस्मि तेन जनबान्धव! दुःख-पात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः. ३८

त्वं नाथ! दुःखि-जन-वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य!;
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय,
दुःखांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि. ३९

निःसंख्य-सार-शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु प्रथितावदातम्;
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो,
वध्योऽस्मि चेद् भुवन-पावन! हा हतोऽस्मि. ४०

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तु-सार!,
संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!;
त्रायस्व देव! करुणा-ह्रद! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः. ४१

यद्यस्ति नाथ! भवदंघ्रि-सरो-रुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि संतति-संचितायाः;
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि. ४२

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!,
सान्द्रोल्लसत्पुलक-कंचुकितांग-भागाः;
त्वद्-बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः ४३

जन-नयन-कुमुद-चन्द्र!, प्रभा-स्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा;
ते विगलित-मल-निचया, अ-चिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते. युग्मम्. ४४

## नियमावली

(१) प्रत्येक परीक्षार्थी को पहली बार अपना नाम रजिस्टर (दर्ज) करवाना होगा । जो वर्ष के दौरान कभी भी करवा सकते है और परीक्षा के लिए ओनलाईन रजिस्ट्रेशन करवाना होगा।

(२) प्रत्येक परीक्षार्थी को रजिस्ट्रेशन फी रू. १००/- भरने होंगे। फी भरनेवाले मौखिक कक्षा के विद्यार्थी को संस्था द्वारा प्रगतिपत्रक दिया जायेगा। जिसमें दि गई परिक्षा दर्ज की जायेगी, प्रगतिपत्रक विद्यार्थी के पास रहेगा।

(३) मौखिक परीक्षा के लिए उपस्थित होने पर प्रगतिपत्रक अपनेसाथ लाए। इसके बिना अंक नही दिए जाऐगे।

(४) परीक्षा के पासींग मार्क्स ६० है।

(५) ऊत्तीर्ण विद्यार्थी वेबसाईट से प्रमाणपत्र डाउनलोड कर सकते है।

(६) मौखिक और लेखित एक साथ दिया जा सकता है।

(७) एक ही समय में दो मौखिक परीक्षाएं नहीं दी जा सकती।

(८) सभी मौखिक या लिखित परीक्षा को सफलतापूर्वक पूरा करके प्रमाणपत्र प्राप्त करने वालों को विशेष सम्मानित किया जाएगा।

(९) परीक्षा - देने के लिए उम्र का बंधन नहीं है।

पुरस्कार (ईनाम)के लिए पात्रता (योग्यता) :

८ वर्ष से अधिक आयु वाले मौखिक कक्षा-१ के पुरस्कार के लिए पात्र नही होंगे।

१० वर्ष से अधिक आयुवाले मौखिक कक्षा-१ और २ के पुरस्कार के लिए पात्र नही होंगे।

२० वर्ष से अधिक आयुवाले मौखिक परीक्षा में पुरस्कार के लिए पात्र नहीं होंगे।

(१०) छात्र को दी गई User ID और Password द्वारा स्वयं वेबसाइट में (एड्रेस चेंज जैसे) सुधार सकते है।